॥ श्री हरिः ॥
" विभूतियोगे [illegible] रामः "
" काशी वि[illegible]न वाङ्मय "
105
" संवत २०२८ शाके १८९३ "
" पं. प्रेमदत्त शास्त्री "
जहाँगीराबाद
(बुलन्दशहर)
उ. प्र.

मूल विचार —

अश्वनी मघा मूल के प्रथम चरण में पिता को। दूसरे में माता को। तीसरे में धन को। चौथा शुभ है। रेवती श्लेषा ज्येष्ठा में चौथा पिता को। तीसरा माता को। दूसरा धन को। प्रथम शुभ है।

रवि शशि बिधु पेजये उच्च भे चौथा [illegible]।
अधिक सुहृद भेषु नून माहु मुनीन्द्राः॥
यदि रवि वसु संस्थे तुर्य गेहः [illegible] स्यात्
हरति सकल दोषान् पाणिपीडे विधानः॥

अल्प	३	अल्प
[illegible]	४	राजा
पुष्य	५	मंत्री
[illegible]त्र	१४	परिवार
शाखा	८	माता
[illegible]स्वा	११	भ्राता
[illegible]भू	६	धन
मूल	८	मूल

पाया —

आर्द्रा से १२ नक्षत्र चांदी के पाये
ज्येष्ठा से ८ " तांबे के पाये
रेवती से ३ " सोने के पाये
शेष लोहे के पाये।

राहु ३ केतु ९ उच्च
राहु ९ केतु ३ नीच

॥ श्रीगणशाय नमः ॥

भूमिका

जयति विबुधवन्द्या भारती भारतीया जयति विबुधवन्द्यो जानकीशोऽवधेशः ।
जयति जगति विष्वक् काशिकाविश्वनाथो जयति जयति काशी विश्वविद्यालयोऽयम् ॥

आजकल पञ्चाङ्ग के विषय में बहुत से मतमतान्तर भारतवर्ष में चल रहे हैं। भारत धर्मप्राण देश है। यहां के पञ्चाङ्ग केवल आकाशीय चमत्कार देखने के लिए नहीं बनते किन्तु धार्मिक मर्यादा में कोई बाधा न हो और धर्मकृत्य जिन ऋषियों के वचनाधार पर माने जाते हैं, उन्हीं के स्वीकृत मार्ग द्वारा किये जावें, इसके लिये बनाये जाते हैं। भारतवर्षीय जो सिद्धान्त आजकल प्रचलित हैं उनसे जो ग्रह बनते हैं वे अपने यथार्थ स्थान में नहीं दीख पड़ते, यह विषय उन महर्षियों को भी ज्ञात था, जिन्होंने उन सिद्धान्तों को बनाया था। इसी कारण सूर्यसिद्धान्त में लिखा है—

नक्षत्रग्रहयोगेषु ग्रहास्तोदयसाधने । शृङ्गोन्नतौ तु चन्द्रस्य दृक्कर्मादावदिं स्मृतम् ॥

अर्थात् ग्रहों के योग में, नक्षत्र ग्रहों के योग में, ग्रहणसाधन में उदयास्तसाधन में, चन्द्रमा के शृङ्गोन्नति साधन में जिन संस्कारों के द्वारा ग्रह देख पड़ें उन संस्कारों को करके इन कार्यों को करना चाहिए, परन्तु इतना हो जाने पर भी जो ग्रह दृष्टिगोचर नहीं होता उसीको बताने के लिए लिखा है—

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथादृक्तुल्यतां ग्रहाः । प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥

अर्थात् "जिस ग्रह के द्वारा अदृष्ट जनित फल की प्राप्ति हो तथा संसार में ठीक ठीक फल परिणाम देखा जाय उस ग्रह का नाम वास्तवदृश्य है। उसी ग्रह का साधन करता हूँ।"

पुनः—"भावाभावाय लोकानां कल्पनेयं प्रदर्शिता । सुदूरगा प्रयान्त्येते दूरमन्योन्यमाश्रिताः ॥"

इसी कारण बिना बीजादि संस्कार किये ही ग्रहों से तिथ्यादि साधन, ऋषियों ने तथा भास्करादि आचार्यों ने लिखा है।

इस देश में प्रायः तीन सिद्धान्तों का प्रचार देखा जाता है। दक्षिण में आर्यसिद्धान्त का, राजपूताना, बम्बई में ब्रह्मसिद्धान्त का और बङ्गाल से पञ्जाब तक सूर्यसिद्धान्त वा सूर्यसिद्धान्तानुसार करणग्रन्थ का। इनमें आर्यसिद्धान्त प्रायःसूर्यसिद्धान्त के तुल्य ही है। ब्रह्मसिद्धान्त के विषय में वाराहमिहिर ने लिखा है—

पौलिशकृतोऽस्फुटोसौ तस्यासन्नस्तु रोमकः प्रोक्तः । स्पष्टतरः सावित्रः परिशेषौ दूरविभ्रष्टौ ॥

अर्थात् ब्रह्मसिद्धान्त और वशिष्ठसिद्धान्त किसी योग्य नहीं है। कमलाकर ने भी लिखा है—

अदृष्टफलसिध्यर्थं यथार्कार्द्युक्तितः कुरु । गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा ॥

ज्योतिर्विदाभरणकार ने भी लिखा है—

स्थूलं सदा ब्राह्ममतं निरुक्तमादित्यसिद्धान्तभवं च सूक्ष्मम् । इति ।

आजकल ग्रीनविच से जो जहाजी पञ्चाङ्ग (Nautical Almanace) निकलता है, उसको देखकर कितने विद्वानों की सम्मति उसी प्रकार बने ग्रहों से पञ्चाङ्ग बनाने की है और कितने बनाते भी हैं। परन्तु इन पञ्चाङ्गों में बहुत मतभेद रहता है। कारण यह है कि कोई २७ अंश, कोई २३ अंश, कोई १९ अंश, कई प्रकार के अयनांश की कल्पना करते हैं। जब तक इन अयनांशों का निश्चय केवल दृश्यगणनावश न हो जाय तब तक उन पञ्चाङ्गों की धार्मिक सार्थकता का विचार कैसे किया जाय। क्योंकि उन पञ्चाङ्गों के ग्रह न दृश्य ही रहे न आर्षग्रन्थ के अनुकूल ही हुए।

पञ्चाङ्ग प्रायः आलस्यवश मकरन्दानुसार वा ग्रहलाघवानुसार बनते हैं। ये अशुद्ध होते हैं मकरन्दकार ने लिखा है—

वक्रादिकं स्थूलमिदं मयोक्तं सुखार्थमेवेति न तद्यथार्थम् ।
अस्तोदयौ स्पष्टतरौ प्रसाद्ध्यौ सिद्धान्तरीत्या कुसुतादिकानाम् ॥
यद्वात्र शुक्राङ्गिरसौ प्रसाद्ध्यौ विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ॥

यदि मकरन्द और ग्रहलाघव के ही अनुसार सूर्य चन्द्रमा बनाकर तिथ्यादि का मान निकाला जाय, तो वे तिथ्यादि के बनाने के प्रकार से आये तिथ्यादि मान के बराबर नहीं मिलते। इन बातों को जानकर भी जो मकरन्दीय और ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्ग का आदर करते हैं वे सर्वथा भूल करते हैं।

यदि वास्तविक विचार किया जाय तो सौर मत ही दृश्य मत कहा जा सकता है। क्योंकि यदि सौर मतानुसार कोई ग्रह अश्विनी में रहेगा तो वह अश्विनी में ही देखा जायगा उस समय दृश्यगणनानुसार प्रायः वही ग्रह कृत्तिका में रहेगा और उसी की अश्विनी में कल्पना करनी होगी।

स्वर्गीय पूज्यपाद श्रीमान् माननीय मालवीय जी महाराज के आदेशानुसार पूर्व बातों को ध्यान में रखकर उसी रीति से और कई विद्वानों की सहायता से यह पञ्चाङ्ग बनाया गया है। किन्तु ऋषियों के आदेशानुसार दृश्यपदार्थ दृश्यगणनानुसार ही दिये गये हैं।

काशी तथा अन्यत्र के प्रसिद्ध विद्वानों की एक समिति ने ऊपर लिखी रीति से बनाये गये पञ्चाङ्ग को ही धर्मकृत्योपयोगी स्वीकार किया था। आशा है इसी पञ्चाङ्ग से धर्मानुरागी जनमात्र को लाभ पहुँचेगा।

समर्थन करनेवाले विद्वानों में कुछ लोगों के नाम।

म०म०पं० प्रथमनाथ तर्कभूषण जी (प्रिंसिपल का० वि० वि० प्रा० वि०), म० म० ज्योतिषाचार्य श्री पं० मुरलीधर झा जी, म० म० श्री पं० अयोध्यानाथ जी, म०म०पं० जयदेव मिश्र जी, म०म० पं० पञ्चानन तर्करत्न जी, म० म० प्रभुदत्तजी, ज्योतिषाचार्य श्री पं० रामयत्न ओझा जी, म० म० पं० रामकृष्ण जी, पं० चन्द्रधर शास्त्री जी, पं० राधाप्रसाद शास्त्री जी, म० म० पं० चिन्नस्वामी जी, पं० वामदेव मिश्र जी, पं० कालीप्रसाद मिश्र जी, पं० अम्बिकाप्रसाद जी, पं० विश्वनाथ जी, पं० रमाकृष्ण जी, पं० राजनारायण पाण्डेय जी, पं० महादेवप्रसाद पाण्डेय जी, पं० जियालाल जी (देहली), ज्योतिषाचार्य पं० पद्माकर द्विवेदी जी, ज्यो० आ० पं० बलदेव पाठक जी, ज्यो० आ० पं० रिसालदत्त मिश्र जी, ज्यो० आ० पं० श्री रामव्यास ज्योतिषी जी, ज्यो० आ० पं० विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डेय जी, ज्यो० आ० पं० रघुनाथ जी, पं० राजाराम जी, पं० राजवैद्य दतराना, साहित्याध्यापक पं० रामकुबेर मालवीय जी, धर्मशास्त्राध्यापक पं० वशिष्ठदत्त मिश्र जी, पं० देवनन्दन द्विवेदी जी, पं० श्यामसुन्दर द्विवेदी जी, ज्यो० आ० पं० बलराम पाण्डेय, पं० शंकर लाल गौड़ (शंभुकवि) आदि

बहुत से महानुभावों ने विश्वपञ्चाङ्ग की सर्वोपयोगिता के लिए कृपापूर्वक अपनी सहानुभूति प्रकट की है, जिनमें कुछ के नाम दिये गये हैं—

श्रीमान् ५ महाराजाधिराज नैपाल	श्रीमान् ५ महाराजा रीवां
श्रीमान् ५ महाराजा मैसूर	श्रीमान् ५ महाराजा भोर स्टेट
श्रीमान् ५ महाराजा ग्वालियर	श्रीमान् ५ महाराजा साहब आवागढ़
श्रीमान् ५ महाराजा बहादुर बड़ौदा	श्रीमान् राजगुरु महोदय नेपाल
श्रीमान् ५ महाराजा बहादुर गिद्धौर	श्रीमान् ५ महाराजा साहब टेहरी, गढ़वाल स्टेट
श्रीमान् ५ महाराजा जोधपुर	श्रीमान् ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ती जी मु० पटना
श्रीमान् ५ राजाबहादुर अमावां	श्रीमान् मन्त्री ब्राह्मण महासभा भभुआ (आरा)
श्रीमान् होम मेम्बर कौंसिल आफ स्टेट जयपुर	श्रीमान् ज्यो. आ. पं० हरिनन्दन मिश्रजी कानपुर
श्रीमती ५ राजमाता साहिबा मझौली	ज्योतिर्विद पं० बलदेवजी चतुर्वेदी जौनपुर

राजपण्डित—कुलानीराम जी [illegible]

इस पञ्चाङ्ग में प्रतिपक्ष में क्रम से दिनमान, तिथि, वार, तिथिसम्बन्धी घटी, पल, घंटा, मिनट, नक्षत्र, नक्षत्रसम्बन्धी घटी, पल, घण्टा, मिनट, योग, योगसम्बन्धी घटी, पल, घंटा, मिनट, इत्यादि, दोनों करण, अंग्रेजी, फारसी, बंगला, फसली, राष्ट्रीय, तिथि, चन्द्रसंचार, सूर्योदय, घंटा, मिनट, सूर्यास्त घंटा, मिनट, रविक्रान्ति के पश्चात् कृष्णपक्ष में चन्द्रोदय और शुक्लपक्ष में चन्द्रास्त का घंटा, मिनट दिया गया है। इसके बाद भद्रा, संक्रान्ति आदि बहुत सी वस्तुएँ दी गई हैं। इसमें तिथ्यादि के घंटे का मान आधी रात से चौबीस घंटा, मान कर जैसे रेलवे में व्यवहार किया जाता है, उसे सूर्य घड़ी के अनुसार दिया गया है। सूर्योदय घंटा आधीरात से और सूर्यास्त घंटा मध्याह्न से दिया गया है रविक्रान्ति मध्यम (Local) समय के अनुसार ५ बजकर ३२ मिनट पर की है। चन्द्रास्त, चन्द्रोदय घंटा मध्यरात्रि से ही दिया गया है।

पञ्चाङ्ग देखने की रीति—जैसे चैत्रशुक्ल प्रतिपद् शनिवार को दिनमान ३० घड़ी २१ पल प्रतिपद ४२ घड़ी ८ पल, रा. २२ घंटा ४७ मिनट तक है। उ. भा. नक्षत्र ७ घड़ी १९ पल ८ घं ५१ मि. यानी दिन में ८ बजकर ५१ मिनट तक है। ब्रह्म योग २४ घड़ी ० पल, १५ घण्टा ३२ मि. यानी दिन में १५ बजकर ३२ मिनट तक, किंस्तुघ्न करण १५ घड़ी ५ पल अर्थात् दिन में ११ बजकर ५८ मिनट तक, बव करण ४२ घड़ी ८ पल अर्थात् रा, २२ बजकर ४७ मिनट तक है। धूम्र योग और अंग्रेजी २७ मार्च, फारसी २९, बंगला १३, फसली १५ एवं राष्ट्रीय ता० ६ है। (पञ्जाब में बङ्गला ता. संक्रान्ति के दिन से—काशी में संक्रान्ति के दूसरे दिन से और बङ्गदेश में पुण्यकाल के दिन से चलता है)। सूर्योदय गत मध्यरात्रि के बाद ५ बजकर ५६ मिनट पर और सूर्यास्त मध्याह्नोत्तर ६ बजकर ४ मिनट पर होगा। रवि की उत्तरा क्रान्ति २ अंश १५ कला है। द्वितीया रविवार की सन्ध्या की २०।५ पर चन्द्र का दर्शन है। तिथि, नक्षत्र, योग के घंटा मिनट के पहले 'प्रा' से प्रातः, 'म' से मध्याह्न, ('सा' से सायं और 'रा', से रात्रि और 'दि' से दिन का बोध कराया गया है। इसी प्रकार पञ्चाङ्ग को देखना चाहिए। पञ्चाङ्ग में जो तिथ्यादि का मान दण्डात्मक वा होरात्मक दिया गया है वह सावयव बनाकर "अर्धाल्पे त्याज्यमर्धाधिके ग्राह्यम्" इस रीति से लिखा गया है। अतः इस पर से बनाने में दो एक पल का अन्तर जान पड़ेगा। उसको अशुद्ध नहीं समझना चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन के स्पष्टग्रह मिश्रमान काल के दिये गये हैं। प्रतिदिन की लग्नसारिणी दी गई है। जिसमें मध्यरात्रि से ही सदैव मेषादि लग्नों के नाम के सामने उनका प्रवेश घण्टा, मिनट लिखा गया है। जैसे लग्नसारिणी में चैत्रशुक्ल प्रतिपद् भौमवार के दिन मेष लग्न के सामने मे० प्र० ६।४९ लिखा है। इसका अर्थ है कि प्रातःकाल ६ बजकर ४९ मिनट से मेष लग्न का आरम्भ होगा और वृ० प्र० ८।२७ यानी वृष के प्रवेश ८ बजकर २७ मिनट तक मेषलग्न रहेगा। पश्चात् वृष लग्न का आरम्भ हो जायगा। इसी तरह सम्पूर्ण लग्नसारिणी है। इसके बाद कितने कार्यों का मुहूर्त, ग्रहों का दृश्ययोग इत्यादि बहुत सी बातें दी गई हैं। पञ्चाङ्ग के आरम्भ में प्रसिद्ध नगरों का अक्षांश और देशान्तर दिया गया है। चरसारिणी भी दी गई है—जिसमें इसी पञ्चाङ्ग के द्वारा अन्यत्र का भी तिथ्यादि मान बन जाय। अक्षांश पर से पलभा लाने की सारिणी भी दी गई है। प्रतिदिन का रेलवेघड़ी और सूर्यघड़ी का अन्तर दिया गया है। जिससे काशी में रेलवेघड़ी से सूर्यघड़ी का मान निकालना बड़ा सुगम है। तथा अन्यत्र के लिए भी युक्ति दी गई है। और ऐसी बहुत सी बातें दी गई हैं जो देखने से ही जान पड़ेंगी।

काशी बहुत दिनों से विद्या का केन्द्र है। बहुत से लोग काशी के ही पञ्चाङ्ग को लेकर [illegible] तक चले जाते हैं। परन्तु जो तिथ्यादि का मान काशी में होगा [illegible] से पूर्व या पश्चिम के देशों में कदापि नहीं होगा। **विश्वपञ्चाङ्ग द्वारा काशी से अन्यत्र तिथ्यादि मान निकालने की रीति**—काशी में जो तिथ्यादि का घंटादि मान हो उसमें इष्ट देश का काशी से जो घण्टा मिनट केवल देशान्तर हो उतना पूर्व के देशों में जोड़ देन से तथा पश्चिम के देशों में घटा देने से उस देश का घण्टादि मान हो जायगा।

जैसे—चैत्र शुक्ल १ शनिवार को इस पञ्चाङ्ग द्वारा कलकत्ते में तिथ्यादि का मान क्या होगा वह जानने की रीति—उस दिन रवि की उत्तरा क्रान्ति २ अंश १५ कला लिखी है। कलकत्ता का अक्षांश २२।३० है। काशी देशान्तर २२ मिनट अर्थात् ५५ पल है। चरसारिणी से अक्षांश क्रान्त्यंशवश चर मिनटादि ३।४३ मिला। इसको ६ घण्टे में जोड़ने से घंटादि ६।३।४३ सूर्यास्त हुआ। इसको १२ में घटा देने से सूर्योदय घण्टादि ५।५६।१७ हुआ। काशी में जो तिथ्यादि सम्बन्धी घंटा मिनट लिखा है पूर्व होने के कारण कलकत्ते का २२।० देशान्तर जोड़ देने से तिथ्यादि का मान घण्टादि निकला।

प्रतिपदा	२२।४७ + ०।२२ = २३।९	उ. भा ८।५१ + ०।२२ = ९।१३	ब्रह्म १५।३२ + ०।२२ = १५।५४

इस घण्टादि काल पर से सूर्योदय घण्टा द्वारा घट्यादि मान जानना भी बहुत सुगम है। पहले दी हुई रीति से जो सूर्यास्त का मान होरात्मक निकलेगा उसको पांच से गुणा देने से घट्यादि दिनमान होगा। काशी के दिनमान के साथ अन्तर करके आधा करने से चरान्तर होगा। यह चरान्तर उत्तरक्रान्ति होने पर काशी से अधिक अक्षांश में धन और अल्प अक्षांश में ऋण होता है। दक्षिणक्रांति में इसके विपरीत होता है। देशान्तर घटीपल बनाकर चरान्तर देशान्तर का संस्कार धन वा ऋण जो हो उसको फलघटी कहते हैं। तिथ्यादि के मान में फलघटी का संस्कार कर देने से भी इष्टदेश सम्बन्धि तिथ्यादि का मान घट्यादि हो जायगा और मिश्रमान में फलघटी का संस्कार करने से इष्टदेश का मिश्रमान बन जायगा।

जिस दिन तिथ्यादि का मान बढ़ गया है उसके घण्टा मिनट की जगह गुणन का चिन्ह दिया गया है, और भद्रा इत्यादि का घण्टा मिनट कोष्टक ( ) चिह्न के भीतर दिया गया है। सूर्य और चन्द्रमा का जब ६ अंश अन्तर होता है तब एक करण होता है। शुक्लपक्ष प्रतिपद् के उत्तरार्ध से बवादि ७ करण एक मास में ८ आवृत्ति से होते हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध से शुक्ल प्रतिपद के पूर्वार्ध तक शकुनी, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्नकरण होते हैं। सूर्य, चन्द्रमा का अन्तर जब १२ अंश होता है तब एक तिथि होती है। जब चन्द्रमा १३ अंश २० कला चलता है तब अश्विन्यादि एक नक्षत्र होता है। सूर्य और चन्द्रमा का योग जब १३ अंश २० कला होता है, तब एक योग विष्कुम्भादि होता है। पञ्चाङ्ग में मिश्रमान कालिक सूर्य और चन्द्रमा इसलिए दे दिये गये हैं कि यदि तिथ्यादि के मान में कहीं किसी को सन्देह हो तो पूर्व रीति से वह सन्देह दूर कर लिया जाय। मनुष्य सर्वज्ञ नहीं है, अतः भ्रम या त्रुटि होना असंभव नहीं है, और पञ्चाङ्ग इस प्रकार की वस्तु है जिसमें तिथ्यादि का मान शुद्ध होते हुए भी भ्रम हो सकता है। किन्तु जहां तक हो सकता है इस पञ्चाङ्ग के शुद्ध होने के लिए विशेष ध्यान रखा गया है। सज्जनों से प्रार्थना है कि कृपापूर्वक इस पञ्चाङ्ग को देखें और लाभ उठावें। जो त्रुटि इसमें रह गई हो, या यदि कोई आवश्यक बात छूट गई हो, तो कृपापूर्वक उसकी सूचना दें और दोष को क्षमा करें।

इस पञ्चाङ्ग में धार्मिक कथा आदि का संग्रह स्वर्गीय श्रीमान् पूज्यपाद मालवीय जी महाराज ने स्वयं किया था। स्थानाभाव के कारण वह अत्यन्त संक्षिप्त था। अब उसमें कुछ और कथाओं की वृद्धि कर दी गई है। दृश्यग्रह पृथक् दे दिये गये हैं। जिसमें दृश्य गणनानुसार ज्योतिषी लोग इष्ट निर्णय सहज प्राप्त कर सकते हैं। आशा है इससे धार्मिक जनता पूरा लाभ उठा सकेगी।—प्र. संपादक

ज्यौतिषमहिमा—

वेदाङ्गमाद्यं वेदानां क्रियाणां च प्रसाधनम् । ज्योतिर्ज्ञानं द्विजेन्द्राणामतो वेद्यं विदुर्बुधः ॥ ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् । ज्योतिर्ज्ञानं च यो वेत्ति स याति परमां गतिम् ॥ चन्द्रनक्षत्रताराणां ग्रहाणां भास्करस्य च । ज्योतिषामपियज्ज्योतिर्ज्योतिषामपि पावकः ॥ तद्भावभाविनं युक्तं तं देवा ब्राह्मणं विदुः । तस्मात्पूर्वमधीयीत ज्योतिर्ज्ञानं द्विजोत्तमः ॥ धर्मसूत्रं ततः पश्चाद्यज्ञकर्मविधिक्रियाम् । यज्ञाश्चायुष्यहोमाश्च चूडोपनयनानि च ॥ साम्राज्यं पौर्णमास्यं च पितृदैवततर्पणम् । सर्वारम्भाश्च जगतो लोके च विविधाः क्रियाः ॥ न ज्योतिषं विना तासां प्रवृत्तिरुपलभ्यते । आप्यायनं च वेदानां यज्ञाः प्रोक्ता क्रियाश्रयाः ॥ यज्ञार्थमपि च प्रोक्ता स्वयं वेदाः स्वयंभुवा । न च ते सम्प्रवर्तन्ते कालज्ञानात्कथंचन ॥ यज्ञक्रिया अहोरात्रं क्रियाश्चान्या जगद्धिताः । तस्मात्पुण्यं समं वेदैर्यज्ञचक्षुः सनातनम् ॥ स्वर्ग्यमभ्यधमभ्यर्च्यं ब्राह्मणैः शंसितव्रतैः । ततः कालप्रसिद्ध्यर्थं राशयः पूर्वसीरिताः ॥ अहोरात्रविभागाश्च तिथीनां च क्रियाविधिः । सोमसूर्यविलग्नानामृक्षाणां चापि निश्चयः ॥ आद्यन्तयोगभोगाश्च विसर्गश्चार्कसोमयोः । दिनर्तुपक्षमासानां चन्द्रार्काणां विनिश्चयः ॥ कर्मोपभोगमानानां लेख्यः प्रश्नविधिस्तथा । एवमाद्याः समस्ताश्च क्रिया ज्योतिषसंश्रिताः ॥

भास्कर :—तस्माद्द्विजैरध्ययनीयमेतत्पुण्यं रहस्यं परमं च तत्त्वम् ।
यो ज्योतिषं वेत्ति नरः स सम्यग् धर्मार्थकामान् लभते यशश्च ॥

कालमहिमा—

अनादिरेषः भगवान् कालोऽनन्तोऽजरोऽमरः । सर्वगत्वात् स्वतन्त्रत्वात् सर्वात्मत्वान्महेश्वरः ॥

विष्णुधर्मोत्तरे—

अनादिनिधनत्वेन स महान्परमेश्वरः । निमिषादपि सूक्ष्मत्वात् सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरोऽप्यति ॥ तस्य सूक्ष्मातिसूक्ष्मस्य तथापि महतो द्विजाः । मानसंख्या बुधैर्ज्ञेया ग्रहगत्यनुसारतः ॥ भगवद्वचनम्—कालः कलयतामहम् । ब्रह्मणो बहवो रुद्रा ह्यन्ये नारायणादयः ॥ एको हि भगवानीशः कालः कविरिति स्मृतः । अनादिनिधनःकालो रुद्रः संकर्षणः स्मृतः ॥ कलनात् सर्वभूतानां स कालः परिकीर्तितः । श्रूयतां स्वर्ग्यमायुष्यं धर्म्यं पुण्यं यशस्करम् ॥ ज्ञानविज्ञानसम्पन्नं द्विजानां पावनं परम् । कालज्ञानमिदं पुण्यमाद्यं हि ज्ञानमुत्तमम् ॥ सिसृक्षुणा पुरा वेदानेतत्सृष्टं स्वयम्भुवा । कालः सृजति भूतानि कालः संहरति प्रजाः ॥
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥

संवत्सरावली—

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत् पादपङ्कजस्मरणम् । वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥ तिथिवारञ्चनक्षत्रं योगं करणमेव च । पञ्चाङ्गस्यफलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ॥२॥ प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद्ध्वजारोपणम् । स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः साकं सुपूज्योत्सवैः ॥ देवानां गुरवोऽपिताञ्च विभवाल ङ्कारवस्त्रादिभिः । सम्पूज्यो गणकः फलञ्च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥३॥ पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥४॥ मरीचिलवणं हिङ्गु-जीरकेण च संयुतम् । अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये ॥५॥ राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मंत्रिश्रवणात्फलं धान्येशात्कमला स्थिरा च गुरुता वाणी भवेन्मेघपात् । धर्मबुद्धिरतिस्थिरा रसपतेर्दीर्घायुरारोग्यतां संभवेत् । सस्येशाद्धिपणा यतः शुभकरी राजावली श्रूयताम् ॥६॥ अथास्मिन्वत्सरे वर्तमानकल्पस्य ब्रह्मणः

सन्धयः षड्मनवो व्यतीताः, वर्तमानवैवस्वतमनोः प्रवृत्तेस्सप्तविंशतिमितानि महायुगानि व्यतीतानि अष्टाविंशतितमे युगे, त्रयो युगचरणाः गताः चतुर्थे चरणेकलौ कलेरारम्भतो द्विसप्तत्युत्तरपञ्चसहस्रमितानि वर्षाणि व्यतीतानि तथा कल्पादितः १९७२९४९०७२ वत्सराव्यतीताः सृष्ट्यादितश्च १९५५८ ८५०७२ विक्रमराज्यकालात्संवत्सरा गताः २०२८ शकारम्भतश्च १८९३ व्यतीतास्तदा गते वैशाखकृष्ण ३ कुजे निशीथे सौरमानेनाहर्गणः ७१४४०४१४९२१७ युगादेश्चाहर्गणः १८५२९९० अहर्गणोत्था मध्यमग्रहाः—सू. ११।२७।२७।१९ चं. ७।८।१३।२३ मं. ७।२३।३।३९ बु. शी. उ. ४।२७। २९।९ बृ. ७।१३।२७।१० शु. शी. उ. ९।१०।२३।२५ श. ०।२९।१९।३८ रा. १०।०।५१।५९ चं. उ. ५।६।५१।५७ रविमन्दफलं २।८।२८।७ स्पष्टरविः ११।२९।४५।४७ मध्यमचन्द्रः ७।८।१३।२३ चन्द्रफलम् ४।२५।५८।५६ स्फुटचन्द्रः ७।३।४७।२४ भौमस्यप्रथमशीघ्रफलार्धं २०।०।२४।५० फलार्धसंस्कृतः ८।१३।४।४ मन्दकेन्द्रम् १।२६।५८।४२ फलार्धं ४।५१।३४।४८ तत्संस्कृतश्च ८।८।१३।२९ द्वितीयमन्दकेन्द्रम् २।०।५०।१७ मन्दफलम् १०।१२।२२।३६ मन्दस्पष्टः ७।१२।५१।१७ द्वि. शी. के. ४।१४।४६।२ शीघ्रफलम् ४०।८।४४।४५ स्पष्टभौमः ८।२३।०।२ एवमेव फलचतुष्टय संस्कृत स्प. बु. ०।९।०।५२ स्प. बृ. ७।१८।३।३१ स्प. शु. १०।२७।२६।३१ स्प. श. ०।२२।४३।१९।

गुरुमानेन चन्द्रवर्षादौ रक्ताक्षनाम संवत्सरः ततश्च कार्तिकशुक्ल १० शुक्रे ५३।४२ इष्टतः क्रोधननाम संवत्सरः प्रवेक्ष्यति ।

वर्षेऽस्मिन् राजा शनिः । मन्त्री बुधः । मेघेशो भौमः । पूर्वधान्यशो शनिः । रसेशो रविः । पश्चिमधान्येशो गुरुः ।

संवत्सरादिफलम्

रक्ताक्ष संवत्सर फलम्—शस्यं प्रणश्यति भयं बहुतस्कराणां युद्धं परस्परमतीव जनेश्वराणाम् ।
रक्ताक्षि नाम्नि न जलं प्रबलो निदाघः स्यादीतिरोगविकलः सकलो जनौघः ॥

राजशनिफलम्—शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः करपीडिता जनाः ।
युद्धं नृपाणां बहुतस्कराद्भयं भवन्ति लोका क्षुधया प्रपीडिताः ।

मन्त्रिबुधफलम्—स्यात्कोशवृद्धिर्धरणीश्वराणां गावः सुदुग्धा न गदो नराणाम् ।
गोधूमशालीक्षुयुता धरित्री पूर्णोदका चेच्छशिजोऽत्र मन्त्री ॥

पूर्वधान्येशशनिफलम्—धान्याभावः कोशहानिर्नृपाणां मन्दा वृष्टिः स्याज्जयः तस्कराणाम् ।
रोगाद्वह्नेश्चापि पीडा जनस्य प्राग्धान्येशश्चेत्सुतो भास्करस्य ॥

मेघेशभौमफलम्—अनिलः प्रबलोऽग्निभयं प्रचुरं धनधान्यफलादिकमल्पतरम् ।
गदकोपवशाज्जगदल्पबलं क्षितिजे धनपे सति नैव जलम् ॥

रसेशसूर्यफलम्—वापिकादिषु जलं न नितान्तं लोकवृन्द गुरुशीतरुजान्तम् ।
ईक्षुतैलयवतूलविनाशः स्यात्तदा रसपतिर्नलिनीशः ॥

पश्चिमधान्येशगुरुफलम्—भूभृतामिह कदापि न मन्युः भूरि वर्षति जलं शतमन्युः ।
भूमिदैवनिचयोमितुतेजः स्याद्यदा चरमधान्यप ईड्यः ॥

अस्मिन्वर्षे वर्षाढकं १०० समुद्रे ५० पर्वते २५ भूमौ २५ वर्षाढकम् । पञ्च विधिचक्रानुसारेण रोहिणीमं समुद्रे पतति । तत्फलं चोत्तमम् । मासपृष्ठत्वेन आढक-प्रमाणम् आषाढे ५ श्रावणे ६ भाद्रे ६ आश्विने ५ कार्तिके ३ । नक्षत्रपरत्वेन आर्द्रायां ३, पुनर्वसौ ४ पुष्ये ४ [illegible] मघायां ४ पू. फा. मे ३ उ. फा. मे १ हस्ते १ चि. ३ ।

अथराज्यादिषु विशेषः—पाञ्चालसौराष्ट्रदेशेषु राजफलम् । गुर्जरयावनयोः सस्येश फलम् । कोकंण मालवयोः रसेश फलम् । विन्ध्याद्रिदक्षिणे चार्घफलम् ।

विंशोपकाः—जल वृष्टिः ९ धान्यम् १३ तृणम् १५ शीतः ११ उष्णः ५ वायुः १३ वृद्धिः १५ विनाशः १५ विग्रहः ११ क्षुत् ११ तृष्णा ११ निद्रा ९ आलस्यम् ३ उद्यमः १३ शान्तिः ३ क्रोधः ३ दम्भः ३ मदः १ मैत्री १३ र. नि. ७ फ. नि. ११ उत्साहः ९ शलभाः ९ शुकः १९ मूषकः १७ अति वृष्टिः ११ अनावृष्टिः ११ स्वचक्रः १५ परचक्रः ९ नाणकम् ३ रत्नम् ३ वस्त्रम् ११ घृतम् ७ तैलम् १७ दुकूलम् १७ ऊर्णाः ११ क्षौम्यम् ३ कार्पासः १५ वल्कलः १९ सुवर्णम् १५ ताम्रः ३ वंगः १९ रौप्यम् १७ लोहम् ११ खर्परः १९ पारदः ९ कांस्यम् १३ पित्तलः १७ उ. प्र. १५ सौ. प्र. ५ पा. . १९ पु. प्र. ११ व्याधिः १९ भैषजम् १३ उग्रताः १३ आचारः ५ अनाचारः ९ मरणम् ११ जन्मः १३ देशोपद्रवः १७ देश स्वास्थ्यम् ७ चौरभयम् १९ चौरभयनाशः ३ अग्निभयम् ११ अग्निभयनाशः ११ विषभयम् ३ विषभयनाशः ५ सेवकत्व १९ स्वामित्व ११ निजधन १५ परधन १५ द्यूतः १९ पुंश्चलीकर्म ३ जारण ९ जारणनाशः १३ मारण १५ मारणनाशः १५ स्तम्भन १३ स्तम्भननाशः : ९ मोहन ३ मोहन नाशः १३ उच्चाटन ५ उच्चाटन नाशः १३ वशीकरणः ३ वशीकरणनाशः ९ वातप्रकृतिः १५ पित्तप्रकृतिः ३ कफ प्रकृतिः ७ द्वंदज ११ सन्निपात १५ यश १९ अपयश ५ गर्व ७ गोत्रप्रपञ्च ९ गोत्रप्रपञ्चनाशः १३ भूतबाधाः १३ भूतबाधानाशः १५ ग्रहदोष १७ ग्रहदोषनाशः १९ अण्डज ७ पिण्डज ५ स्वेदज १७ उद्भिज १५ पुण्य ९ पाप १८ सर्वनिष्पत्तिः १ ।

वर्धापनविधिः

अथायुष्यादिविवृद्धयै प्रत्यब्दे चन्द्रमानेन जन्मतिथावेव वर्धापनं कार्यम् । तत्र जन्मर्क्षयोगवती तिथिर्यत्रैवोपलभ्यते सैव ग्राह्या-दिनद्वये नक्षत्रयोगसत्वेत्वौदयिकी द्विमुहूर्ताधिकाग्राह्या-द्विमुहूर्तान्यूनत्वे पूर्वा, जन्ममासाधिमाससत्वे शुद्धमासे वर्धापनविधिः । तत्र यजमानः मौनपूर्वकं कृतनित्यक्रियः पूर्वाभिमुखमुपविश्य कुशासनादिकं गृहीत्वा ओम् अद्येत्यादि....सकलाऽरिष्टनिवृत्तये श्रीविष्णुप्रीतये आयुरारोग्याऽभिवृद्धये वर्धापनकर्म-करिष्ये "इति संकल्प्य-तिलोद्वर्तनपूर्वकं तिलोदकेन स्नात्वा-विघ्नेशपूजनपूर्वकं पञ्चाङ्ग कृत्वा जन्मनक्षत्राधिप पितर प्रजापतिं भानुं मार्कण्डेय परशुराम बलि हनुमन्त विभीषणं कृप प्रह्लादं षष्ठी प्रभृति देवान् नाममंत्रेण गंधाक्षतपुष्पधूपादिना पूजनं विधाय षष्ठ्यै दधिभक्तनैवेद्यं निवेद्य पूजनान्ते प्रार्थयेत्" ओं मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे । चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथामुने । रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रियायुक्तश्च सर्वदा ॥ मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन । आयुरारोग्यसिद्धयर्थमस्माकं वरदो भव । चिरंजीवी यथात्वं तु मुनीनां प्रवरोद्विज । कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम् ॥ नराणामायुरारोग्यैश्वर्यसौख्यसुखप्रदः । सौम्यमूर्ते नमस्तुभ्यं भृगुवंशवराय च । महातपे मुनिश्रेष्ठ सप्तकल्पान्तजीवन । मार्कण्डेय नमस्तुभ्यं दीर्घायुष्यं प्रयच्छ मे ॥ मार्कण्डेय महाभाग प्रार्थये त्वां कृताञ्जलिः । चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्येऽहं तथामुने । इत्यादिना मार्कण्डेयं संप्रार्थयेत्—अथ षष्ठीप्रार्थना—जयदेविजगन्मातर्जगदानन्दकारिणी । प्रसीद मम कल्याणि नमस्ते षष्ठिदेवते । त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च । ब्रह्मविष्णुशिवैस्सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे—इत्यादिना षष्ठी संप्रार्थ्य–अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः । सप्तैतान्स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ प्रीयन्तां देवताः सर्वाः पूजां गृह्णन्तु तां मम । प्रयच्छन्त्वायुरारोग्यं यशस्सौख्यं च सम्पदः । मन्त्रहीनं भक्तिहीनं क्रियाहीनं महामुने । यदर्चितं मया देवाः परिपूर्णं तदस्तु मे । इत्यादिना देवान् संप्रार्थ्य—ततस्तिलगुडमिश्रित पयः पिबेत् ।

तन्मन्त्र—सतिलं गुडसंमिश्रमञ्जल्यर्धमितं पयः । मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये ॥ इत्यादिना पिबेत् । क्वचित् पूजित देवानां नाममन्त्रेण-प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याः तिलहोमश्चोक्तः—ततोब्राह्मणभोजनम्—तद्दिने विशेषनियमाः—खण्डनं नखकेशानां मैथुनाध्वगमस्तथा । आमिषंकलहं हिंसावर्षवृद्धौविवर्जयेत् ॥

मृते जनि संक्रान्ती श्राद्धे जन्मदिने तथा ॥ अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्ण वारिणा ॥ इति संक्षेपतो वर्धापनविधिः ॥

अथारिष्टशान्त्यर्थं महामृत्युञ्जयजपविधिः

आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादिना गणेशस्मरणं च कृत्वा । संकल्पः—अमुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ-वासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे-उत्पन्नोत्पतस्यमानाऽखिलारिष्ट-निवृत्तिपूर्वकं श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यावाप्तये मृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये ॥ ऋष्यादिन्यासः—वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः मूर्ध्नि ॥ पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छंदांसि वक्त्रे ॥ सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि । ह्रीं शक्तय नमो लिंगे । श्रींबीजाय नमः पादयोः ॥ इति ऋष्यादिन्यासः । ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ। अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छंदांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्रीबीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ॐ ह्रौं ॐजूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐनमो भगवतेरुद्राय शूलपाणये स्वाहा मां जीवय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐनमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय स्वाहा हृदयायनमः ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनं ॐ नमोभगवतेरुद्राय चन्द्रशिरसेजटिने शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्रौं ॐजूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं शिखायै वौषट् । ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐनमोभगवते रुद्रायत्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय कवचाय हुं ॥ ॐह्रौं ॐजूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐनमोभगवतेरुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् अस्त्रायफट् ॥ इति षडङ्गन्यासः ।

त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धि नेत्रयोः । पुष्टिवर्धनं मुखे । उर्वारुकं गण्डयोः । इव हृदि । बंधनात् जठरे । मृत्योर्लिंगे मुक्षीय उर्वोः । मा जान्वोः । अमृतात पादयोः ॥ इति पदन्यासः ॥ मृत्युञ्जयन्यासं कृत्वा ध्यानं कुर्यात् । अथध्यानं ॥ हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्यतोयंशिरः सिञ्चंतं करयोर्युगेनदधतंस्वांकेसकुम्भौकरौ ॥ अक्षस्त्रग्मृगहस्त मम्बुजगतंमूर्द्धस्थचंद्रस्रवत्पीयूषोत्रतनुंभजेस्सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥१॥ चंद्रोद्भासितमूर्धजंसुरपतिंपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत् सुदिव्यममलं हास्यपंकेरुहम् । सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजंबिभ्रतमक्षयं पशुपतिमृत्युञ्जयं संस्मरेत् ॥२॥ इति ध्यात्वा । मानसोपचारैःसंपूज्य ॥ ॐलंपृथिव्यात्मकं गन्धंसमर्पयामि ॥ ॐहंआकाशात्मकं पुष्पंसमर्पयामि ॥ ॐयं वायव्यात्मकंधूपं समर्पयामि ॥ ॐरं तैजसात्मकंदीपंसमर्पयामि ॥ ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यंसमर्पयामि ॥ ॐसं सर्वात्मकं मंत्रपुष्पंसमर्पयामि ॥ मंत्रं जपेत् ॥ ॐह्रौंॐजूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ॥ सिद्धिर्भवतु ॥ जपानंतरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत् ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ मृत्युञ्जयमहारुद्रत्राहिमांशरणागतम् ॥ जन्ममृत्युजरारोगैःपीडितं कर्मबन्धनैः ॥ अर्पण—अनेनमहामृत्युञ्जयजपाख्येनकर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां नमम । इति विज्ञाप्य जप निवेदनम् जपसांगतासिध्यर्थंयथाकामनाद्रव्येण तद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तातिलैर्होमं कुर्यात् तद्दशांशतर्पणम् तद्दशांशमार्जनं तद्दशांशब्राह्मणभोजनंकारयेत् । इति ॥ अथहोमार्थमन्त्राः ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ ॐ जातवेदसेसुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुंदुरितात्यग्निः ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा ॥

श्री संवत् २०२८ श्रावणशुक्लपूर्णिमा शुक्रवार दिनाङ्क ६ अगस्त १९७१ को श्रवणनक्षत्र मकरराशि पर काशी में खग्रास चन्द्रग्रहण होगा।

भारतीय स्टैण्डर्ड घटिकातः		काश्यांसूर्य घटिकातः	
स्पर्शः	२३।२५	२३।२१	चन्द्रबिम्बाङ्गुलम् १२।०
सम्मीलनम्	०।२३	०।१९	ग्रासांगुलम् २०।४९
मध्यः	१।१३	१।९	खग्रासः ८।४९
उन्मीलनम्	२।३	१।५९	
मोक्षः	३।१	२।५७	

कान्तिमालिन्यारम्भः २२।२८

निर्मला कान्तिः ३।५८

श्री संवत् २०२८ माघ शुक्ल पूर्णिमा रविवार दिनाङ्क ३०-१-७२ को पुष्य, श्लेषा नक्षत्र कर्क राशि पर काशी में ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण होगा।

भारतीय स्टैण्डर्ड घटिकातः		काश्यांसूर्य घटिकातः	
स्पर्शः	१८।४३	१८।३२	चन्द्रबिम्बाङ्गुलम् [illegible]
मध्यः	१९।३५	१९।२४	ग्रासांगुलम् [illegible]
मोक्षः	[illegible]	१९।५७	

मानचित्र में लकीर से पूर्व के देशों में यह ग्रहण दृश्य होगा।

चन्द्रग्रहण में ३ याम अर्थात् ९ घंटे पूर्व ग्रहण का वेध लग जाता है। बालवृद्धों को छोड़कर वेध में भोजन शयनादि वर्जित हैं।

ग्रहण फलम्।

माघी	राशिः	श्रावणी
व्यथा	मेष	सुखम्
श्रीः	वृष	मानहानिः
क्षतिः	मिथुन	मृत्युः
घातः	कर्क	स्त्रीपीडा
हानिः	सिंह	सौख्यम्
लाभः	कन्या	चिन्ता
सुखम्	तुला	व्यथा
मानहानिः	वृश्चिक	श्रीः
मृत्युः	धनु	क्षतिः
स्त्रीपीडा	मकर	घातः
सौख्यम्	कुम्भ	हानिः
चिन्ता	मीन	लाभः

विंशोत्तरीयाऽऽयव्ययचक्रम्।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	यो.
आय	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५	८१
व्यय	५	१४	१४	८	५	११	१४	५	११	११	११	११	११७

अष्टोत्तरीयाऽऽयव्ययचक्रम्।

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	यो.
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	[illegible]	५	५	२	९३
व्यय	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	९३

संक्षिप्त विवाहादि मुहूर्त्ताः।

(विशेष विवरणं पत्रे द्रष्टव्यम्)

वैशाखकृष्णपक्षः

ति. ५ व ध वासरान्तं मीनार्क दोषः।
ति. ६ शुक्रे–मूल भे रे. ७ ल. गो. ल. चि.।
ति. ७ शनौ–उ. पा. भे. रे. ९ ल. १२ ने. दा.।
ति. ८ रवौ–उ. पा. भे रे. ८ ल. गोधूलिः।
ति. १२ गुरौ–उ. भा. भे रे. ९ ल. १२ ने. दा.।

वैशाखशुक्लपक्षः।

ति. २ भौमे–रोहिणी भे रे. ८ ल. गो. वा. ल. चि.।
ति. ९ चन्द्रे–मघा भे रे. ७ ल. गोधूलिः।
ति. ११ गुरौ–उ. फा. भे हस्ते च रे. ७ ल. गो. वा. ल. चि.।
ति १२ शुक्रे–हस्ते ७ ल. गो. वा ल. चि.।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः।

ति. १ भौमे–मैत्रे रे. ७ ल. गो. वा. ल. चि.।
ति. १० गुरौ–उ. भा. भे. रे. ९ ल. गो. वा. ल. चि.।
ति. १२ शुक्रे–रेवत्यां रे. ९ ल. गो. वा ल. चि.।

जेष्ठशुक्लपक्षः।

ति. ८ भौमे–उ. फा. भे रे. ६ ल. चि.।
ति. ९ बुधे–उ. फा. भे रे. ६ ल. गो. वा. ल. ९ ने. दा.।
ति. १० गुरौ–हस्ते रे. ८ ल. चि।
ति. १२ शनौ–स्वात्यां रे. ८ ल. गो. वा. ल. ९ ने. दा.।
ति. १३ रवौ–स्वात्यां दि. ल. चि.।
ति. १४ चन्द्रे–मैत्रे रे. ७ ल. गो.।
ति. १५ बुधे–मूले रे. १० ल. गो. वा ल. १२ ने. दा.।

आषाढशुक्लपक्षः

ति. ५ रवौ–मघा भे. रे. ८ ल. गो. वा १२ ने. दा.।
ति. ६ भौमे–उ. फा. भे. रे. ७ ल. १२ ने. दा.।
ति. ७ बुधे–परं हस्ते रे. ८ ल. १२ ने. दा.।
ति. ८ गुरौ-हस्ते दिवा ल. चि०।
ति. ९ शुक्रे–स्वात्यां रे. ९. ल. गो. वा. ११ न. दा.।
ति. १० शनौ–स्वात्यां रे. ८ ल. गोधूलिः।

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

ति. १ शुक्रे–मैत्रे रे. ७ल. चि.।
ति. २ शनौ–मूले रे. ९ ल. गो. वा ल. ६ ने. दा.।
ति. ३ रवौ–मूले रे ८ दिवा ल. चि.।
ति. ४ चन्द्रे–उ. पा. भे. रे. ७ ल. गो. वा. ६ ने. दा.।
ति. ५ भौमे–उ. पा. भे. रे. ६ दिवा. ल. चि.।

माघशुक्लपक्षः

ति. ४ गुरौ–उ. भा. भे. रे. ९ ल. चि.।
ति. ५ शुक्रे–उ. भा. भे. रे. ९ ल. गो. वा ७ ने. दा.।
ति. १० भौमे–रोहिण्यां रे. ७ ल. गो. वा ७ ने. दा.।
ति. ११ बुधे–रोहिण्यां रे. ७ ल. चि.। मृगे च रे. ९ ल ७ ने. दा.।
ति. १२ गुरौ–मृगे रे. ८ वैधृतेः पूर्वं ल. चि.।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

ति. ४ गुरौ–उ. फा. भे घ. १३ यावन्मृत्युः ततः परं रे. ७ ल. गो। हस्ते रे ७ ल. ९ ने. दा.।
ति. ५ शुक्रे–हस्तभे रे. ७ ल. गो.।
ति. ७ रवौ–स्वात्यां विष्टेः परं रे ७ ल. गो. वा ९ ने. दा.।
ति. ९ भौमे–मैत्रे रे. ७ ल. गो. वा. ९ ने. दा.।
ति. १० बुधे–मैत्रे रे. ७ दिवा. ल. चि.।
ति. १२ शनौ – उ. पा. भे रे. ८ ल. गो.।

फाल्गुनशुक्लपक्षः।

ति. ३ गुरौ–उ. भा. भे. विष्टेः परं रे. ९ ल. चि.।
ति. ४ शुक्रे–उ. भा. भे रे. ८ दिवा ल. चि.।
ति. ८ भौमे–रोहिण्यां रे. ९ ल. ने. दा.।

चैत्रकृष्णपक्षः।

ति. १ बुधे–उ. फा. भे रे. ९ ल. गो.।
ति. २ गुरौ–हस्ते रे. ८ ल. गो. वा ९ ने. दा.।
ति. ४ शनौ–स्वात्यां रे. ८ ल. गो. वा. ९ ने. दा.।
ति. ५ रवौ–स्वात्यां रे. ७ दिवा ल. चि.।
ति. ८ बुधे–मूल भे रे. ९ ल. गो. वा ९ ने. दा.।
ति. १० शुक्रे–उ. पा. भे. रे. ७ ल. ९ ने. दा.।
ति. ११ शनौ–उ. पा. भे. रे. ७ ल. गो.।

वधूप्रवेशद्विरागमनमुहूर्त्ताः

वैशाखकृष्णपक्षः

ति. ५ गुरौ–मूल भे वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु.।

वैशाखशुक्लपक्षः

ति. ५ गुरौ–मृग भे वधूप्रवेशद्विरागमनयो मु.।
ति. ७ शनौ–पुष्य भे वधूप्रवेशद्विरागमनयो मु.।
ति. ११ गुरौ–उ० फा० भे वधूप्रवेश मु.।
ति. १२ शुक्रे–हस्त भे वधूप्रवेशद्विरागमनयो मु.।

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

ति. १ शुक्रे–मैत्रे वधूप्रवेशद्विरागमनयो मु.।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

ति. ३ गुरौ–उ० भा० भे वधूप्रवेश मु.।
ति. ४ शुक्रे–वधूप्रवेशद्विरागमनयो मु.।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

ति. ३ गुरौ–उत्तरायां वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु.
ति. ४ शुक्रे–पंचम्यां वधूप्रवेशद्विरागमनयो मु.

उपनयनमुहूर्त्ताः

चै. शु. २ रवौ–अश्विन्यामुपनयने ल. चि.।
चै. शु. ५ बुधे–रोहिण्यामुपनयने ल. चि.।
चै. शु. १० चन्द्रे–सार्पे उपनयने ल. चि.।
चै. शु. १२ बुधे–पू. फा. भे उपनयने ल. चि.।
वै. शु. ५ गुरौ–मृगे भे उपनयने ल. २, ३
वै. शु. १० बुधे–पू. फा. भे उपनयने ल. २, ३
ज्ये. कृ. २ बुधे–मैत्रे उपनयने केतुवेधः।
ज्ये. कृ. ३ गुरौ–मूल भे उपनयने ल. २ ने. दा.
ज्ये. शु. २ बुधे–मृग भे उपनयने ल. चि.।
ज्ये. शु. ३ गुरौ–आर्द्रा भे उपनयने ल. चि.।
ज्ये. शु. १० गुरौ–हस्त भे उपनयने ल. चि.।
फा. कृ. ५ शुक्रे–हस्त भे उपनयने ल. चि.।
फा. शु. २ बुधे–शतभिषजि उपनयने ल. चि.।
फा. शु. ३ गुरौ–पू. भा. भे उपनयने ल. चि।
फा. शु. १० गुरौ–आर्द्रा भे उपनयने ल. चि.।

गृहारम्भप्रवेशयोर्मुहूर्त्ताः

वै. शु. १० बुधे–उ. फा. भे गृहारम्भप्रवेशयोः चक्रशुद्धिः।
वै. शु. ११ गुरौ–उ. फा. भे गृहप्रवेशे चक्रशुद्धिः
वै. शु. १२ शुक्रे–गृहारम्भप्रवेशे च चक्रशुद्धिः।
वै. शु. १३ शनौ–गृहारम्भप्रवेशे च चक्रशुद्धिः।
ज्ये. कृ. २ बुध–मैत्रे गृहारम्भप्रवेशे च चक्रशुद्धिः।
ज्ये. कृ. १२ शुक्रे–रेवत्यां गृहप्रवेशे चक्रशुद्धि।
ज्ये. शु. ९ बुधे–उ. फा. भे गृहारम्भप्रवेशयोर्मु.।
ज्ये. शु. १० गुरौ–हस्ते गृहारम्भप्रवेशे चक्रशुद्धिः।
ज्ये. शु. ११ शुक्रे–विष्टेः परं गृहारम्भगृहप्रवेशयोर्मु.।
ज्ये शु. १२ शनौ–चित्रा भे गृहप्रवेशे चक्रशुद्धिः
श्रा. कृ. ४ सोमे–पंचम्यां गृहारम्भे चक्रशुद्धिः।
श्रा. कृ. १२ सोमे–गृहप्रवेशे चक्रशुद्धिः।
श्रा. शु. ६ बुधे–गृहप्रवेशे गृहारम्भे च चक्रशुद्धिः।
श्रा. शु. ११ चन्द्रे–मैत्रे जीर्णगृहारम्भप्रवेशे च चक्रशुद्धिः।

सन् १९७१–७२ का काशी में रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का

प्रतिदिन मिनटादि अन्तर

ता.	मार्च	एप्रिल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित०	अक्टू०	नवम्बर	दिस०	जन०	फर०	मार्च
१	—	२ १४	४ ४७	४ २४	[illegible]	[illegible]	१ ४३	१२ ०	१८ २२	१३ २०	१ ७	११ ३०	१० २९
२	—	१ ५७	४ ५४	४ १५	[illegible]	[illegible]	१ ५९	१२ १९	१८ २४	१२ ५८	१ ३०	११ ३८	१० १७
३	—	१ ३९	५ १	४ ६	[illegible]	[illegible]	२ २०	१२ ३८	१८ २५	१२ ३५	१ ५९	११ ४६	१० ५
४	—	१ २१	५ ८	३ ५६	[illegible]	[illegible]	२ ३९	१२ ५३	१८ २५	१२ १२	२ २७	११ ५३	९ ५२
५	—	१ ३	५ १४	३ ४६	[illegible]	[illegible]	२ ५९	१३ १६	१८ २५	११ ४८	२ ५४	११ ५९	९ ३९
६	—	० ४६	५ १९	३ ३६	[illegible]	[illegible]	३ १९	१३ ३४	१८ २३	११ २३	३ २१	१२ १	९ २५
७	—	० २९	५ २४	३ २५	[illegible]	[illegible]	३ ३९	१३ ५२	१८ २१	१० ५८	३ ४८	१२ ३	९ ११
८	—	० १४	५ २९	३ १४	[illegible]	[illegible]	४ ०	१४ १०	१८ १८	१० ३२	४ १४	१२ ११	८ ५६
९	—	+० ५	५ ३३	३ ३	[illegible]	[illegible]	४ २०	१४ २७	१८ १५	१० ६	४ ४०	१२ १५	८ ४२
१०	—	० २२	५ ३६	२ ५२	[illegible]	[illegible]	४ ४१	१४ ४३	१८ १०	९ ४०	५ ५	१२ १७	८ २६
११	—	० ३९	५ ३८	२ ४०	[illegible]	[illegible]	५ २	१४ ५९	१८ ४	९ १२	५ ३०	१२ १९	८ ११
१२	—	० ५५	५ ४०	२ २८	[illegible]	[illegible]	५ २३	१५ १५	१७ ५८	८ ४५	५ ५४	१२ १९	७ ५५
१३	—	१ १०	५ ४२	२ १६	[illegible]	[illegible]	५ ४४	१५ ३०	१७ ५१	८ १७	६ १७	१२ १९	७ ३८
१४	—	१ २६	५ ४३	२ ३	[illegible]	[illegible]	६ ५	१५ ४५	१७ ४३	७ ४९	६ ४०	१२ १८	७ २२
१५	—	१ ४१	५ ४३	१ ५१	[illegible]	[illegible]	६ २६	१५ ५९	१७ ३४	७ २०	७ २	१२ १६	७ ५
१६	—	१ ५६	५ ४३	१ ३८	[illegible]	[illegible]	६ ४८	१६ १२	१७ २४	६ ५१	७ २४	१२ १३	—
१७	—	२ १०	५ ४२	१ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६ २५	१७ १३	६ २२	७ ४६	१२ १०	—
१८	—	२ २५	५ ४०	१ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१७ १	५ ५३	८ ५	१२ ६	—
१९	—	२ ३८	५ ३८	० ५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६ ४९	५ २३	८ २४	१२ १	—
२०	—	२ ५१	५ ३६	० ४६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६ ३६	४ ५३	८ ४३	११ ५६	—
२१	—	३ ४	५ ३३	० ३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६ २२	४ २३	९ १	११ ५०	—
२२	—	३ १७	५ २९	० २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६ ७	३ ५४	९ १८	११ ४३	—
२३	—	३ २९	५ २५	+० ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५ ५१	३ २४	९ ३५	११ ३६	—
२४	—	३ ४०	५ २०	० ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५ ३५	२ ५४	९ ५१	११ २८	—
२५	—	३ ५१	५ १४	० १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५ १८	२ २४	१० ६	११ २०	—
२६	—	४ २	५ ९	० ३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५ ०	१ ५४	१० २०	११ ११	—
२७	३ ४५	४ १२	५ २	० ४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४ ४१	१ २४	१० ३४	११ १	—
२८	३ २७	४ २१	४ ५५	० ५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४ २२	० ५५	१० ४६	१० ५१	—
२९	३ ९	४ ३०	४ ४८	१ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४ २	० २५	१० ५८	१० ४०	—
३०	२ ५१	४ ३९	४ ४१	१ २२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३ ४१	+० ५	११ ९	—	—
३१	२ ३३		४ ३२		[illegible]	[illegible]		[illegible]		० २३	११ २०		—

सूचना – १ सितम्बर सन् १९४२ ई. से १४ अक्टूबर सन् १९४५ ई. तक १ घंटा स्टैण्डर्ड टाइम बढ़ा हुआ था, इसलिए [illegible] समय में १ घंटा घटाकर पूर्व सूचनानुसार सूर्य घड़ी बनानी चाहिए।

इस कोष्ठ के अनुसार जितने में + धन चिह्न हैं उतने दिनों तक रेलवे घड़ी के समय में उतना मिनट जोड़ने से और जहाँ ऋण चिह्न है उतने दिनों तक रेलवे समय में उतना मिनट घटा देने से काशी में सूर्यघड़ी के अनुसार समय हो जायगा। काशी से अन्यत्र के स्थानों में रेलवे घड़ी से सूर्यघड़ी बनाने का यह प्रकार है कि पहले इस सारिणी के अनुसार रेलवे समय में संस्कार कर काशी का समय बनाना, फिर जिस किसी देश का बनाना हो, उस देश का जो देशान्तर घट्यादिक हो, वह पश्चिम हो तो काशी के समय में घटाने से पूर्व हो तो जोड़ देने से उस देश की सूर्यघड़ी के अनुसार समय हो जायगा। जैसे १९ मई को रेलवे घड़ी में ५ बजे कलकत्ते में सूर्यघड़ी का समय जानने के लिए उस दिन का संस्कार ५ मिनट [illegible] सेकेण्ड जोड़ा और इसमें कलकत्ते का देशान्तर २२ मिनट जोड़ देने से कलकत्ते में सूर्यघड़ी का समय ५।२७।४२ हुआ।

स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने उत्तमपक्षतिथ्यादीनां बोधकचक्रम् ।

तत्रश्रेष्ठ-पक्षमासाः	वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गाख्ये ज्येष्ठे श्रावणाश्विने एषु सितपक्षे चोत्तमम् ॥ अत्र श्वेतवस्त्रं श्रेष्ठम् ॥ नान्यद्वरम् ॥
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ एतासुतिथिषुसत् ॥ परन्तु तत्र कृष्णपक्षस्य दशमी यावन्मध्यं तदुपरि-कुलटात्वं स्यात् ।
वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे प्रशस्तम् ॥
शुभ-नक्षत्राणि-	श्र.मृ.श.ध.रे.चि.अनु.ह.अश्वि. पुष्य उत्तरा. ३ रोहि.स्वा. एतद्भेषु शुभम् ॥ मू.पुन.म.वि.कृ.एषु मध्यमं परेष्वसत् ॥ दिवा दुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठं न रात्रौ ॥
शुभ-लग्नानि	२।३।४।६।७।९।१२ एतद् भस्याङ्गेषु सद्भिर्दृष्टेसुसूत्तमम् । तत्रविवाहवद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या ।

अथाद्यरजोदर्शनेनिषिद्धसमयः ।

अष्टम्यांद्वादशीषष्ठोरिक्तादावथ संक्रमे ॥ भद्रा निद्रा व्यतिपाते ग्रहणे दर्जि वैधृतौ ॥१॥ परतातगृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवासरे ॥ प्राग्रजोदर्शनं नेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत् ॥२॥ प्रागुक्ता विलयं यान्ति रजोदर्शनसम्भवाः ॥३॥

अथऋतुमत्याः स्नानस्यमुहूर्त्त विचारः ।

ह. स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. उत्तरा ३. रो. ज्ये. एषु भेषु ॥ शुभतिथौ सद्वारे सत्तनौ स्नायादृतुमती नारी ।

अथास्याःशुद्धिः॥भर्तुंस्पृश्याचतुर्येऽन्हिदैवेपित्र्येचपञ्चमे ।इति।

अथास्याःशान्ति कल्पोक्ता ॥	गर्भसंस्कारे विशेषमाह ॥
घृतदूर्वातिलाक्षतैरष्टोत्तरशतं मृत्युञ्जयेन जुहुयात् । स्वर्णगोभूदानं च, विस्तरास्तुनिबन्धे।	स्त्रीणांविधोर्बलमुशन्तिविवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसु – भर्तुरेव इति ।

गर्भादित्रमासानामधिपाः

१	२	३	४	५	६	मासाः
शु.	मं.	बृ.	सू.	चं.	श.	पतयः
७	८	९	१०			मासाः
बु.	गर्भल. पतिः	चं.	सू.			पतयः

अथजातकर्मानन्तरकृत्यम् ।

जन्मलग्नं निरीक्ष्य तत्रस्थग्रहदोषपरिहाराय ग्रहदानं जपादिकंकृत्वाजातकस्यमूलोत्पन्नस्यमुखमालोक्य स्नायादिति॥

अथगर्भाधानमुहूर्त्तविचारः ।

तत्रत्रिविधगंडान्त ॥ जन्मर्क्ष [illegible] ॥ मू.म. अश्वि. रे. ॥ ग्रहणदिन ॥ व्यतिपातवैधृतिश्राद्ध ॥ दिवापरिघाद्यर्द्धउत्पातहतभम् जन्मराशितः [illegible] पापग्रहस्थभवनम् ॥ भद्रा पर्वदिनं ६।३०।१५।४।८॥ दिवसंध्यायाम् ॥सू. मं. श. वासराणि ॥ रजोदर्शनात्तुर्यरात्रि यावत् न शुभाः ॥ उत्तरा ३. मृ.ह.अनु.[illegible].ध. एषुभेषुलग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः, लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः ॥ सू. मं. गु. दृष्टलग्नेविषमराशि[illegible] शुभम् ॥ युग्मरात्रौचोत्तमं गर्भाधानम् । [illegible] पुष्य. श. अश्विनी एतद्भेषु मध्यमं स्यादिति ॥

पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्त्तबोधकचक्रम् ।

तत्र गर्भतः तृतीये मासिपुंसवनम्[illegible] ॥ सीमन्तोन्नयनं षष्ठेऽष्टमेमासि ॥ मासाधिपतौ[illegible]सीमन्तोन्नयनंप्रशस्तं॥ तत्रशुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषो न विचार्यः कालानुरोधात् ॥

सद्वाराः	सू.म.वृ.एषांवारे मतान्तरे [illegible]शुक्राणां वारे तारा शुद्धौसत्यां पुंसवनसीमन्तौ भवतः ।
सद्भानि	मृ. पुष्य. मू. श्र. पुन. [illegible] ३. रो. एतद्भेषु जन्मभंविना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रशस्तम् ॥
सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।[illegible]तिथौ सिते । तिथि १० यावत्कृष्णे चोत्तमः [illegible] पूर्वाह्ने एव कार्यः ॥
सांगलग्न शुद्धिः	संस्कारद्वयं पुम्भस्यांशे[illegible]श्रेष्ठः तत्रलग्नाद् १।४।५।७।९।१० एषु[illegible] ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः ॥ चन्द्र १।६।८।[illegible] वर्जितेश्रेष्ठः ॥५।८।१ एषुपापएकोऽप्यसत् ॥

सूतिकापथ्यम्।

अन्नप्राशनोक्तभे तिथौचदुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम् ॥

अथसूतिकाक्वाथग्रहणम् ।

भैषज्योदितवारनक्षत्रदुर्योगवर्जिते सूतिकायाः क्वाथग्रहणं प्रशस्तम् ॥

स्तनपानमुहूर्त्तस्य विचारः ।

अश्वि. रो. पु. पुष्य. उफा. ह. चि. अनु. मू. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. एषुभेषुशुभवासरे शुभतिथौस्थिरलग्ने स्तनपानंप्रशस्तंस्यादिति ।

जातकर्ममुहूर्त्तस्य विचारः ।

श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत् । रात्रावपि कर्त्तव्यम् ॥ श्राद्धादिकं स्नातव्यम् ॥ तत्कालेऽतिक्रान्ते सूतकान्तेऽपिकर्तव्यम् ॥

अथ सूतिकास्नानमुहूर्त्तस्य विचारः ।

रे. उत्तरा ३. रो. मृ. ह. स्वा. अश्वि. अनु. एषुभेषु ॥ १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ । एततिथौ रवीज्यकुजवासरे सूतिकास्नानं प्रशस्तम् ॥ आ. पुन. पु. श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. बुध. शनि. वासरौ ४।६।८।९।१२।१४ एष्वसत् अन्यभतिथिवारेषु मध्यमम् ॥ पञ्चाङ्गशुद्धलग्ने शुभग्रहयुते दोषवर्जिते श्रेष्ठोऽयमिति ॥

अथ दोलारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः ॥

अथ जन्माहात् १०।१२।१६।१८।३२ एषु दिवसेषु शुभवासरे मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. उत्तरा ३. रो. एषुभेषु रिक्तामारहिततिथौचरांगे शुभयुतलग्ने, लग्नात् १।४।५।७।९ १०।११ शुभैः ॥ ३।६।११ पापैश्चोत्तमः ॥

दोलारोहणे दोलाचक्रम्	
रविभाच्चान्द्रः	
५ न.	नैरुज्यम्
५ न.	मरणम्
५ न.	कृशता
५ न.	व्याधिः
५ न.	सौख्यम्

अथ जलपूजनमुहूर्त्तस्यविचारः ।

तत्र सूतिकायाः मासपूर्तौ सत्यां शुक्रेज्ययोरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तथाधिकमासे जलं न पूजयेत् ॥ श्र.पु. पुन. मृ. ह. मू. अनु. एषु. भेषु. विरिक्ते तिथौ चं. बु. बृ. एषां. वारे शुभम् ।

अथ भूम्युपवेशनमुहूर्त्तस्य विचारः ।

तत्रादौ पृथ्वींवराहञ्चाभिपूज्यभौमबले पञ्चमेमासि-कार्य्यः ॥ उत्तरा ३. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. एषु भेषु ॥ रिक्तामारहिततिथौस्थिरभस्यांगे शुभवासरे च ॥ बालकस्यकटिस्थलेकटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् ॥ तत्रमन्त्रः ॥ रक्षैनंवसुधेदेवि सदासर्वगतं शुभम् ॥ आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्वहरिप्रियेइति । अथात्रैव बालाग्रे-इमानिस्थापयेत् वस्त्रं । शस्त्रं ॥ पुस्तकं ॥ लेखनीं ॥ स्वर्णं ॥ रौप्यम्-एषुयद्-बालोगृह्णाति तैराजीवनं तस्य वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत् ॥

अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तज्ञानम् ॥

जन्मतश्चतुर्थमासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्निवा सत् ॥

अथ नामकरणमुहूर्त्तस्य विचारः ॥

सूतकान्ते नामकर्म कर्तव्यं स्वकुलोचितम् ॥ व्यासः ॥ नामधेयं दशम्यां तु केचिदिच्छन्ति सूरयः ॥ द्वादश्यामाहुरन्ये तु मासे पूर्णे तथा परे । अष्टादशेऽह्नि तथा वदन्त्येके मनीषिणः । सारसंग्रहे । एकादशेऽह्नि विप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे ॥ वैश्यानां षोडशेनाम मासान्ते शूद्रजन्मनः ॥ बृहस्पतिः । द्वादशेदिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे ॥ षोडशे विंशतौ चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात् ॥

भानि	मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्रव. ध. श. एषुभेषु शुभः ॥
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एषां. वारे. नामकर्म हितम् ॥
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३। एततिथौ भद्रादिरहिते सत्युत्तमम् ॥
शु. ल.	२।५।८।११ एतद्भस्यांगेऽष्टमशुद्धौ शुभलग्ने शुभांशे चोत्तमम् ॥
लग्नशुद्धिः	लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः ॥ लग्नात् ८।१२ सर्वे न शुभाः ॥ पितृपुत्रयोः चन्द्रताराबले दिवापूर्वाह्ने एवकर्तव्यम् ॥ मध्याह्ने मध्यमम्, तदग्रे नुसत ॥

व्यतीपातसंक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाहश्राद्धाहपक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णाशकुनाकिंस्तुघ्नविष्टिकरणादीन्वर्जयित्वोक्ततिथिषु नामकर्म हितम् ॥ अथविहितकालातिक्रमे सति गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषरहितेपि सौम्यायने कार्यम् ॥ नान्यदिति ॥

अथ चैत्रादि १२ मासानामत्र नामानि ॥

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मार्ग	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकुंठः	जनार्दनः	उपेन्द्रः	यज्ञपुरुषः	वासुदेवः	त्रिविक्रमः	योगीशः	पुंडरीकाक्षः	कृष्णः	अनन्तः	अच्युतः	चक्रधारी	नामानि

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफल बोधकचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयंनाशः	क. भ्रातृ नाशः	भगिनी नाशः	मातृनाशः	ज्ये. भ्रातृ नाशः	सुभोगं	तातसुखं	पुष्टता	लक्ष्मी	सौख्यं	सौख्यं	धनसंपत्तिः	फलानि

अथ जनौसदशनावोर्ध्वस्वपित्रादिहा ॥ तदर्थ शांतिः विधेया इति ॥

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम् ॥

तत्रबालानांषष्ठमासादारभ्यसममासेषु । कन्यकानां पञ्चमासादारभ्यविषममासेषुकार्यम् ।
सद्भानि । रो. उत्तरा ३.मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य. अश्वि. पुन. स्वा. श्र. ध. श. एषुभेषु शुभः ।
तिथयः । २।३।५।७।१०।१३।१५ एषुसत् ॥ अन्येष्वसत् ॥ वाराः चं. बु. बृ. शु. ।
एषांवारेश्रेष्ठः नान्यऽह्नि ॥ सदंगानि २।३।४।५।६।७।९।१०।११ एषुजन्मांगभयोः मत्यभस्यांगतदंशकञ्चहित्वाप्रशस्तानि ॥ नान्यल्लग्नम् ॥

अस्यांगशुद्धिचाप्याह	लग्नात् १।३।४।५।७।९। एषुशुभैः ३।६।११ एषु पापैः १० शुद्धः । ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे चोत्तमः ॥

अथ खट्वारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः ॥

जन्माह्नात् १०।१२।१६।३२ एषुदिवसेषु मृदु. ध्रुव. क्षिप्रएषुभेषु ॥ शुभाहे ॥ रिक्तामारहिततिथौ प्राक्शीर्षबालं न्यसेत् ॥

अथ कर्णवेधस्यमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम्।

जन्माह्नात् १२।१६ दिने ॥ मृतश्च ६।७।८मासि॥ततः विषमवर्षेकर्णवेधःशुभः ॥ चैत्रपौषजन्ममासहरिशयनरिक्ताः-अमासमवर्षजन्मतारा एतान् हित्वाप्रशस्तः कर्णवेध इति ॥

सतिथयः	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१ एततिथौ-सिते । कृष्णे च ति. १० यावदुत्तमः ॥
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एषांवारेभद्रादिरहितेदुत्तमः ॥
सद्भानि	पुन. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. मृ. चि. अ. रे. श्र. ध. एतद्भेषु चन्द्रबलेसतिप्रशस्तः ॥
शु.ल.	२।३।४।५।७।९।१२ एतल्लग्नेष्वंशेषु सत् ॥
लग्न-शुद्धिश्च.	लग्नादष्टमभवनेसंशुद्धे । लग्नात् १।३।[illegible]।७।९।१० ११ एषुशुभैः तथा ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः ॥ लग्नस्थेगुरौ कर्णवेधः शुभावहः ॥

अथ चौलमुहूर्त्तस्य बोधकार्यमिदचक्रम्।

तत्रजन्मतःवर्षत्रयाद्विषमवर्षे ॥ विचैत्रोदगयनेभानोत्तमः॥ मनुनाप्रथमवर्षेऽपिसदुक्तंचौलम् ॥ स्वकुलाचारात्॥

सद्भानि.	ज्ये. मू. रे. चि. ह. अश्वि. पुष्य. अभिज्या पुनर्वसु श्र. ध. श. एषुचन्द्रतारानुकूलेसतिशुभः ॥
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एतद्वारेभद्रादिदोषरहितेश्रेष्ठम् ॥
सत्तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३ एततिथौसत् [illegible]पर्वोनाह्ने
शु. ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशेश्रेष्ठोयम् ।

अत्र जन्मांगभयोर्मृत्युभस्यलग्नांशयोर्विनोक्तांगश्रेष्ठम् ॥

लग्न-शुद्धिः	लग्नात् १।२।४।५।७।९।१० शुभैः ३।११ पापैश्चैतदगृहोपगतैस्तथा ६।८।१२ विधौ [illegible] शुक्रवर्जिताष्टमभवने संशुद्धे चोत्तमः चंद्रताराबलांगकृष्णपक्षेऽनिष्टमिति ॥

अथ शिशोस्ताम्बूलभक्षणस्य मुहूर्त्तविचारः ॥

उत्तरा ३. रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. ज्ये. मू. श्र. स्वा. ध. पुनर्व. अभि. एषुभेषु ॥ सू. चं. बु. बृ, शु. एषांवारे ॥२।३।६।१०।११।१२ भस्यांगेचोत्तमः ॥ तत्रलग्नात् १।४।५।७।९।१० एषुशुभैः ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः ॥ [illegible]मासद्वयसमये-अन्नप्राशनान्ते वा कार्यमिति ॥

अथ क्षमार्थशान्तिमुहूर्त्तस्यात्रविचारः ॥

ह. अश्वि. पुष्य. अभि. रे. उत्तरा ३. रो. स्वा. श्र. ध. श. पुनर्व. अनु. म. एषुभेषु शुभानांवारे सत्तिथौचोत्तमः परन्तु क्षितेज्ययोरस्तादिदोषरहिते आवश्यकेऽस्तादावपि विधौ १० रवौ १ जीवे ८।१ पापरहितेचोत्तमः ।

तत्कालातिक्रमणेजातकर्मणिविचारः ॥

सतिथयः	१।२।३।५।६।११।१२।१३।१५ एततिथौ व्यतीपातसंक्रांतिभद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम् ॥
सद्वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणांवासरेषु ॥ जन्माह्नात् प्रथमैकादशद्वादशदिनेषुचोत्तमः ।
सद्भानि	मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. पुन. स्वा. ध. श. ह. पुष्य. अश्वि. एषु सततौ जातकर्मश्रेष्ठम् ॥

अक्षरारम्भस्यमुहूर्त्तज्ञानायचक्रमिदम् ॥

तत्रोत्तरायणेरवौ । पञ्चमेऽब्दे । गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीकुलदेवान्नत्वा सविधि संपूज्य च शिशोर्नूतनाक्षरलेखनाऽरम्भः कार्यः ॥

तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२। एततिथौदुर्योगभद्रादिरहितेसतिशुभः ॥
वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राः एषांवारे ॥ शुक्लपक्षेचाक्षरारम्भः शुभः ॥
सद्भानि	अश्वि. आर्द्रा. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अभि. श्र. अनु. रे.
लग्न-शुद्धिः	१।२।३।९।१२ एतद्भस्यांगेतदंशेचोत्तमः ॥ अत्राष्टमशुद्धलग्ने कुम्भलग्नं विनासत् । स्वस्थेजीवेबुधे शुक्रेलग्ने केवलोदये श्रेष्ठम् ॥

विद्यारम्भमुहूर्त्तस्यबोधकचक्रमिदम् ।

तत्रादौ अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जातेसतिसौम्यायने रवौ ॥ गणेशविष्णुवाग्रमा अभ्यर्च्यंकार्यः ॥

सद्वाराः	सू. बु. बृ. शु. एतद्वारेषु शुभः ॥
भानि	अश्वि. मृ. आ. पु.ऽश्ले. पु. पूफा. ह. चि. स्वा. मू. पूषा. श्र. ध. श. पू. भा. ।
सत्तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२ एषुसिते. ति. ५ यावत्कृष्णपक्षे चोत्तमः ॥
सांगलग्नः शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्यांगेशुभः । लग्नादष्टमेसर्वेग्रहाः नेष्टा, लग्नात् १।२।३।४।५।७।९।१०।११। एषुशुभैः ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमाधीतिरिति ॥

अथ व्रतबन्धमुहूर्त्तस्यबोधकचक्रमिदम् ।

तत्र गुरुशुक्रयोर्बृद्धत्वास्तशिशुत्वकालं विनोत्तरायणे रवौ माघादि ५ मासेषु शुभः परन्त्वर्कन्दुगुरुशुद्धिवशेन चैत्रेऽपिमीनार्के ब्राह्मणानां व्रतं सत् ॥

सद्भानि	अश्वि. रो. मृ. आ. पु. पु.ऽश्ले. पूफा. उफा. ह. चि. स्वा. अनु. मू. पू.षा. उषा. श्र. ध. श. पूभा. उ. भा. रे. एतद्वेधरहिते सत् । परन्तुनापराह्णे ॥
तिथयः	२।३।५।१०।११।१२ एतानि शुक्ले २।३।५। कृष्णेतिथयरुत्तमाः ॥
सद्वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषु. रुग्याणादिदोषरहितेचोत्तमः ॥
लग्न-शुद्धिज्ञानमाह	त्रिषड्भस्थाः खलास्सर्वे चन्द्रो द्वियूनदिक्त्रिगः ॥ सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्था लाभे सर्वे व्रते शुभाः ॥१॥ चं.शु.बृ. लग्नेश. लग्नात् ६।८ न शुभाः ॥ चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ निंद्यौ लग्नात् १।५।८ पापाः न शुभाः ॥६।८।१२ सौम्या न शुभाः ॥३।६।११ पापाश्शुभदाः पूर्णेन्दुः वृषकर्कगतो लग्ने श्रेष्ठोऽन्यथा न ॥ लग्नेऽर्कः शुभः ॥

शतपदचक्रम् ।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
नक्षत्राणि	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.
अक्ष.	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.इ. उ.ए.	ओ.वा. वी.वु.	वे. वो. का.की.	कु.घ. ङ.छ.	के. को. हा. ही.	हु.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मा. मी. मू.मे.	मो. टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.
रा.	मे.	मे.	मे.१ वृ.३	वृ.	वृ.२ मि.२	मि.	मि.३ क.१	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.१ क.३	क.	क.२ तु.२
वर्ण.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२
वश्य.	च.	च.	च.	च.	च.२ न.२	न.	न.३ ज.१	ज.	ज.	व.	व.	व.१ न.३	न.	न.
योनी.	अश्व.	गज.	छाग.	सर्प.	सर्प.	श्वान	मार्जार.	छाग.	मार्जार.		मूषक.	गौ.	महि.	व्याघ्र.
राशीश.	मं.	मं.	मं.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु.	बु.३ चं.१	चं.	चं.	सू.	सू.	सू.१ बु.३	बु.	बु.२ शु.२
गण.	दे.	म.	रा.	म.	दे.	म.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
नक्षत्राणि	स्वा	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
अक्ष.	रू. रे. रो.ता.	ती. तू. ते.तो.	ना. नी. नू ने.	नो.या. यि.यू.	ये. यो. भ. भी.	भू.ध. फ.ढ.	भे. भो. ज. जी.	खी.खू. खे.खो.	गा. गी. गु. गे.	गो. सा. सी. सू.	से. सो. द. दी.	दू. थ. झ. ञ.	दे.दो. च. ची.
रा.	तु.	तु.३ वृ.१	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.१ म.३	म.	म.२ कु.२	कुं.	कुं.३ मी.१	मी.	मी.
वर्ण.	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	न.	न.३ की.१	की.	की.	न.	॥न. ३॥च.	च.	१॥च. २॥ज.	ज.२ न.२	न.	न.३ ज.१	ज.	ज.
योनी.	महिष.	व्याघ्र.	मृग.	मृग.	श्वान.	मर्कट.	नकुल.	मर्कट.	सिंह.	अश्व.	सिंह.	गौ.	गज.
राशीश.	शु.	शु.३ मं.१	मं.	मं.	ब.	बृ.	बृ.१ श.३	श.	श.	श.	श.३ बृ.१	बृ.	बृ.
गण.	दे.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	दे.
नाड़ी	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.

१ विवाहे वर्णगुणाः । वरः

कन्या	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः । वरः

कन्या	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

६ गणगुणाः । वरः

कन्या	दे.	म.	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ नाड़ी गुणाः । वरः ।

कन्या	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

७ भकूटगुणाः ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सि.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	७
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

३ तारागुणाः ।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

कन्या

५ ग्रहमैत्रीगुणाः । वरः

कन्या	सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मङ्गल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

४ योनिगुणाः । वरः

कन्या	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	१	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	३	२	२	४	१	२	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	१
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	१	१	२	२	४

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रमिदम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गल	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं.मं. बृ.	सूर्य. बुध	सू. चं. बृह	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं.मं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं.बृ. शु.श.	शुक्रः शनिः	मं.बृ. शनि.	शनिः	मङ्गल बृह.	बृह.	समाः
शुक्रः शनिः	०	बुधः	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्यः चं.मं.	शत्रवः

अथात्रयुजिभचक्रमिदम् ।

रेवती, अश्विनी भरणी, कृत्तिका रोहिणी, मृगशिरा	आर्द्रा.पुनर्व.पुष्य.आश्ले. मघा. पूफा. उफा.हस्त. चित्रा. स्वा.विशा. अनु.	ज्ये.मू. पू.षा.उ.षा. श्रवण.धनिष्ठा.शत. पू भा. उ भा.
पूर्व भागे ६	मध्य भागे १२	पर भागे ९
पतिश्रेष्ठः	द्वयोः सुमतिः	कन्या श्रेष्ठा

अथमेलापकेविशेषस्तदाह ।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्निभं परिकल्पयेत् ॥ तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ॥१॥ जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ॥ व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनंभवेदिति॥२॥

अथ गुणानामैक्येनग्राह्याग्राह्यविचारः ।

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा । श्रेष्ठ त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ॥ सद्भूकूटे इति ज्ञेयं दुष्टकूटेऽथकथ्यते । निन्द्यं-गुणैर्विंशतिभिर्मध्यंबाणाधिकैःस्मृतम् – तत्परैः पंचभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणैः—इति ॥ आवश्यके—द्व्यर्कताम्रं सुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्याङ्कके रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिगो स्वर्णादि दत्वोद्वहेत् ।

जातकतत्त्वोक्तसूत्रात् कन्यायाः वैधव्यविषाख्यादियोगज्ञानम् ।

लग्नाच्चन्द्रादन्यतमतः पापाः सप्तमेऽष्टमे वा विधवा ॥१॥ भौमे राहौ सप्तमेष्टमे व्यये वा विधवा ॥२॥ द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्त्ता ॥३॥ लग्नेन्दु पापान्तरौ शुभैरदृष्टौ कुलद्वयघ्नी ॥४॥ द्यूनङ्गे पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा ॥५॥ षष्ठेऽष्टमे चन्द्रेऽष्टमाब्दे रण्डा ॥६॥ सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्टे नवोढा रण्डा ॥७॥ षष्ठाष्टमेशौ षष्ठगतौ व्यये पापास्तेनापि विधवा ॥८॥ अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा ॥९॥ कुजेऽष्टमे कुलटा मन्देष्टमे पतिरोगवती ॥१०॥ सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति ॥११॥ रन्ध्रे राहौ कुलद्वयघ्नी ॥१२॥ लग्नातुर्याष्टमान्त्य संस्थाःपापास्तदा पतित्यक्त्वा परासक्ता च भवति ॥१३॥ सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः । पापाश्रयवुता बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥१॥ सप्ताष्टमपती षष्ठे व्यये [illegible] पीडितौ । तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥२॥ मन्दाश्लेषा द्वितीयायां जाता विषाख्या ॥१५॥ सूर्यवारुणद्वादश्यां जाता विषाख्या ॥१६॥ कुजविशाखासप्तम्यां जाता विषाख्या ॥१७॥ पापेङ्गे सशुभपापावरिगो जाता विषाख्या ॥१८॥ पूर्वेके मन्देङ्गे भौमेऽङ्गे विषाख्या ॥१९॥ विषाख्या वैधव्ययोगस्यापवादमाह—लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च । द्यूनस्थितोहन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषांगनाख्यम् ॥१॥ भौम तुल्यो सदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत् । उद्वाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुःपुत्रपौत्रदः ।

अथ ग्रहमेलापकः ॥

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः । कन्याभर्तुर्विनाशाय भर्त्ता पत्नीविनाशकृत् । इदं लग्नेन्दुभ्यां विचार्यम् । एवं कन्याजन्मकुण्डल्यां लग्नचन्द्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेषु कश्चित्पापग्रहोऽधिकारवांस्तिष्ठेत्तदाप्य-निष्टः । सप्तमेशोऽष्टषष्ठरिःफेषु गतोऽनिष्टः । अथैतेषां वरकुण्डल्यां परिहारः—जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ॥ अष्टमेद्वादशेवापिभौमदोषविनाशकृत् । शनिभौमोऽथवाकश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् । तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् । एवं यावान् पापग्रहः कन्याया नेष्टस्थानस्थितो भवेत्तावानेव ततोऽधिको वा वरस्यापि कुण्डल्यां दृष्ट्वा शुभदो वाच्यः, नान्यथा । कन्यायाःसप्तमभावनायशत्रु [illegible] गर्गः सौम्यग्रहाणां शुभस्थानस्थित्यादिना सौभाग्ययोगश्चविलोक्य इति

अथैवं ज्ञातगुणायां निश्चयमुहूर्त्तमाह ।

[illegible] विवाहर्क्षे चित्रास्वग्निविष्णुभे ॥ लब्ध्वा चन्द्रबलं दद्यात् निश्चयां सत्यया [illegible] स्नातां पुण्यामरोगिणीम् । तत्कालोपस्थिते कन्यां पिता [illegible] ॥२॥ यदि त्व पतितोनस्याःसर्वदोषविवर्जितः । तुभ्यं कन्यां प्रदास्यामि [illegible] ॥३॥ तुभ्यं कन्यार्थिनेवाचा कन्यादानं प्रयच्छति । तन्निश्चयार्थं [illegible] सकलं फलमिति ॥३॥

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम् ।

र.	चं.	गु.	ग्रहाः
[illegible]	[illegible]	२।५।७ ९।११	शुभ-स्थानानि
[illegible]	[illegible]	१।३ १०।६	पूज्य स्थानानि
[illegible]	४ ८।१२	४ ८।१२	निंदित स्थानानि

[illegible] विवाहे कुमारस्योपनयने गुरुबलं [illegible] ॥ कुमारस्योपनयने विवाहेपिसूर्यं [illegible] ॥ उभयोश्चन्द्रबलं चिन्तयेदिति॥

अथ राज्ञा खड्गविवाहः ।

शशाङ्कपंचाङ्गसंशुद्धोसौम्यायने विवाहभे राज्ञोगोधूलिकेलग्नेखड्गोद्वाहःप्रशस्यते। १। अथोद्वाहानन्तरंमण्डपोद्वासनं ॥ युग्मेबलो षष्ठहीनेपंचसप्ताहेकार्यंशुभवारे ॥इति॥

अथ सामान्यविवाहकृत्यम् ।

विवाहकृत्यं सकलं विवाहभैर्विलोकयेच्चैव बलं हिमद्युतेः । नवत्रिषष्ठेह्नि विवाहपूर्वतो नवर्णकोमंडपतैलमङ्गलं। अथ प्रथमंकन्यायाः तैलं पश्चात्तैलं वरस्य । इदं राज्या प्रथमयामे ॥ इति ॥

अथ स्वस्वाधिष्ठितस्थानाद्ग्रहाणांदृष्टिबोधकचक्रम् ।

सू.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	सूर्यादिग्रहाः ॥
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०।०	एकपाददृष्टिः ॥
५।९	५।९	५।९	५।९	०।०	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः ॥
४।८	४।८	०।०	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः ॥
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	७।३।१०	संपूर्णदृष्टिः ॥

गणनायां नृदूरविचारः ।

[illegible] जन्मभाद्द्वितीयं पतिजन्मभम् । न शुभं भर्तृनाशाय इत्युक्तं रुद्रयामले । [illegible] नाडी नृदूर न च । अन्यद्विशेषः—[illegible]—भिन्नराशिस्वामिकंभिन्नाङ्कभमैत्रयोगणयगो [illegible] तारागुद्धौ परस्परम् । न चेत्वष्टाष्टमो दोषस्तदा षष्ठाष्टमःशुभः। [illegible] राशौ राशीशौ वर्ग उत्तमः । तदा राशीश्वरोग्राह्यस्तद्राशि नैव चिन्तयेत् । [illegible] ग्राह्यो न मध्यदेशे ।

हलप्रवहण-वीजोप्तिमुहूर्तज्ञानायचक्रम् ।

[illegible] आर्द्रा. आश्ले. पूर्वा ३. ज्ये. एतद्भिन्न चक्रशुद्ध नक्षत्रे ४, ६, ९, १४, ३०, ८, [illegible] कुम्भ, कर्क, मेष, मकर, तुला, वर्जितलग्ने पार्थिवलैर्विधौ जललग्ने शुक्रे [illegible] लग्नेदेवगुरौसत्यां रविशनिवर्ज्यं दिने हलप्रवहणं श्रेष्ठम् । हलप्रवहणोक्त [illegible] पुन. चि. भौमरहितेषु बीजोप्तिचक्रशुद्धौ च बीजवपनं शुभम् ।

गणनागुणैक्यज्ञानप्रकारः — ऊर्ध्वाधरस्थानि तु भानि योषितां तिर्यक् क्रमेणैव तथा नराणाम् ।
प्राप्तः क्रमेणैव तयोश्चयोगे गुणैक्यबोधे गणनाविचारे ॥

उदाहरणम् — विश्वनाथपार्वत्योर्गणनाविचारे शतपदचक्रानुसारेण विश्वनाथभं रोहिणी, पार्वतीभं — उत्तराफाल्गुनीतृतीयपादं पूर्वोक्तप्रकारेण चक्रकोष्ठके २५ गुणयोगाप्तिः ॥

गणानागुणैक्यबोधकचक्रम्

कन्यर्क्षाणि

वरस्य नक्षत्राणि

	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा. १	उ.फा. ३	ह.	चि. २	चि. २
अ.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	१८	२२॥	३३॥	२७	२०॥	२६	१५॥	११	९	१३	२२॥
भ.	३४	२८	१९	१९	२२॥	१३॥	[illegible]	[illegible]	२६	२०	२३॥	२४॥	२१	१९	२६	२१॥	१९	६	१४॥
कृ. १	२७॥	२७॥	२८	१६॥	९	१९॥	[illegible]	[illegible]	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥
कृ. ३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	[illegible]	[illegible]	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥
रो.	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	[illegible]	[illegible]	२३॥	२७	२६	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९
मृ. २	२३॥	१३॥	१८॥	२७॥	३४	२८	[illegible]	[illegible]	२३॥	२६	१९	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१३
मृ. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	[illegible]	[illegible]	३१॥	१९॥	११	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४
आ.	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	[illegible]	[illegible]	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०
पु. ३	२०	२६	२२	१९॥	२३॥	२४॥	[illegible]	[illegible]	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥
पु. १	२२॥	२८	२३॥	२२	२४	२५	[illegible]	[illegible]	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०
पु.	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	२७	[illegible]	[illegible]	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	२२	११॥
श्ले.	२६	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	[illegible]	[illegible]	१५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०॥	२६	२५॥
म.	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	[illegible]	[illegible]	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥
पू.फा.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	[illegible]	[illegible]	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	८॥	११॥
उ.फा. १	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	[illegible]	[illegible]	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१४॥	१७॥
उ.फा. ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	[illegible]	[illegible]	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२५॥	२४॥	१६॥
ह.	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	[illegible]	[illegible]	२३॥	१९॥	२८॥	२३॥	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१९
चि. २	१३	६	१९	२२॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	९॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०
चि. २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२०	२१	२८
स्वा.	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	[illegible]	[illegible]	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१७॥	१८॥	[illegible]	[illegible]	२१	२२॥	२१॥	१९	१७॥	१९॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥
वि. १	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	२४॥	१९	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२३॥
अन.	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	[illegible]	[illegible]	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२७	१२	७॥
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	६	२०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥
मू.	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	[illegible]	[illegible]	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१९	९॥	१३	१३	२७	२७
पू.षा. ॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	[illegible]	[illegible]	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२५	२८॥	२७	१२	१२
पू.षा. ३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७	२६	११	११
उ.षा. १	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	[illegible]	[illegible]	२६	२३॥	२४॥	९॥	११॥	२५	२८	२८॥	२७॥	२०	२०
उ.षा. ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२॥	[illegible]	[illegible]	२२॥	२७	२८॥	१३	६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥
श्र. १॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२६	[illegible]	[illegible]	२१॥	२७	२५	१५	५॥	१९॥	२०	२४	२५	१९	२६
श्र. २॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	[illegible]	[illegible]	२३॥	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥
ध. २	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	५॥	१२॥	१६	१७॥	१६॥	२४॥
ध. २	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१९	[illegible]	[illegible]	१९	१४	५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥	२१	१८	१९
श.	१५	११	२८	३२॥	२५॥	२५	[illegible]	[illegible]	१४	७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	८॥	२६	२६
पू.भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	[illegible]	[illegible]	१७	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१६॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥
पू.भा. १	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	[illegible]	[illegible]	१८	१८	२५॥	१८॥	१६॥	२२॥	२४॥	१६॥	१८॥	१९॥	१२॥
उ.भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	९॥	५
रे.	२५	२४॥	११॥	१५॥	१७	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	१२	२२	२२	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥

	स्वा.	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये.	मू.	पू.षा. ॥	पू.षा. ३॥	उ.षा. १	उ.षा. ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श.	पू.भा. ३	पू.भा. १	उ.भा.	रे.
अ.	२६॥	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२६	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भ.	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृ. १	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१९॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	११॥
कृ. ३	१७॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	३॥	१४	११	१०	२३॥	२९॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रो.	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	११॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृ. २	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१९	११	१८	२१	२४॥	२४॥	१३	१९	२७	२९॥	२६॥	१७	२७
मृ. २	२७	१९॥	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आ.	२७	२०	१३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पु. ३	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२७	२५॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१९॥	२७॥	२८
पु. १	२७	२०	१९	२६	२०॥	८	२१	२०॥	२१॥	२६॥	२५	२७	२१	१२॥	७	१३	१७	२५	२५॥
पु.	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११॥	[illegible]	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्ले.	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	२२॥	१८॥	२०	१२
म.	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१७॥	१८॥	१२
पू.फा.	२५॥	१९॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फा. १	२६॥	१७॥	२४॥	३०॥	१९॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ.फा. ३	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२१॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	२४॥	१८	२९	२७
ह.	२६॥	१७॥	१९॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	८॥	१४॥	१९	२७	२७
चि. २	१९	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चि. २	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५	४	१३
स्वा.	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२३॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२७	२०॥	२०	१३
वि. ३	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३२॥	२६॥	२६	२२	१६॥	१३॥	५
वि. १	८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१७॥	१६॥	९॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	९॥
अन.	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१७॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२५	२५	१८	११	१०॥	२१	२१
मू.	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२९	२१॥	१५	१७॥	२५॥	२७
पू.षा. ॥	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२॥
पू.षा. ३॥	२६	१९	१८॥	१८॥	१९॥	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२२	२९॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ.षा. १	१९	१२	११॥	२५॥	१९॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ.षा. ३	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्र. १॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्र. २॥	२३	१६	१४	२८	२३	१६	२३	२३॥	१५	२५	२७	२८	३०	२०॥	१८	२३	३०॥	३१॥	२४॥
ध. २	२६	३०	२८	१४	२८	२१	९	९॥	१६॥	२५॥	२८	२६॥	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	१५॥	२२॥
ध. २	२२	२५॥	२८	१२	२६	२९॥	१७॥	१६॥	१२॥	१८॥	२१	२१	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१८॥
श.	१९	२६	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१९	९	१७॥	१६॥
पू.भा. ३	२८	२२	२१॥	२७॥	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२९॥	२४॥	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१९	२८	१८	२३	२०॥
पू.भा. १	१९॥	१४	२१	२७	११॥	१५	३१	३१॥	३०॥	२८॥	२९॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	२०॥
उ.भा.	१९॥	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४
रे.	[illegible]	५	[illegible]	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१९	२०	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२८॥	३३	२८

अथ वधूप्रवेश-द्विरागमनव्यवस्था ॥

नूतनपरिणीताया वध्वा भर्तृगृहे प्रथमोऽयं प्रवेशस्स वधूप्रवेशः यत्र च द्वितीययात्राविचारः स द्विरागमः, वर्षाभ्यन्तरं षोडशदिवसाभ्यन्तरं च यः प्रथमोऽयं प्रवेशः स नववधूप्रवेशः शुद्धो वधूप्रवेशो वा, तत्र पितृगृहाद्यात्रामुहूर्त्ताभावः विवाहकालस्यैव यात्रासमयकथनात् । तत्र केवलवधूप्रवेशमुहूर्तस्यैव विचारः यत्र च वर्षान्तरं वधूप्रवेशस्तत्र—"स्त्रीविवाहः कुले निर्गमः कथ्यते पुंविवाहः प्रवेशो वशिष्ठादिभिः । निर्गमादादितो न प्रवेशो हितस्तत्र संवत्सरान्तोऽवधिः कीर्तितः" इत्यनेन प्रथमयात्रासमयस्य निवृत्तत्वात् द्वितीययात्राकालशुद्धेरेव प्रयोजनात् यात्रावधूप्रवेशमुहूर्तद्वयविचारः स एव यात्रामुहूर्तो द्विरागमनसंज्ञकः तत्र यात्रायां शुक्रादिविचारस्यावश्यकत्वात् शुक्रसम्मुखादिविचारः तेन प्रथमवर्षे केवलं वधूप्रवेशमुहूर्तो विचार्य्यः तृतीयपंचमादौ द्विरागमनवधूप्रवेशमुहूर्तौ विचार्य्यौ, अतस्तृतीयादिविषमवर्षे यः प्रथमो वधूप्रवेशः स एव द्विरागम इति शास्त्रसिद्धान्तः। षोडशदिनाभ्यन्तरे केवलं विहितदिने प्रवेशस्तत्र यात्रासम्बन्धितिथिमासनक्षत्रादिशुद्धेः प्रयोजनाभावः केवलं वधूप्रवेशमुहूर्तश्चिन्त्य इति तु धर्मसिन्धौ स्पष्टम् । षोडशदिनान्मासान्तं विषमदिने वधूप्रवेशः मासानन्तरं वर्षान्तं विषममासे वृश्चिककुम्भमेषस्थे रवौ शुक्लपक्षे वधूप्रवेशः । तृतीयादिवर्षे यात्राविचारः तत्र यात्रासम्बन्धाच्छुक्रशुद्धिविचारः सोऽपि मेषवृश्चिककुम्भस्थे रवौ एव कार्यः । एवं तत्रलक्षतो द्वितीयागमनं तच्च द्वयं यात्रासंज्ञकम् तत्र राहुशुद्धिः । तत्र क्वचित् मासिकः क्वचिच्च त्रैमासिको राहुर्गृह्यते उभयत्र माससम्बन्धात् । एवं च राहुशुद्धावपि कुत्रचिद्वामपृष्ठगः कुत्रचिच्च गमादक्षिणे दक्षिणपृष्ठगो राहुर्गृह्यते इत्यतः देशभेदाचारादेव व्यवस्थेति । मुहूर्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशद्विरागमनप्रकरणद्वयं केनापिशास्त्रानभिज्ञेन पृथक्कृतमिति तद्ग्रंथटीकावलोकनेनैव स्फुटम् । विशेषार्थफलितसंग्रहो द्विरागमनव्यवस्था वा वधूप्रवेशद्विरागमनमीमांसा द्रष्टव्या ।

अथ च वधूप्रवेशमुहूर्त्तबोधकचक्रम् ॥

स च विवाहदिवसात् २।४।५।६।७।८।९।१०।१२।१४ दिवसेषु शुभः ॥ ऊर्ध्वम् विषममासे वर्षाभ्यन्तरे कार्य्यमिति ॥

तिथयः	१।२।३।५।७।८।१०।१२।१३।१५ एषु भद्रादिरहिते शुभः
वाराः	चं. बु. गु. शु. एषु दुष्टयोगादिरहिते शुभः ॥ केचिद् बुधेऽप्यंगीकुर्वन्ति ।
सद्भानि	उत्तरा ३. रो. अश्वि. ह. पुष्य. मृ. रे. चि. अनु. श्र. ध. मू. म. स्वा. एतद्भेषुप्रशस्तः ॥ इति ॥
शुभलग्नानि	२।३।५।६।८।९।११।१२ एतल्लग्ने शुभाः ॥
लग्नशुद्धिः	अत्र लग्नात् १।२।५।७।१०।११ एषु शुभः ३।६।११ एषु पापाश्चोत्तमाः । चतुर्थाष्टम् शुद्धौ सत्यां शुभः ॥

अत्र विशेषः केनाप्युक्तः ॥ रात्रौ विवाहभे शस्तः सन्मुहूर्त्ते स्थिरोदये । वधूप्रवेशो नैवात्र प्रतिशुक्राद् भयं विदुः ॥ किन्त्वियं व्यवस्था भर्तृगृहे प्रवेशावसरे बोध्या ॥ इति ॥ तृतीयादि विषमवर्षे शुक्रशुद्धौ वधूप्रवेशमासादौ द्विरागमः श्रेष्ठः ।

अथ नूतनवध्वाः पाककर्म मुहूर्त्तज्ञानम् ॥

मृगोत्तरात्तिष्यकृशानुशाक्रश्रुतित्रये ब्रह्मदितिदैवपौष्णे । शुभे तिथौ व्यारखौ प्रकुर्यात् नवावधूनूतनपाककर्म ॥१॥ स्थिरे लग्ने मुखे शुद्धे सप्तमे च बलान्विते । रन्ध्रखेटविहीने च नवोढा पाकमाचरेत् ॥२॥ अथ १२ चन्द्र फलम्—पाणिग्रहे स्त्री सुरतेभिषेके निषेकयात्रा व्रतबन्धने च । व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः प्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशुः ।

गणनागुणैक्यसामप्रकारः — ऊर्ध्वाधिरस्थानि तु भानि योषितां तिर्यक् क्रमेणैव तथा नराणाम् ।
प्राप्तः क्रमेणैव तयोश्चयोगे गुणैक्यबोधो गणनाविचारे ॥

उदाहरणम् — विश्वनाथपार्वत्योर्गणनाविचारे शतपदचक्रानुसारेण विश्वनाथभं रोहिणी, पार्वतीभं — उत्तराफाल्गुनीतृतीयपादं पूर्वोक्तप्रकारेण चक्रकोष्ठके २५ गुणयोगास्ति ॥

गणानागुणैक्यबोधकचक्रम्

कन्यर्क्षाणि / वरस्य नक्षत्राणि

कन्यर्क्षाणि	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	[illegible]	[illegible]	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म.	पू.फा	उ.फा १	उ.फा ३
अ.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	१८	२२॥	३३॥	२७	२०॥	२६	१५॥	११
भ.	३४	२८	२९	१९	२२॥	१३॥	[illegible]	[illegible]	२६	३०	२३॥	२४॥	२१	१९	२६	२१॥
कृ. १	२७॥	२७॥	२८	१६॥	९	१२॥	[illegible]	[illegible]	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥
कृ. ३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	[illegible]	[illegible]	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१
रो.	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	[illegible]	[illegible]	२३॥	२७	२६	१३	१२॥	२६॥	२८	२५
मृ. २	२३॥	१३॥	१८॥	२७॥	३४	२८	[illegible]	[illegible]	२३॥	२६	१९	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥
मृ. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	[illegible]	[illegible]	२३॥	१९॥	११	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥
आ.	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	[illegible]	[illegible]	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२२॥	२४॥
पु. ३	२०	२६	२२	१९॥	२३॥	२४॥	[illegible]	[illegible]	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥
पु. १	२२॥	२८	२३॥	२२	२४	२५	[illegible]	[illegible]	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७
पु.	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	[illegible]	[illegible]	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६
श्ले.	२६	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	[illegible]	[illegible]	२५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥
म.	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	[illegible]	[illegible]	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥
पू. फा.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१३॥	[illegible]	[illegible]	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४
उ. फा. १	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	[illegible]	[illegible]	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८
उ. फा. ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	[illegible]	[illegible]	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८
ह.	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	[illegible]	[illegible]	२३॥	१९॥	२८॥	२३॥	१७॥	२२॥	१७	२६
चि. २	१३	६	१९	२२॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	२४॥	२०॥	१९॥	२६॥	२३॥	९॥	१५॥	२४॥
चि. २	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥
स्वा.	२७॥	२१॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	[illegible]	[illegible]	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१७॥	१८॥	[illegible]	[illegible]	२१	२२॥	२१॥	१९	१७॥	१९॥	१८॥	१७॥
वि. १	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	१४॥	१९	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८
अनु.	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	[illegible]	[illegible]	२६॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२९॥	२६
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	[illegible]	[illegible]	६	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३
मू.	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	[illegible]	[illegible]	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१९	९॥	१३
पू. षा. ॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	[illegible]	[illegible]	२७	२३॥	२३॥	१७॥	२१	१९	२५	२८॥
पू. षा. ३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७
उ. षा. १	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	[illegible]	[illegible]	२६	२३॥	२४॥	९॥	११॥	२५	२८	२८॥
उ. षा. ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२॥	[illegible]	[illegible]	२२॥	२७	२८॥	१३	६॥	२२	२३	२६
श्र. १॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२६	[illegible]	[illegible]	२१॥	२७	२५	१५	५॥	१९॥	२०	२४
श्र. २॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	[illegible]	[illegible]	२३॥	२८	२६	२५	६॥	१८॥	२०॥	२३॥
ध. २	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	[illegible]	[illegible]	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	५॥	१२॥	१६
ध. २	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१९	[illegible]	[illegible]	१९	१४	५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥
श.	१५	११	२८	३२॥	२५॥	२५	[illegible]	[illegible]	१४	७॥	२५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥
पू. भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	[illegible]	[illegible]	१७	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१६॥	१५॥
पू. भा. १	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	[illegible]	[illegible]	१८	१८	२५॥	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥
उ. भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥
रे.	२५	२४॥	११॥	१५॥	१७	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	१२	२२	२२	२४॥

कन्यर्क्षाणि	ह.	चि. २	चि. २	स्वा.	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये.	मू.	पू.षा ॥	पू.षा ३॥	उ.षा १	उ.षा ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श.	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा	रे.
अ.	९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२६	२८	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भ.	१९	६	१४॥	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	२६॥	२८
कृ. १	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	११॥
कृ. ३	२१	२३॥	२२॥	१७॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	९॥	२४	११	१०	२३॥	२९॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रो.	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	११॥	२७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृ. २	२७	१३	१३	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१	२४॥	२४॥	१३	१९	२७	२९॥	२६॥	१७	२७
मृ. २	३४	२१	१४	२७	१९॥	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आ.	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पु. ३	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२७	२५॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१९॥	२७॥	२८
पु. १	१८	२०॥	२०	२७	२०	१९	२६	२०॥	८	२१	२०॥	२१॥	२६॥	२५	२७	२१	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥
पु.	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्ले.	२०॥	२६	२५॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१६॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	२२॥	१८॥	२०	१२
म.	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१७॥	१८॥	१२
पू. फा.	२२॥	८॥	११॥	२५॥	१९॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ. फा. १	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०॥	१९॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ. फा. ३	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२१॥	२८॥	२१॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२९	२७
ह.	२८	२७	१९	२६॥	१७॥	१९॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	८॥	१४॥	१९	२७	२७
चि. २	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चि. २	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२८	१४	१४	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५	४	१३
स्वा.	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२७	२०॥	२०	१३
वि. ३	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३२॥	२६॥	२६	२२	१६॥	१३॥	५
वि. १	१९	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१७॥	१६॥	९॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	९॥
अनु.	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	२५॥	२०॥	१७॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२५	२५	१८	११	१०॥	२१	२१
मू.	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२१	२१॥	१५	१७॥	२५॥	२७
पू. षा. ॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२॥
पू. षा. ३॥	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१९॥	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२२	२९॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ. षा. १	२७॥	२०	२०	१९	१२	११॥	२५॥	१९॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ. षा. ३	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	२९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्र. १॥	२५	१९	२६	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्र. २॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२३	१६	२३	२३॥	२५	२५	२७	२८	३०	२०॥	१८	२३	३०॥	३१॥	२४॥
ध. २	१७॥	१६॥	२४॥	२६	१०	२८	१४	२८	२१	९	९॥	१६॥	२५॥	२८	२६॥	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	१५॥	२२॥
ध. २	२१	१८	१९	२२	२५॥	२८	१२	२६	२९॥	१७॥	१६॥	१२॥	१८॥	२१	२१	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१४॥
श.	८॥	२६	२६	१९	२६	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१९	९	१७॥	१६॥
पू. भा. ३	१७॥	१८॥	१९॥	२८	२१	२१॥	२७॥	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२९॥	२४॥	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१९	२८	१८	२३	२०॥
पू. भा. १	१८॥	१९॥	१२॥	१३॥	१४	२१	२७	११॥	१५	३१	३१॥	३०॥	२८॥	२९॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उ. भा.	२६	९॥	५	१९॥	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२॥	२१॥	२९॥	२८॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३४
रे.	२६॥	२०॥	१३॥	[illegible]	५॥	२३॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१९	२०	२३॥	२३॥	१४	१६	१८	२८॥	३३	२८

अथ वधूप्रवेश-द्विरागमनव्यवस्था ॥

नूतनपरिणीताया वध्वा भर्तृगृहे प्रथमोयः प्रवेशस्स वधूप्रवेशः यत्र च द्वितीययात्राविचारः स द्विरागमः, वर्षाभ्यन्तरं षोडशदिवसाभ्यन्तरं च यः प्रथमोः प्रवेशः स नववधूप्रवेशः शुद्धो वधूप्रवेशो वा, तत्र पितृगृहाद्यात्रामुहूर्ताभावः विवाहकालस्यैव यात्रासमयकथनात् । तत्र केवलवधूप्रवेशमहूर्तस्यैव विचारः यत्र च वर्षान्तरं वधूप्रवेशस्तत्र—"स्त्रीविवाहः कुले निर्गमः कथ्यते पुंविवाहः प्रवेशो वशिष्ठादिभिः । निर्गमादादितो न प्रवेशो हितस्तत्र संवत्सरान्तोऽवधिः कीर्तित" इत्यनेन प्रथमयात्रासमयस्य निवृत्तत्वात् द्वितीययात्राकालशुद्धेरेव प्रयोजनात् यात्रावधूप्रवेशमुहूर्तद्वयविचारः स एव यात्रामुहूर्तो द्विरागमनसंज्ञकः तत्र यात्रायां शुक्रादिविचारस्यावश्यकत्वात् शुक्रसम्मुखादिविचारः तेन प्रथमवर्षे केवलं वधूप्रवेशमुहूर्तो विचार्यः तृतीयपंचमादौ द्विरागमनवधूप्रवेशमुहूर्तौ विचार्यौ, अतस्तृतीयादिविषमवर्षे यः प्रथमो वधूप्रवेशः स एव द्विरागम इति शास्त्रसिद्धान्तः । षोडशदिनाभ्यन्तरे केवलं विहितदिने प्रवेशस्तत्र यात्रासम्बन्धितिथिमासनक्षत्रादिशुद्धेः प्रयोजनाभावः केवलं वधूप्रवेशमुहूर्तश्चिन्त्य इति तु धर्मसिन्धौ स्पष्टम् । षोडशदिनान्मासान्तं विषमदिने वधूप्रवेशः मासानन्तरं वर्षान्तं विषममासे वृश्चिककुम्भमेषस्थे रवौ शुक्लपक्षे वधूप्रवेशः । तृतीयादिवर्षे यात्राविचारः तत्र यात्रासम्बन्धाच्छुक्रशुद्धिविचारः सोऽपि मेषवृश्चिककुम्भस्थे रवौ एव कार्यः । एवं यत्रलक्षतो द्वितीयागमनं तच्च द्वयंग्यात्रासंज्ञकम् तत्र राहुशुद्धिः । तत्र क्वचित् मासिकः क्वचिच्च त्रैमासिको राहुर्गृह्यते उभयत्र माससम्बन्धात् । एवं च राहुशुद्धावपि कुत्रचिद्वामपृष्ठगः कुत्रचिच्च गंगादक्षिणे दक्षिणपृष्ठगो राहुर्गृह्यते इत्यतः देशभेदाचारादेव व्यवस्थेति । मुहूर्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशद्विरागमनप्रकरणद्वयं केनापिशास्त्रानभिज्ञेन पृथक्कृतमिति तद्ग्रंथटीकावलोकनेनैव स्फुटम् । विशेषार्थफलितसंग्रहो द्विरागमनव्यवस्था वा वधूप्रवेशद्विरागमनमीमांसा द्रष्टव्या ।

अथ च वधूप्रवेशमुहूर्त्तबोधकचक्रम् ॥

स च विवाहदिवसात् २।४।५।६।७।८।९।१०।१२।१४ दिवसेषु शुभः ॥ ऊर्ध्वम् विषममासे वर्षाभ्यन्तरे कार्य्यमिति ॥

तिथयः	१।२।३।५।७।८।१०।१२।१३।१५ एषु भद्रादिरहिते शुभः
वाराः	चं. बृ. शु. श. एषु दुष्टयोगादिरहिते शुभः ॥ केचिद् बुधेऽप्यंगीकुर्वन्ति ।
सद्भानि	उत्तरा ३. रो. अश्वि. ह. पुष्य. मृ. रे. चि. अनु. श्र. ध. मू. म. स्वा. एतद्भेषु प्रशस्तः ॥ इति ॥
शुभलग्नानि	२।३।५।६।८।९।११।१२ एतल्लग्ने शुभः ॥
लग्नशुद्धिः	अत्र लग्नात् १।४।५।७।१०।११ एषु शुभः ३।६।११ एषु पापाश्चोत्तमाः । चतुर्थाष्टम शुद्धौ सत्यां शुभः ॥

अत्र विशेषः केनाप्युक्तः ॥ रात्रौ विवाहभे शस्तः सन्मुहूर्ते स्थिरोदये । वधूप्रवेशो नैवात्र प्रतिशुक्राद् भयं विदुः ॥ किन्त्वियं व्यवस्था भर्तृगृहे प्रवेशावसरे बोध्या ॥ इति ॥ तृतीयादि विषमवर्षे शुक्रशुद्धौ वधूप्रवेशमासादौ द्विरागमः श्रेष्ठः ।

अथ नूतनवध्वाः पाककर्म मुहूर्त्तज्ञानम् ॥

मृगोत्तरासिष्यकृशानुशाक्रश्रुतित्रये वह्निद्विदैवपौष्णे । शुभे तिथौ व्याररवौ प्रकुर्यात् नवावधूनूतनपाककर्म ॥१॥ स्थिरे लग्ने सुले शुद्धे सप्तमे च बलान्विते । रन्ध्रखेटविहीने च नवोढा पाकमाचरेत् ॥३॥ अथ १२ चन्द्र फलम्—पाणिग्रहे स्त्री सुरतेभिषेके निषेकयात्रा व्रतबन्धने च । व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः प्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशुः ।

॥ अक्षांशदेशान्तरसारिणी ॥

काशी हिन्दूविश्वविद्यालयतः पूर्वस्थ नगरनामानि	अक्षांशाः	काशी वि. तो देशान्तरघटी घ. प. वि.	होराश्च घं. मि. से.
अनाम ...	१७।०	३।५०।०	१।३२।०
अलीगंज (हथुआ) ...	२६।१२	०।१४।०	०।५।३६
आरा ...	२५।३०	०।१७।१०	०।६।५२
अमरपुर (बर्मा) ...	२१।५५	२।११।१०	०।५२।२८
अमावाँ राज्य ...	२५।९	०।२८।२०	०।११।२०
आजमगढ़ ...	२६।०	०।२।३०	०।१।०
आसाम ...	२६।३०	१।४०।०	०।४०।०
उदेपुर (सरगुजा) ...	२२।३०	०।०।५०	०।०।२०
उड़ीसा ...	२१।०	०।२९।४०	०।११।५२
कटक ...	२०।३०	०।३०।०	०।१२।०
कलकत्ता ...	२२।३०	०।५५।०	०।२२।०
कुमिल्ला ...	२३।१२	१।२३।०	०।३३।१२
कूचबिहार ...	२६।२०	१।४।५९	०।२५।५६
कुदरा (जहानाबाद) ...	२५।५।६	०।६।१०	०।२।२८
गया ...	२४।४५	०।२०।०	०।८।०
गाजीपुर ...	२५।३५	०।४।०	०।१।३६
ग्वालपाड़ा ...	२६।९	१।१६।१०	०।३०।२८
गिद्धौर ...	२४।११	०।३३।०	०।१३।१२
गोरखपुर ...	२६।५०	०।२।२०	०।०।५६
छपरा ...	२५।४५	०।१७।०	०।६।४८
जगन्नाथपुरी ...	१९।४५	०।३०।०	०।१२।०
जापान ...	४०।०	८।४०।०	३।२८।०
आवा ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
टेकारी ...	२४।५८	०।१७।३०	०।७।०
द. जिलिंग ...	२७।५	०।५२।४०	०।२१।४
डुमरांव ...	२५।३२	०।१२।०	०।४।४८
डुमरिया (स्टेटचंपारन) ...	२७।८	०।१५।६	०।६।२
ढाका ...	२३।४०	१।१५।१८	०।३०।७
दरभंगा ...	२६।६	०।३०।०	०।१२।०
दिनाजपुर ...	२५।४०	०।५७।३०	०।२३।०
धवलगिरि ...	२९।०	०।२०।०	०।८।०
नसीराबाद ...	२४।४०	१।२२।५०	०।३३।८
नदिया ...	२३।२४	०।५९।२०	०।२३।४४
नाटोर ...	२४।२७	१।०।०	०।२४।०
नेपाल ...	२७।०	०।९।४०	०।३।५२
पंचगछिया ...	२५।५५	०।३५।४०	०।१४।१६
पटना ...	२५।३२	०।२३।०	०।९।१२
पटना (उड़ीसा) ...	२०।२४	०।२।१०	०।०।५२
पलासी ...	२५।३२	०।४९।४०	०।१९।५२
पुर्निया ...	२५।४६	०।४५।०	०।१८।०
फीजी (टापू) ...	१६।०द	१६।१०।१	६।२८।०
वाराणसी (रामनगरकिला) ...	२५।१६	०।०।०	०।०।०
वाराणसी (ज्ञानवापी) ...	२५।१८/२८	०।०।०	०।०।०
बनारस (विश्वविद्यालय) ...	२५।१५/०७	०।०।०	०।०।०
वर्दवान ...	२३।१७	०।४८।०	०।१९।१२
बलिया ...	२५।३६	०।१२।०	०।४।४८
बक्सर ...	२५।३०	०।११।०	०।४।२४
बगहा ...	२६।४२	०।१४।५०	०।५।५६
बालेश्वर ...	२१।३०	०।३९।४०	०।१५।५२
बिहार ...	२५।१५	०।२५।०	०।१०।०
बेतिया ...	२६।३८	०।१५।१०	०।६।४
वैद्यनाथ ...	२४।३०	०।३७।१०	०।१४।५२
बैजनाथपुर (स्टेट) ...	२४।४६	०।२४।१०	०।९।४०
भभुआ ...	२५।५	०।५।५०	०।२।२०
भागलपुर ...	२५।१५	०।४०।०	०।१६।०
भूटान ...	२७।०	१।२०।०	०।३२।०
मकसूदाबाद ...	२४।११	०।५३।०	०।२१।१२
मानेचौक ...	२६।७	०।२७।३०	०।११।०
मालदह ...	२५।२	०।५१।२०	०।२०।२२
मुंगेर ...	२५।२३	०।३५।०	०।१४।०
मुजफ्फरपुर ...	२६।१२	०।२५।०	०।१०।०
मोतिहारी ...	२६।४०	०।१६।४०	०।६।४०
मेदिनीपुर ...	२२।२९	०।४४।०	०।१७।३६
रंगून ...	१६।५५	२।१४।०	०।५३।३६
रंगपुर ...	२५।४७	१।५।०	०।२६।०
राँची ...	२३।१२	०।२३।४५	०।९।३०
रानीगंज ...	२३।४१	०।४१।०	०।१६।२४
राजमहल ...	२५।२	०।४८।३०	०।१९।२४
लक्खीसराय ...	२५।१०	०।३६।१०	०।२४।२८
लासा (तिब्बत) ...	२९।३५	१।२९।४०	०।३५।५२
लोहरदग्गा ...	२३।२७	०।१७।३०	०।६।७
विजयानगर ...	१८।७	०।५।०	०।२।०
सहसरांव ...	२५।०	०।१५।०	०।६।०
सुमात्रा ...	०।०	२।५०।०	१।८।०
सेहड़ा ...	२५।२८	०।१७।३०	०।७।०
सिंगापुर ...	२।०	३।२०।०	१।२०।०
सिलचर (कछार) ...	२५।३१	१।४४।४०	०।४१।५२

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयतः पश्चिमस्थ नगरनामानि	अक्षांशाः	काशी वि. तो देशान्तरघटी घ. प. वि.	होराश्च घं. मि. से.
अयोध्या ...	२६।४८	०।७।३०	०।३।०
अजमेर ...	२६।१५	१।२३।०	०।३३।१२
[illegible] ...	३३।५३	१।४७।१०	०।४२।५२
[illegible] ...	३३।४	२।७।२०	०।५०।५६
[illegible]हर ...	२८।२१	०।४६।४०	०।१८।४०
अमरावती ...	२०।५६	०।५२।१०	०।२०।५२
[illegible] ...	२६।७	०।१२।०	०।४।४८
[illegible]सर ...	३१।३७	१।२२।०	०।३२।४८
अबोली ...	२५।०	१।३।०	०।३६।०
अलवर ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अल्मोड़ा ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अलीगढ़ ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अहमदाबाद ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अहमदनगर ...	२०।६	१।२०।५०	०।३२।२०
आगरा ...	२७।०	०।४७।३०	०।१९।०
आबू ...	२४।२५	१।४२।३०	०।१६।४०
इन्दौर ...	२२।४५	१।१०।०	०।२८।०
इटावा ...	२६।५२	०।४०।३०	०।१६।१२
उदयपुर ...	२४।३६	१।३२।२०	०।३६।५६
उज्जैन ...	२३।९	१।९।०	०।२७।३६
उटकमंड ...	११।२५	१।३।२०	०।२५।२०
कच्छ (माण्डवी) ...	२२।५०	२।१८।०	०।५५।१२
कपूरथला ...	३१।२३	१।१६।१०	०।३०।२४
कलचर ...	६।३७	०।२९।३०	०।११।४८
अर्नील ...	२९।४१	३।१०।४०	०।२४।१६
करांची ...	२४।५२	२।३८।४०	१।३।२८
काल्पी ...	२६।८	०।३।२०	०।१।२८
काकरौली ...	२५।०	१।३।०	०।३६।०
कर्नाटक ...	१२।०	०।४७।०	०।१६।०
काश्मीर ...	३४।०	०।५६।०	०।२३।०
कांची ...	१२।९	०।५२।०	०।२०।४८
कानपुर ...	२६।३०	०।२७।३०	०।११।०
किशनगढ़ (राजपू०) ...	२३।१५	१।८।०	०।२७।१२
किशनगढ़ ...	२६।३५	१।२०।४०	०।३२।१६
कुरुक्षेत्र ...	३०।०	१।१।०	०।२४।३६

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयतः पश्चिमस्थ नगरनामानि	अक्षांशाः	काशी वि. तो देशान्तर घटी घ. प. वि.	होराश्च घं. मि. से.
कोटा ...	२५।२५	१।११।५०	०।२८।४४
कोचीन ...	९।५८	१।८।१०	०।२७।१६
कोल्हापुर ...	१६।४५	१।२८।०	०।३५।१२
कोलम्बो ...	६।५६	०।३०।३०	०।१२।१२
खैरपुर ...	२७।२५	०।२।५०	०।१।८
गढ़वाल ...	३०।०	०।४३।४०	०।१७।२८
ग्वालियर ...	२६।१५	०।४९।२०	०।१९।४४
गोदावरी ...	१६।३०	०।७।३०	०।३।०
गोलकुण्डा ...	१७।३३	०।५।२०	०।२।८
चम्बा ...	३२।३४	१।६।०	०।२६।२४
चतुरपुर (छतरपुर) ...	२४।५२	०।३४।३०	०।१३।४८
चिनाव ...	३१।०	२।५।०	०।५०।०
चित्तौड़ ...	२४।५०	१।२५।२०	०।३४।८
चित्रकूट ...	२५।१२	०।२१।०	०।८।२४
चुनारगढ़ ...	२५।१०	०।२।०	०।०।४८
जफराबाद ...	२०।४०	१।८।४०	०।२७।२८
जशलमेर ...	२६।४६	१।५९।०	०।४७।३६
जयपुर ...	२६।५०	१।१३।४०	०।२९।२८
जयपुर (झांसी) ...	१८।५७	०।३।४०	०।१।२८
जबलपुर ...	२३।१४	०।३०।२०	०।१२।८
जलालपुर ...	३२।४०	१।३७।५०	०।३९।८
[illegible] ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
जम्बू ...	३२।४४	१।२२।५०	०।३३।४४
जामनगर ...	२२।२७	२।१०।०	०।५२।०
जूनागढ़ ...	२१।३०	२।४।०	०।४९।३६
जोधपुर ...	२६।२०	१।३९।२०	०।३९।४४
जौनपुर ...	२५।४२	०।३।०	०।१।१२
झलरापाटन ...	२४।३२	१।८।०	०।२७।१२
झांसी ...	२५।३०	०।४५।२०	०।१८।८
टाँक ...	२६।११	१।१२।३०	०।२९।०
तंजोर ...	१०।४८	०।३१।०	०।१२।२४
त्रिचनापली ...	१०।५०	०।४३।१०	०।१७।१६
त्रिवेन्द्रम् ...	८।२९	१।१।१०	०।२४।२८
दिलावर ...	२८।४२	१।५५।२०	०।४६।८
देहरादून ...	३०।२०	०।४९।१०	०।१९।४०
द्वारका ...	२२।१४	२।२०।०	०।५६।०
देवास ...	२२।५८	१।९।०	०।२७।३६
देहली ...	२८।३०	०।५७।३०	०।२३।०
द्राव ...	३५।३५	२।३१।२०	१।०।३२
धारा ...	२२।३४	१।१६।३०	०।३०।३६
धवलपुर ...	२६।४२	०।५१।३०	०।२०।३६
नारनोल ...	२८।५	१।८।४०	०।२७।२८
नाथद्वार ...	२४।५२	१।३०।०	०।३६।०
नर्मदा ...	२१।५०	१।४०।२०	०।४०।८
नाभा ...	३०।२३	१।८।०	०।२७।१२
नागौर ...	२७।१५	१।३३।४०	०।३७।२८
नागपुर (सी. पी.) ...	२१।५०	०।३९।१०	०।१५।४०
नागपुर ...	२०।०	०।२०।२०	०।८।८
नासिक ...	१९।५८	१।३२।०	०।३६।४८
नीमच ...	२४।२७	१।२१।२०	०।३२।३२
नैनीताल ...	२९।२३	०।३५।०	०।१४।०
पटियाला ...	३०।२०	१।५।०	०।२६।०
पण्डरपुर ...	१७।४०	१।१६।१०	०।३०।२८
पंचनद ...	२९।०	२।२।०	०।४८।४८
प्रतापगढ़ (राजपूता.) ...	२४।२	१।२२।२०	०।३२।५६
प्रयाग ...	२५।२२	०।११।४०	०।४।४०
पालनपुर ...	२४।१२	१।४२।५०	०।४१।८
पानीपत ...	२९।१०	१।१९।३०	०।३१।४८
पीलीभीत ...	२८।४०	०।३२।०	०।१२।४८
पूना ...	१८।३०	१।३०।२०	०।३६।८
पोरबन्दर ...	२१।५०	२।१३।२०	०।५३।२४
पेशावर ...	३४।२	१।५५।०	०।४६।०
पुष्कर ...	२६।२८	१।२५।०	०।३४।०
पाण्डीचेरी ...	११।५५	०।३२।१०	०।१२।५२
फरुक्खाबाद ...	२७।३०	०।३७।०	०।१४।४८
फरदकोट ...	३०।४०	१।२२।३०	०।३३।०
फतेहपुर ...	२६।०	०।२२।५०	०।९।८
फिरोजाबाद ...	२७।१०	०।४६।०	०।१८।२४
फिरोजपुर ...	३०।५६	१।२४।०	०।३३।३६
फैजाबाद ...	२६।९	०।९।०	०।३।३६
बरेली ...	२८।२२	०।३५।४०	०।१४।१६
बड़ौदा ...	२२।१०	१।३५।०	०।३८।०
बम्बई ...	१८।५५	१।४१।४०	०।४०।४०
बलरामपुर ...	२७।२७	०।८।०	०।३।१२
बहराइच ...	२७।३४	०।१५।०	०।६।०
बरोच (भड़ोच) ...	२१।४५	१।४०।०	०।४०।०
बंगलोर ...	१२।५८	०।५३।३०	०।२१।२४
बांदा ...	२५।१८	०।२७।३०	०।११।०
बिलासपुर (सी. पी.) ...	२२।२	०।८।०	०।३।१२
बीकानेर ...	२८।२	१।३५।०	०।३८।०
बिलासपुर (शिमला) ...	३१।१०	१।३।२०	०।२५।२०
बुरहानपुर ...	२१।२०	०।४७।०	०।१८।४८
बुन्दी ...	२५।२५	१।१२।५०	०।२९।८
बांसवाडा ...	२३।३०	१।२६।०	०।३४।२४
भरपुर ...	२७।१३	०।५५।०	०।२२।०
भावनगर ...	२१।४६	१।४८।०	०।४३।१२
भूपाल ...	२३।१८	०।५५।०	०।२२।०
मन्सूरी ...	३०।२७	०।५०।०	०।२०।०
मद्रास ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मथुरा ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मंडी ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मनमाड ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मथुरा ...	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मानिकपुर ...	२५।४०	०।११।५०	०।४।४४
मालवा ...	२३।३०	०।५५।२०	०।२२।८
मिर्जापुर ...	२५।९	०।४।२०	०।१।४०
मुल्तान ...	३०।१२	१।५५।१०	०।४६।१०
मेरठ ...	२९।१३	०।५२।३८	०।२१।३
मैसूर ...	१२।१८	१।३।०	०।२५।१२
रतलाम ...	२३।२१	१।२।०	०।२६।०
रत्नगिरि ...	१७।८	१।३७।०	०।३८।४८
राजकोट ...	२२।१९	२।१३।०	०।५४।०
रामेश्वर ...	९।१८	०।३७।३०	०।१५।०
रायपुर ...	२१।१५	०।१३।०	०।५।१२
रायबरेली ...	२६।१५	०।१९।२०	०।७।४४
रोहतक ...	२८।५६	१।५।२०	०।२६।८
रावलपिण्डी ...	३३।३७	१।४०।०	०।४०।०
रीवाँ ...	२४।३१	०।१७।३०	०।७।०
राज्यसोहावल ...	२४।३५	०।२२।३०	०।९।०
लखनऊ ...	२६।५५	०।२।०	०।८।०
लन्दन ...	५१।३१	१३।५७।८	५।३।१३
लाहौर ...	३१।३५	१।२६।०	०।३४।२४
लुधियाना ...	३०।५५	१।१३।०	०।२७।४८

नगरनामानि	अक्षांशाः	देशान्तरघटी	होराश्च
बटेश्वर ...	२६।४८	०।४६।०	०।१८।२४
बजीराबाद ...		१।३०।२०	०।३६।१८
बरधा ...	२०।४५	०।४५।१०	०।१८।४
शाहजहाँपुर ...	२७।५२	०।३०।४०	०।१२।४६
शिवपुर ...	२७।५७	२।२५।०	०।५८।०
शिमला ...	३१।६	२।५८।१०	०।२३।१६
श्रीनगर ...	१२।२६	१।३।०	०।२५।१२
सहारनपुर ...	२९।५८	०।५६।१०	०।२२।२८
सतारा ...	१७।५२	१।३०।०	०।३६।०
सपाट ...	३०।५८	१।०।०	०।२४।०
सागर ...	२३।५०	०।४३।०	०।१७।१२
सीतापुर ...	२७।३०	०।२४।१०	०।९।४०
सिरोज ...	२४।६	०।५३।०	०।२१।१२
सिहोरा ...	२३।१२	१।०।०	०।२४।०
सूरत ...	२१।१२	१।४१।०	०।४०।२४
सोलापुर ...	१७।४०	१।११।०	०।२८।२४
हाँसी ...	२२।२१	०।५८।०	०।२३।१२
हरिद्वार ...	२९।५८	०।४८।०	०।१९।१२
हैदराबाद दक्षिण ...	१७।१५	०।४९।३०	०।१९।४८
हैदराबाद ...	२५।१५	२।२२।३०	०।५६।०

अक्षांशतः पलभाज्ञानम्—गतांशाग्रिमांशसम्बन्धिपलभयोरन्तरमिष्टकलागुणितं षष्टिभक्तं लब्धं यथास्थाने गतांशसम्बन्धि पलभायां युतं इष्टपलभा भवति। यथा अक्षांशाः ३५।२५ पञ्चत्रिंशदंशसम्बन्धि पलभा ८।२४।७ षट्त्रिंशदंशसम्बन्धि पलभा ८।४३।५ अनयोरन्तरं १८।५८ इष्टकलामानतः २५ गुणितं ४७४।१० षष्टिभक्तं व्यङ्गुलात्मकं लब्धं ७।५४।१० गतांशसम्बन्धिपलभायां ८।२४।७ युतं इष्टपलभा ८।३२।१।

अक्षांशतः पलभाज्ञानसारणी

अक्षांशाः	पलभा
१	०।१२।३४
२	०।२५।९
३	०।३७।४४
४	०।५०।२१
५	१।३।०
६	१।१५।४४
७	१।२८।२३
८	१।४१।१०
९	१।५४।०
१०	२।६।५४
११	२।१९।५५
१२	२।३३।०
१३	[illegible]
१४	[illegible]
१५	३।१२।५४
१६	३।२६।२४
१७	३।४०।१५
१८	३।५४।५६
१९	४।७।५५
२०	४।२२।११
२१	४।३६।२२
२२	४।५०।५२
२३	५।५।३८
२४	५।२०।३१
२५	५।३५।४२
२६	५।५१।७
२७	६।६।५०
२८	६।२२।४८
२९	६।३९।४
३०	६।५५।४१
३१	७।१२।३६
३२	७।२९।५३
३३	७।४७।३१
३४	८।५।३८
३५	८।२४।७
३६	८।४३।५
३७	९।२।३५
३८	९।२२।३०
३९	९।४३।१
४०	१०।४।९
४१	१०।२५।५०
४२	१०।४८।१८
४३	११।११।२८
४४	११।३५।२४
४५	१२।०।०
४६	१२।२५।३७
४७	१२।५२।५०
४८	१३।१९।३८
४९	१३।४८।१८
५०	१४।१८।३
५१	१४।४९।१८
५२	१५।२१।३२
५३	१५।५५।३
५४	[illegible]

अत्र चरसरण्यां लिखिताङ्का मिनट सेकेन्डरूपा अक्षांश दैनिकक्रान्त्यंशवशतः फलमत्र [illegible] षड्होरायां युतं तदुत्तरक्रान्तौ सूर्यास्तसमयो मध्याह्नात् तदेव होरात्मकं दिनार्द्धं च दक्षिणक्रान्तौ तदेव सूर्योदय द्वादशहोराभ्यो विशोध्य तदा दिनार्द्धसूर्यास्तहोरा च। दिनार्द्ध होरात्मकं पञ्चगुणं दिनमानं घटयादिकं भवति। यथा अक्षांशाः ३२।० क्रान्त्यंशाः उत्तराः १८।० चरम् ४६।५२ होरापट्के [illegible] सूर्यास्तघंटा ५।४६।५२ दिनमानम् ३३।५४।२० रात्रिमानम् २६।५।४० होरादिकं दिनार्द्धं द्वादशमध्ये शोध्यं सूर्योदयघंटा ५।१३।८ एवं सर्वत्र। दक्षिणक्रान्तौ विपरीतम्।

चरसारिणी

क्रान्त्यंशाः

अक्षांशाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	० ४	० ८	० १३	० १७	० २१	० २५	० ३०	० ३४	० ३८	० ४२	० ४६	० ५१	० ५५	१ ०	१ ४	१ ९	१ १३	१ १८	१ २२	१ २७	१ ३२	१ ३७	१ ४२	१ ४७
२	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ८	१ १६	१ २४	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ ८	२ १७	२ २६	२ ३६	२ ४५	२ ५५	३ ४	३ १४	३ २४	३ ३४
३	० १३	० २५	० ३८	० ५०	१ ३	१ १६	१ २८	१ ४१	१ ५४	२ ७	२ २०	२ ३३	२ ४६	३ ०	३ १३	३ २६	३ ४०	३ ५४	४ ८	४ २२	४ ३७	४ ५१	५ ६	५ २०
४	० १७	० ३४	० ५०	१ ७	१ २४	१ ४१	१ ५८	२ १५	२ ३२	२ ५०	३ ७	३ २४	३ ४२	४ ०	४ १८	४ ३६	४ ५४	५ १२	५ ३१	५ ५०	६ ९	६ २८	६ ४८	७ ८
५	० २१	० ४२	१ ३	१ २४	१ ४५	२ ६	२ २८	२ ४९	३ १०	३ ३२	३ ५४	४ १६	४ ३८	५ ०	५ २२	५ ४४	६ ७	६ ३०	६ ५४	७ १८	७ ४२	८ ६	८ ३१	८ ५६
६	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ६	२ ३२	२ ५८	३ २३	३ ४९	४ १४	४ ४१	५ ७	५ ३४	६ ०	६ २७	६ ५४	७ २२	७ ५०	८ १८	८ ४६	९ १५	९ ४४	१० १४	१० ४[illegible]
७	० २९	० ५७	१ २८	१ ५८	२ २८	२ ५८	३ २७	३ ५७	४ २७	४ ५८	५ २८	५ ५९	६ ३०	७ १	७ ३२	८ ४	८ ३६	९ ९	९ ४२	१० १५	१० ४८	११ २१	११ ५३	१२ २६
८	० ३४	१ ८	१ ४१	२ १५	[illegible] ४९	३ २३	३ [illegible]	४ [illegible]	५ ६	५ ४१	६ १६	६ ५१	७ २६	८ २	८ ३८	९ १४	९ ५१	१० २८	११ ६	११ ४४	१२ २२	१३ १	१३ ४१	१४ २१
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	० ४२	१ २४	२ ७	२ ५०	३ ३१	४ १४	४ ५८	५ ४१	[illegible] २४	[illegible] ८	[illegible] ५१	[illegible] ३६	[illegible] २०	[illegible] ५	[illegible] ५०	[illegible] ३६	[illegible] २२	[illegible] ८	[illegible] ५५	[illegible] ४३	[illegible] ३२	[illegible] २०	[illegible] १०	[illegible] ०
११	० ४६	१ ३३	२ २०	३ ७	३ ५४	४ ४१	५ २८	६ १६	७ ३	७ ५८	८ ४०	९ २८	१० १७	११ ७	११ ५६	१२ ४७	१३ ३८	१४ २९	१५ २१	१६ १४	१७ ७	१८ १	१८ ५६	१९ ५२
१२	० ५१	१ ४२	२ ३३	३ २४	४ १६	५ ७	५ ५९	६ ५१	७ ४३	८ ३६	९ २८	१० २१	११ १५	१२ ९	१३ ४	१३ ५८	१४ ५४	१५ ५०	१६ ४६	१७ ४५	१८ ४३	१९ ४२	२० ४२	२१ ४३
१३	० ५५	१ ५१	२ ४६	३ ४२	४ ३८	५ ३४	६ ३०	७ २७	८ २३	९ २०	१० १७	११ १५	१२ १३	१३ १२	१४ ११	१५ ११	१६ १२	१७ १४	१८ १७	१९ २०	२० २४	२१ ३०	२२ ३७	२३ ४६
१४	१ ०	२ ०	३ ०	४ ०	५ ०	६ ०	७ १	८ २	९ ३	१० ५	११ ७	१२ ९	१३ १२	१४ १५	१५ १९	१६ २३	१७ २९	१८ ३५	१९ ४१	२० ४८	२१ ५७	२३ ८	२४ १८	२५ ३०
१५	१ ४	२ ८	३ १३	४ १८	५ २२	५ २७	७ ३२	८ ३८	९ ४४	१० ५०	११ ५६	१३ ४	१४ ११	१५ १९	१६ २८	१७ ३८	१८ ४७	१९ ५८	२१ १०	२२ २२	२३ ३६	२४ ५२	२६ ७	२७ २४
१६	१ ९	२ १८	३ २६	४ ३६	५ ४५	६ ५४	८ ४	९ १४	१० २५	११ ३६	१२ ४७	१३ ५९	१५ ११	१६ २४	१७ ३८	१८ ५२	२० ७	२१ २३	२२ ४०	२३ ५८	२५ १६	२६ ३७	२७ ५८	२९ २०
१७	१ १३	२ २७	३ ४०	४ ५४	६ ८	७ २२	८ ३६	९ ५१	११ ६	१२ २२	१३ ३८	१४ ५४	१६ १२	१७ २९	१८ ४८	२० ७	२१ २७	२२ ४८	२४ ११	२५ ३४	२६ ५७	२८ २३	२९ ५०	३१ १९
१८	१ १८	२ ३६	३ ५४	५ १२	६ ३१	७ ५०	९ ९	१० २८	११ ४८	१३ ८	१४ ३०	१५ ५०	१७ १२	१८ ३५	१९ ५९	२१ २३	२२ ४८	२४ १४	२५ ४२	२७ ८	२८ ३७	३० १०	३१ ४२	३३ २०
१९	१ २३	२ ४६	४ ८	५ ३१	६ ५४	८ १८	९ ४२	११ ६	१२ ३०	१३ ५५	१५ २१	१६ ४६	१८ १४	१९ ४१	२१ १०	२२ ३९	२४ ९	२५ ४१	२७ १४	२८ ४८	३० २४	३१ ५८	३३ ३७	३५ १६
२०	१ २७	२ ५५	४ २२	५ ५०	७ १८	८ ४६	१० १५	११ ४४	१३ १३	१४ ४३	१६ १४	१७ ४५	१९ १८	२० ५०	२२ २३	२३ ५५	२५ ३०	२७ ८	२८ ४७	३० २८	३२ ८	३३ ५०	३५ ३३	३७ १८
२१	१ ३२	३ ४	४ ३७	६ ९	७ ४२	९ १५	१० ४८	१२ २२	१३ ५८	१५ ३२	१७ ७	१८ ४३	२० २०	२१ ५८	२३ ३६	२५ १६	२६ ५६	२८ ३७	३० १९	३२ २	३३ ५०	३५ ४१	३७ ३०	३९ २२
२२	१ ३७	३ १४	४ ५१	६ २८	८ ६	९ ४४	११ २३	१३ १	१४ ४०	१६ २०	१८ १	१९ ४२	२१ २४	२३ ८	२४ ५२	२६ ३७	२८ २३	३० १०	३१ ५८	३३ ५०	३५ ४१	३७ ३५	३९ ३०	४१ २७
२३	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३१	१० १४	११ ५७	१३ ४१	१५ २५	१७ १०	१८ ५६	२० ४२	२२ ३०	२४ १८	२६ ७	२७ ५८	२९ ४९	३१ ४२	३३ ३७	३५ ३३	३७ ३०	३९ २७	४१ ३५	४३ ३५
२४	१ ४७	३ ३४	५ २१	७ ८	८ ५६	१० ४४	१२ ३२	१४ २१	१६ १०	१८ ०	१९ ५१	२१ ४३	२३ ३६	२५ ३०	२७ २४	२९ २०	३१ १९	३३ २०	३५ २१	३७ २३	३९ २५	४१ २९	४३ ३४	४५ ४०
२५	१ ५२	३ ४४	५ ३६	७ २८	९ २१	११ १४	१३ ८	१४ २	१६ ५६	१८ ५२	२० ४८	२२ ४५	२४ ४३	२६ ४२	२८ ४३	३० ४४	३२ ४७	३४ ५१	३६ ५८	३९ ५	४१ १५	४३ २६	४५ ४०	४७ ५३
२६	१ ५७	३ ५४	५ ५२	७ ४९	९ ४७	११ ४५	१३ ४३	१५ ४३	१७ ४३	१९ ४४	२१ ४६	२३ ४८	२५ ५२	२७ ५६	३० २	३२ ९	३४ १८	३६ २८	३८ ४०	४० ५४	४३ १०	४५ २८	४७ ४८	५० १०
२७	२ २	४ ५	६ ७	८ १०	१० १३	१२ १७	१४ २१	१६ २६	१८ ३१	२० ३७	२२ ४४	२४ ५२	२७ १	२९ १२	३१ २३	३३ ३६	३५ ५०	३८ ७	४० २५	४२ ४५	४५ ७	४७ ३२	४९ ५८	५२ २७
२८	२ ७	४ १५	६ २३	८ ३१	१० ४०	१२ ४९	१४ ५८	१७ ८	१९ १९	२१ ३१	२३ ४४	२५ ५७	२८ १२	३० २८	३२ ४६	३५ ४	३७ २५	३९ ४९	४२ १२	४४ ३६	४७ २	४९ ३०	५२ ४	५४ ३८
२९	२ १३	४ २६	६ ४०	८ ५३	११ ७	१३ २२	१५ ३६	१७ ५२	२० ९	२२ २६	२४ ४४	२७ ४	२९ २४	३१ ४३	३४ १०	३६ ३५	३९ १	४१ ३०	४४ ०	४६ ३२	४९ ८	५१ ४६	५४ २६	५७ ९
३०	२ १८	४ ३७	६ ५६	९ १५	११ ३४	१३ ५५	१६ १६	१८ ३७	२० ५९	२३ २२	२५ ४६	२८ १२	३० ३८	३३ ५	३५ ३४	३८ ३	४० ४०	४३ १५	४५ ५२	४८ ३१	५१ १३	५३ ५८	५६ ४६	५९ ३५
३१	२ २४	४ ४८	७ १३	९ ३८	१२ ३	१४ २९	१६ ५६	१९ २२	२१ ५०	२४ २०	२६ ५०	२९ २१	३१ ५४	३४ २८	३७ ४	३९ ४१	४२ २०	४५ २	४७ ४६	५० ३२	५३ २०	५६ १२	५९ ६	६२ २
३२	२ ३०	५ ०	७ ३०	१० १	१२ ३२	१५ ४	१७ ३६	२० ९	२२ ४३	२५ १८	२७ ५४	३० ३२	३३ ११	३५ ५२	३८ ३३	४१ १७	४४ ३	४६ ५२	४९ ४२	५२ ३५	५५ ३१	५८ ३०	६१ ३३	६४ ३७
३३	२ ३६	५ १२	७ ४८	१० २४	१३ १	१५ ३९	१८ १८	२० ५७	२३ ३८	२६ १८	२९ ०	३१ ४४	३४ ३०	३७ १६	४० ५	४२ ५६	४५ ४९	४८ ४४	५१ ४१	५४ ४२	५७ ४४	६० ४९	६३ ५४	६७ ४
३४	२ ४२	५ २४	८ ६	१० ४९	१३ ३२	१६ १२	१९ ०	२१ ४६	२४ ३१	२७ १९	३० ८	३३ ५८	३५ ५०	३८ ४४	४१ ३९	४४ ३६	४७ ३६	५० ३८	५३ ४३	५६ ५१	६० १	६३ १५	६६ ३३	६९ ५४
३५	२ ४८	५ ३६	८ २५	११ १४	१४ ३	१६ ५३	१९ ४४	२२ ३५	२५ २८	२८ २२	३१ १७	३४ १३	३७ १३	४० १३	४३ १५	४६ २०	४९ २७	५२ ३६	५५ ४७	५९ ०	६२ २२	६५ ४४	६९ १०	७२ ४०
३६	२ ५४	५ ४९	८ ४४	११ ३९	१४ ३४	१७ ३१	२० २८	२३ २६	२६ २६	२९ २७	३२ २८	३५ ३२	३८ ३८	४१ ४५	४४ ५४	४८ ६	५१ २०	५४ ३७	५७ ५७	६१ २०	६४ ४६	६८ १७	७१ ५१	७५ ३०
३७	३ १	६ २	९ ३	१२ ५	१५ ७	१८ १०	२१ १४	२४ १९	२७ २५	३० ३२	३३ ४६	३६ ५२	४० ४	४३ १९	४६ ३६	४९ ५५	५३ १७	५६ ४१	६० ९	६३ ४०	६७ ५१	७० ५४	७४ ३७	७८ २५
३८	३ ८	६ १५	९ २३	१२ ३२	१५ ४१	१८ ५०	२२ १	२५ १३	२८ २६	३१ ४०	३४ ५६	३८ १४	४१ ३४	४४ ५५	४८ २०	५१ ४७	५५ १७	५८ ४९	६२ २५	६६ ४	६९ ४८	७३ ३६	७७ २८	८१ २५
३९	३ ४१	६ २८	९ ४४	१२ ५९	१६ १५	१९ ३०	२२ ५२	२६ ८	२९ २८	३२ ५०	३६ १४	३९ ३९	४३ ५	४६ ३६	५० ८	५३ ४२	५७ २०	६१ १	६४ ४६	६८ ३४	७२ ३०	७६ २३	८० २५	८४ ३२
४०	३ [illegible]	६ [illegible]	१० [illegible]	१३ [illegible]	१६ [illegible]	२० [illegible]	२३ [illegible]	२७ [illegible]	३० [illegible]	३४ [illegible]	३७ [illegible]	४१ [illegible]	४४ [illegible]	४८ [illegible]	५१ [illegible]	५५ [illegible]	५९ [illegible]	६३ [illegible]	६७ [illegible]	७१ [illegible]	७५ [illegible]	७९ [illegible]	८३ [illegible]	८७ [illegible]

अथ शकोपर्यनुक्रमादनेकपदार्थानां
चैत्रादिप्रत्येकमासेषु समर्घमहर्घविज्ञानार्थमत्र ध्रुवांकाः।

सं०	मासाः १२	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
१	यव	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
२	चना	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
३	गोधूम	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
४	धान	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
५	तिल	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
६	खाड़	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
७	गुड़	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
८	घृत	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१
९	लवण	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१
१०	उड़द	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
११	अरहर	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
१२	मूंग	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
१३	कार्पास	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१
१४	रेंडी	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१
१५	सूत	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
१६	वस्त्र	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
१७	कम्बल	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
१८	पाट	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
१९	सुपारी	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१
२०	अलसी	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
२१	तेल	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२२	फिटकरी	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१
२३	हींग	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२४	हल्दी	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२५	लौंग	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
२६	जीरा	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२७	अजवाइन	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२८	कपूर	२	१	०	२	१	१	१	०	२	१	०	२
२९	ककुनी	०	२	१	०	२	२	२	१	०	२	१	०
३०	बनिया	१	०	२	१	०	०	०	२	१	०	२	१

शाकः लगाब्धिभूपोनः १६४९ शालिवाहनभूपतेः। अनेन युक्तो द्रव्यांकैस्त्र्यैवादौ प्रतिमासके ॥१॥ रुद्रनेत्रैः ३ हृते शेषे फलं चन्द्रेण मध्यमम्। नेत्रेण रसवृद्धिश्च शून्येनार्घं स्मृतं बुधैः ॥२॥ इति॥

पथिराहुचक्रम् ।

अश्वि.	पुष्य.	आश्ले.	विशा.	अनु.	धनि.	शत.	धर्मभानि
भरणी.	पुनर्व.	मघा.	स्वाती.	ज्येष्ठा.	श्रवण	पू.भा.	अर्थभानि
कृत्तिका	आर्द्रा.	पू. फा.	चित्रा.	मूल.	अभि	उ.भा.	कामभानि
रोहिणी	मृग.	उ. फा.	हस्त.	पू.षा.	उ.षा.	रेवती.	मोक्षभानि

अथ पथिराहुचक्राद्यात्रायां शुभाऽशुभज्ञानम्

सूर्ये धर्मगते चन्द्रो धने मोक्षे शुभप्रदः ॥ सूर्ये धनगते धर्ममोक्षमार्गे शुभः शशी । कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थे संस्थश्चन्द्रो जयप्रदः ॥ मोक्षेऽर्के धर्मगश्चन्द्रः शुभोऽन्यत्र न शोभनः ॥ २ ॥ इति ॥

सर्वदिक्शूलज्ञानाय चक्रम् ।

पूर्व.	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा.
चं.श.	चं.बृ.	बृ.	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं. बु.	बु. श.	वा.

अथ नक्षत्रशूलचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	दिशः
ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ. फा.	भानि.

अथ प्रतिदिग्यात्रायां वाहनानि

पू.	द.	प.	उ.	दि.
गज	रथ	अश्व.	पाल.	वा.

अथ समयशूलचक्रम्

पूर्वस्यां	प्रातःकाले
दक्षिणे	मध्याह्नकाले
पश्चिमे	संध्यायाम्
उत्तरस्यां	अर्धरात्रौ

अथात्र यात्रासमयविचारः ।

तत्र सर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः तथा जन्मभे जन्मदशेशेऽस्तं गतेऽपि न गन्तव्यं ॥ प्रथमा तीर्थयात्रा गुरुशुक्रयोरस्तकाले वर्ज्या ॥ सिंहस्थो गुरुर्नीचगोऽपि वर्ज्यः ॥

अथचन्द्रवास चक्रम् ।

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

अथ चन्द्रफलम् ।

सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णे चन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥

अथात्रदिग्लग्नानि ।

पू.	द.	प.	उ.	दिशः
१ ५।९	२ १०।६	३।७ ११	४ ८।१२	शुभ
२।६ १०	३।७ ११	४।८ १२	१।५ ९	मध्य
४ ८।१२	१ ५।९	२।६ १०	३।७ ११	भयम्
३।७ ११	४।८ १२	१।५ ९	२।६ १०	महाभयम्

योगिनीज्ञानाय चक्रम् ।

एवं प्रतिपदमारभ्य पू. उ.अ. नै. द. प. वा. ई. क्रमेण योगिन्याः—भ्रमणम् ।

सा योगिनी सम्मुखवामगा चेदशुभा दक्षिणे पृष्ठे च शुभा यत्र चन्द्राद्वैपरीत्येन फलमस्य इति केषाञ्चिन्मतं तन्न रमणीयं पृथक्श्लोकोपादानात् ।

अथ यात्रा[शुभा]शुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रम् ॥

अश्वि.	पुन.	अनु.	मृ	[illegible]	रे.	ह.	श्र.	ध.	एषुशुभा	एषुसर्वदिक्षु यात्राशुभाः
रो.	उ. ३	पू. ३	ज्ये.	[illegible]	श		एषु भेषु मध्या			
भ.	कृ.	आ.	आश्ले.	[illegible]	चि.	स्वा.	वि.	एतद्भेषु निंद्या		
अ.	ह.	अनु.	पु.	[illegible]शुभा	अश्वि	पुष्य	अनु.		ह.	
पू. ३	कृ.	म.	भ.	[illegible]	वि.	आश्ले.	चि.	एष्वावश्यकेयात्रायां		
१६	२१	११	७	[illegible]	१४	१४	१४	उत्तरार्ध	त्याज्यघट्यः	

अथ स्त्री[पुंसो]र्घातचन्द्रज्ञानाय चक्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
१	८	७	९	४	[illegible]	६	२	१०	११	५	२	स्त्रीणां चं.घा
१	५	९	२	६	[illegible]	३	७	४	८	११	१२	पु. चं. घा.

अथ यात्रायां दिनस्याष्टमांशेन रात्रौ रात्रिमानस्याष्टमांशेन च वेलाफलमिदम् ॥

घ.	सू. दि.	सू. रा.	चं दि.	चं रा.	मं. दि.	म. रा.	बु. दि.	बु. रा.	बृ. दि.	बृ. रा.	शु. दि.	शु. रा.	श. दि.	श. रा.
४	उद्वेग	चर	अमृत	[illegible]	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ
४	चर	लाभ	काल	[illegible]	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग
४	लाभ	अमृत	शुभ	[illegible]	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग
४	अमृत	काल	रोग	[illegible]	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर
४	काल	शुभ	उद्वेग	[illegible]	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ
४	शुभ	रोग	चर	[illegible]	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत
४	रोग	उद्वेग	लाभ	[illegible]	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	चर	अमृत	[illegible]	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ

अथाकुलगणचक्रमिदम् ।

तद्भानि	स्वा. भ. अश्ले. ध. रे. अनु. ह. पुन. उ. ३रो.
तद्वाराः	सू.चं.बृ.श.तिथयः १।३।५।७।९।११।१३।१५

एव प्रोक्ततिथिवारर्क्षे समरे यायिजयः स्यात्

अथकुलाकुलगणचक्रम् ॥

तद्भानि	मू. आर्द्रा. अभि. श.				
तद्वाराः	बुध	तिथयः	२	६	१०

एषु तिथिवारभेषु युद्धारंभे द्वयोर्भूमीशयोः संधिः स्यात् ॥

अथकुलगणचक्रम्

तद्भानि	पूर्वा३अश्वि.पुष्य.म.मृ.श्र.कृ.वि.ज्ये.चि.
तत्स्वतिथयः	४।८।१२।१४ वारौ मङ्गल [illegible]

एषु प्रोक्ततिथिवारभेषु युद्धारम्भे स्थायीजयः स्यादिति ॥

अथ राह्वाक्रान्तभाङ्गानां [illegible]दि संज्ञा ४ बोधकचक्रमिदम् ।

मृतप सं०	कर्त्तरी सं०	[illegible] सं०
श.	पूर्वभाद्रपद ।	उ.भा.
ध.	अत्रस्योदाहरणम्	रेव.
श्र.	कल्प्यते राहुश्चेदज[illegible]	अश्वि.
अभि.	णभे स्थितस्तदा तस्य	भ.
उ.षा.	[क]र्तरी संज्ञा ॥ अहिर्बुध्न्य	कृ.
पू.षा.	भतः भगभान्तंजीवत	रो.
मू.	संज्ञा अर्यमभस्यात्र	मृ.
ज्ये.	स्तसंज्ञा हस्ततो वस्त	आर्द्रा.
अनु.	तभानां १३ मृतप	पुनर्वसु
वि.	संज्ञा ॥ एवं सर्व	पुष्य.
स्वा.	संचारात् ज्ञेयम् ।	आश्ले.
चित्रा.	ग्रस्तनाम	म.
हस्त.	उत्तराफाल्गु	पू.फा.

यात्रायामशुभशकुनानि ॥

वन्ध्यास्त्री | चर्म | तुषा | अस्थि | सर्प | लवण | निर्धूमाग्नि | इन्धन | नपुंसक | विष्ठा | तैल | उन्मत्त | चर्बी
औषध | शत्रु | जटावान् | संन्यासी | तृण | व्याधिमान | नग्न | तैलाभ्यंग | अभ्यंग | जातिभ्रष्ट | क्षुधार्त
रुधिर | स्त्रीपुष्प | सरट | छिक्का | स्वगृहदाह | मार्ज्जारयुद्ध | रक्तवस्त्र | गुड़ | तक्र | पंक | विधवा
कुब्जा | कुटुम्बकलिः | वस्त्रादेस्स्खलनं | महिषयुद्धं | कृष्णान्नम् | तुषं | वमनं | दक्षिणे | गर्दभशब्दः | अत्यन्तक्रोधी
गर्भवती | मुण्डी | आर्द्राम्बर | दुष्टवार्ता | अन्ध | बधिर | रजस्वलाम्बर | कुमारहीना | अतिरोगी | गोबा[illegible]
गोहकदर्शन | शूकरदर्शन | शशकदर्शन | मर्कट शब्द | ऋक्षशब्द एते प्रयाणसमये दृष्टाः सन्त नशुभा
नयुतारभयप्रवेश युद्धेनष्टार्थसंवीक्षणे अशुभशकुनाः शोभनाः | नृपदर्शनवेलायां यात्रोदिता शोभना

यात्रायां शुभशकुनानि ॥

ब्राह्मणर | अश्व | गज | फल | अन्न | दुग्ध | दधि | धेनु | सर्षप | कमल | विमलवस्त्र | वेश्या | वाद्य | मयूर | नकुल
सिंहासन | शस्त्र | मांस | दीप्ताग्नि | मत्स्य | आदर्श | संयुतस्त्री | सम्मुखछत्र | मधुः | नीलकंठ | रजा-
दिना बद्धपशु १ | कमलादिपुष्प | कन्या | कार्यसिद्धिवाक्या | मृत्तिका | सजलपूर्णघट | धूम | [illegible]
रत्नमणिक्यादि | शिरोवेष्टन | श्वेतवृषभ | मंदिरा | कज्जल | पीताम्बर | गोरोचन | अरविन्द[illegible]
पताका | मिष | रजक | वेदशब्द | मंगलवस्तु | गीतगानादि | भारद्वाजपक्षी | शिविका | अंकुशहस्ति[illegible]
पश्चादजलघट | मंगलशब्द | दूर्वा | प्रयाणसमये | दृष्टाः | सत्फलदा | भवन्ति | कोकिला | पोतकी | पल्ली
सूकरी रला | भैरवी | छुछुन्दरी | शृंगाली | कपोत | खञ्जन | तित्तिर | हंसादयः | वामे [illegible]

अथ रोगार्त्तस्यष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम् ॥ तिथिवारञ्च नक्षत्रं लग्नं याम्यंच संयुतम् । वसुभिस्तु हरेद्भागं शेषे बाधा नियोजयेत् ॥ हये ७ ग्नौ ३ देवबाधा स्यात् पितरौ नेत्रदन्तिनः २।८। षटचतुर्थे भूतबाधा ६।४ ग्रहाणामेकपंचके १।५ ॥ भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥ रामबाण रसाष्टौ च [illegible] (३।५।६।८।९।११) जीवति । एकः १ पक्षो २ युगः ४ सप्तदशा ७।१० कौं १२ नात्र जीवति ॥ अन्यदपि राजमार्त्तण्डे ॥ वारर्क्षच तिथिर्दिशा परिमितं संयोज्य नागैर्भजेल्लब्धांकेन फलं च नाग ८ नवके २ दोषं पितुश्चान्यथा ॥ सप्ते ७ राममिते ३ सुरस्य विहितं तर्के ६ क्ष ५ वेदे ४ तथा प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे च बाणाधिके ॥ लब्धाङ्कं त्रि ३ गुणंस्तथावसुयुतं वेदेन [illegible]। सप्तादिष्वधिकं यथा विषमितं कौल्यं च दोषं वदेत् ॥ ग्राम्यं वन्यभवं च राजकुलजं स्याच्छ्वनुजं पंक्तिजम् । शून्ये व्योमभवं तथास्य विविधोपायैश्च शान्तिं वदेत् ॥ कौल्यं होमद्विजार्चनैः [illegible] चतुष्कोणके ॥ होमैः वन्यभवेऽतिथिवरभवैर्भोज्यैश्च वस्त्रेण वा । राज्ये तीर्थपदे तथाप्यरिकृते शक्तिक्रियादानतो गायत्री जपतो हि पंक्तिविषये चाकाशजो दीपतः ॥ सर्पदंशने भेषजम् । [illegible] घृतेन वा । हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति चराचरम् ॥ दशवर्षात्परं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते । गोक्षीरे रजनीक्वाथं पिबेत्सर्वविषापहम् ॥

नक्षत्राणां स्वामिशुभाशुभादिविशेषसंज्ञा

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभ	जातयः	संज्ञा	मुखम.	घ. ऊ. ने.	दोहदम्
अश्विनी	अश्विनीकु.	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यमः	नाशकः	चाण्डालः	उ. क्रू.	अधः	२४	साक्षतमाष
कृत्तिका	अग्निः	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि. सा.	अधः	३०	माषः
रोहिणी	ब्रह्माः	शुभम्	शूद्रः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	४०	गव्यम्
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदुम	तिर्यक्	४१	गोघृतम्
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	तीं. दा.	ऊर्ध्वम्	२१	दुग्धम्
पुनर्वसु-	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	च. च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्
पुष्य	गुरुः	शुभम्	क्षत्रियः	ल. क्षि.	ऊर्ध्वम्	२०	मृगारक्तम्
आश्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	तीं. दा.	अधः	३२	पायसम्
मघा	पितरः	शोकद.	शूद्रः	उग्र क्रूरः	अधः	३०	चाषमांसम्
पू. फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	उग्र क्रूरः	अधः	२०	मृगमांसम्
उ. फा.	अर्यमा	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	१८	शशकमांसम्
हस्त	रविः	शुभम्	वैश्यः	ल. क्षि.	तिर्यक्	२१	साठीः
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	म. मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगुः
स्वाती	वायु	शुभम्	क्रूरजातिः	च. च.	अधः	१४	अपूपः
विशाखा	इंद्राग्नि	अशुभम्	चाण्डालः	मि. सा.	अधः	१४	नानापक्षिम्
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्
ज्येष्ठा	इंद्रः	शुभम्	कृषकः	ती. दा.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूरजाति	ती. दा.	अधः	५६	शारिकमांसम्
पू. षा.	जलः	हानिः	ब्राह्मणः	उ. क्रू.	अधः	२४	गोधिकमांसम्
उ. षा.	विश्वेदेवाः	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	१०	शल्वमांसम्
श्रवण	विष्णुः	वृद्धि	चाण्डालः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१०	कृशरान्नम्
धनिष्ठा	वसुः	शुभम्	कृषकः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१०	मुद्गमोदकम्
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च. च.	ऊर्ध्वम्	१८	यवपिष्टम्
पू. भा.	अजैक	अशुभम्	ब्राह्मणः	उ. क्रू.	ऊर्ध्वम्	१६	मत्स्यान्नम्
उ. भा.	अहिर्बु.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु. स्थि.	ऊर्ध्वम्	२०	चित्रितान्नम्
रेवती	पूषा.	शुभम्	शूद्रः	मृ. मै.	तिर्यक्	१०	दध्योदनम्

नक्षत्रस्य पादवशाच्च [illegible]चक्रम्

अथज्वरादिरोगोत्पत्तौ		भपादवशादत्र दिनसंख्या				
दिनं सं.	दानादि	१च	२च	३च	४च	जपार्थं मन्त्राः
दिनं ९	भोजनदानम्	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः
दिनं ११	गोन्नादिदानम्	०	८०	४०	११	यमायत्त्वेति मन्त्रः
दिनं९	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२८	अग्निर्मूर्धेति मन्त्रः
दिनं ७	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयेति मन्त्रः
मासः १	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः
मृतिः	गोदानम्	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रइति मन्त्रः
दिनं ७	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौरितिमन्त्रः
दिनं ७	तैल्लान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः
मृतिः	गोऽजादिदा.	०	०	४१	०	नम स्तुसर्पेति. मन्त्रः
दिनं २०	वस्त्राज्यदा.	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइति मन्त्रः
मृतिः	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः
दिन ७	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्रः
दिनं १५	तैलदानम्	१५	१३	१५	०	उदुत्यजातवेदेति मन्त्रः
दिनं ११	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टातुरीयेति मन्त्रः
मृतिः	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः
दिनं १६	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इन्द्राग्नी इति मन्त्रः
स्थिरः	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः
मृतिः	तिलदानम्	६१	३	६	४	त्रातारमिन्द्रे मन्त्रः
घटी ९	रौप्य[illegible]दा.	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः
मृतिः	गोम[illegible]तादानम्	०	१५	२	१०	आपोधर्मेति मन्त्रः
मासः १	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः
दिनं ११	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्रः
दिनं १५	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मन्त्रः
दिनं ११	भोजना[illegible]	४	४१	३	२२	वरुणस्य[illegible] मन्त्रः
मृतिः	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः
दिनं ७	अन्नदानम्	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः
[illegible]	[illegible]दानम्	१८	१०	९	२०	पूषन्तवव्रतेति मन्त्रः

नष्टवस्तुज्ञानाय सुलोचनादि संज्ञा

संज्ञा	दिशा	लाभाऽलाभ	ता.	स्वरूपाणि ।
मन्द	द	यत्नलाभः	३	अश्वमुखम्
मध्य	प	दूरेश्र.	३	योनिस्वरूप
सुलोचन	उ	अलाभः	६	क्षुरकाकृतिः
अन्ध	पू	शीघ्रला.	५	शकटवत्
मन्द	द	यत्नला.	३	मृगास्यम्
मध्य	प	दूरेश्र.	१	मणिसदृशम्
सुलोचन	उ	अलाभः	४	गृहसदृशम्
अन्ध	पू	शीघ्रला	३	बाणाकृतिः
मन्द	द	यत्नलाभः	५	चक्राकारम्
मध्य	प	दूरेश्र.	५	गृहसदृशम्
सुलोचन	उ	अलाभः	२	मञ्चकाकृतिः
अन्ध	पू	शीघ्रला.	२	खट्वाकारम्
मन्द	द	यत्नला.	५	हस्ताकारम्
मध्य	प	दूरेश्र.	१	मौक्तिकम्
सुलोचन	उ	अलाभः	१	प्रवालाकारम्
अन्ध	पू	शीघ्रला.	४	तोरणसमम्
मन्द	द	यत्नला.	४	बलिसदृशम्
मध्य	प	दूरेश्र.	४	कुण्डलाकृतिः
सुलोचन	उ	अलाभः	३	सिंहपुच्छवत्
अन्ध	पू	शीघ्रला.	११	गजदन्तसमम्
मन्द	द	य. ला.	२	मंचकसदृशम्
सुलोचन	उ	अ. ला.	३	त्रिमानसदृशम्
अन्ध	पू	शी. ला.	४	मृदङ्गाकृतिः
मन्द	द	य. ला.	१००	वर्तुलम्
मध्य	प	दूरेश्र.	२	मञ्चकाकारम्
सुलोचन	उ	अलाभः	२	यमलसदृशम्
अन्ध	पू	शी. ला.	१२	मर्दलाकारम्

रात्रेस्तु पश्चिमो यामो मुहूर्त्तो ब्राह्म उच्यते। मनुः—ब्राह्मे मुहूर्त्ते बुध्येत धर्मार्थावनुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थ (परमात्मानं) मेव च ॥ शौनकः—प्रातराचमनं कृत्वा शौचं कृत्वा यथार्थवित्। दन्तशौचं ततः कृत्वा प्रातःस्नानं समाचरेत् ॥ उपस्युपसि यत्स्नानं संध्यायामुदितेऽपि वा। प्राजापत्येन तत्तुल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा	घ. प.		घं. मि.	न.	घ. प.		घं. मि.	यो.	घ. प.		घं. मि.	क.	घ. प.	घ. मि.	ग. प.	घं. मि.	योगः	अं	क्रा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा. घ. प. घं. मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रां. उ.	चंद्रोदय घं. मि.
३१ १६	१	म.	५१ १४	रा.	२ १५	चि.	३५ ३६	सा.	१९ ५९	ह.	४६ २०	रा.	० १७	बा.	१९ ५	१३ २३	[illegible]	२ १५	पद्म	११	१४	२८	१	२१	तु. २ ३९ ६ ४८	५ ४५	६ १५	८ ०	१८ ५५
३१ १९	२	चं.	२४ ३८	रा.	३ ३५	स्वा.	४० ४३	रा.	२२ ०	व.	४६ ३१	रा.	० २१	तै.	२२ ५६	१४ [illegible]	[illegible]	३ ३५	छत्र	१२	१५	२९	२	२२		५ ४४	६ १६	८ २२	१९ ५०
३१ २३	३	मं.	२६ ५२	प्रा.	४ २८	वि.	४४ ४०	रा.	२३ ३५	सि.	४५ ५१	सा.	० ४	व.	२५ ४५	१६ [illegible]	[illegible]	४ २८	श्रीवत्स	१३	१६	३०	३	२३	वृ. २८ ४० १७ ११	५ ४३	६ १७	८ ४४	२० ४७
३१ २७	४	बु.	१७ ५१	प्रा.	४ ५१	अ.	४८ ५९	रा.	१ १८	व्य.	४४ १३	रा.	२३ २४	व.	२७ २२	१६ [illegible]	[illegible]	४ ५१	सौम्य	१४	१७	३१	४	२४		५ ४३	६ १७	९ ६	२१ ४५
३१ ३०	५	गु.	२७ ३४	प्रा.	४ ४४	ज्ये.	४९ ०	रा.	१ १८	व.	४१ ३६	रा.	२२ २०	को.	२७ ४३	१६ [illegible]	[illegible]	४ ४४	का.द.	१५	१८	१	५	२५	ध. ४९ ० १ १८	५ ४२	६ १८	९ २७	२२ ४२
३१ ३४	६	शु.	२६ ३	रा.	४ ७	मू.	४९ २१	रा.	१ २६	प.	३८ ०	सा.	२० ५२	ग.	२६ ४९	१६ [illegible]	[illegible]	४ ७	सुस्थिर	१६	१९	२	६	२६		५ ४१	६ १९	९ ४९	२३ ३८
३१ ३७	७	श.	२३ २५	रा.	३ ३	पू.	४८ ३४	रा.	१ ५	शि.	३३ २२	सा.	१९ ४	वि	२४ ४४	१५ [illegible]	[illegible]	३ ३	मातङ्ग	१७	२०	३	७	२७		५ ४१	६ १९	१० १०	० २९
३१ ४१	८	सू.	४९ ४६	रा.	१ ३४	उ.	४६ ४७	रा.	० २३	सि.	२८ ७	सा.	१६ ५५	बा.	२१ ३६	१४ [illegible]	[illegible]	१ ३४	अमृत	१८	२१	४	८	२८	म. ३ ७ ६ ५५	५ ४०	६ २०	१० ३१	१ १५
३१ ४४	९	चं.	४५ १७	रा.	२३ ४६	श्र.	४४ १०	रा.	२३ १९	सा.	२२ ०	दि.	१४ २७	तै.	१७ ३२	१२ [illegible]	[illegible]	२३ ४६	सिद्धि	१९	२२	५	९	२९		५ ३९	६ २१	१० ५२	१ ५९
३१ ४७	१०	मं.	४० ८	रा.	२१ ४२	ध.	४० ५२	रा.	२२ ०	शु.	१४ ५९	दि.	११ ३८	व.	१२ ४२	१० [illegible]	[illegible]	२१ ४२	उत्पात	२०	२३	६	१०	३०	कुं. १२ ३१ १० ३९	५ ३९	६ २१	११ १३	२ ३७
३१ ५१	११	बु.	३४ २७	सा.	१९ २५	श.	३७ ५	सा.	२० २८	शु.	७ ४७	दि.	८ ४५	व.	७ १७	८ ३३	[illegible]	१९ २५	मानस	२१	२४	७	११	१		५ ३८	६ २२	११ ३४	३ १४
३१ ५४	१२	गु.	२८ २६	दि.	१६ ५९	पू.	३३ ०	दि.	१८ ४९	ब्र.	[illegible]	सा	[illegible]	को.	१ २६	६ १२	[illegible]	[illegible]	मुद्गर	२२	२५	८	१२	२	मी. ११ १ १३ १४	५ ३७	६ २३	११ ५४	३ ५१
३१ ५८	१३	शु.	२२ १७	दि.	१४ ३१	उ.	२८ ४७	दि.	१७ ७	ऐं.	४४ ५८	रा.	२३ ३६	ग.	२२ १७	१४ [illegible]	[illegible]	१ २१	केतु	२३	२६	९	१३	३		५ ३६	६ २४	१२ १४	४ २८
३२ १	१४	श.	१६ २५	दि.	१२ १०	रे.	२४ १८	दि.	१५ १९	वै.	३७ २५	रा.	२० ३४	श.	१६ २५	१२ १०	[illegible]	२३ ३	धाता	२४	२७	१०	१४	४	मे. २४ १८ १५ १९	५ ३६	६ २४	१२ ३४	◎
३२ ४	३०	सू.	१० ४९	दि.	९ ५५	अ.	२० ५७	सा.	१४ ५८	प्री.	३० ९	सा.	१७ ३९	ना.	१० ४९	९ ५५	[illegible]	२० ५४	आनन्द	२५	२८	११	१५	५		५ ३५	६ २५	१२ ५४	◎

श्रीशुभसंवत् २०२८ शकः १८९३ वैशाखकृष्णपक्षः (अप्रैल ता० ११...२५ सन् १९७१) सौम्यायनं, याम्यगोलः मेषार्कात्सौम्यगोलः। वसन्तर्त्तुः।

अश्वत्थसेचनम्। घर्मघटादिदानम्। कच्छपावतारः। रात्रिशेषे स्वात्यां सूतीस्नानाचरणं हितावहम्। केन्द्रांशवशेनवक्रोबुधः २३।२८।
अद्य स्वात्यामृतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनादि मु.। बुधास्तं प्रतीच्याम् ५६।१८।
भ. २५।४५(दि १३।१)उ. ५६।५२(प्रा. ४।२८)या.। अद्य विशाखायां विष्टेः पूर्वमग्निकार्यं हितावहम्। चतुर्थीविशाखायोगे स्थायिकार्यार्ह्यं योगः। पू.भा. ३च. शुक्रः ८।३०।
गणेश ४ व्रतम्। अश्विन्यां सं. मेषेचाऽर्कः १।२० (प्रा. ६।१५) मु.३० फलं समम्। मेषे प्रागपरादशघट्यः पुण्यकालस्तेन अरुणोदयात् दिवा १०।१५ यावन्मेषसंक्रान्तिजन्यपुण्यकालः।*
अद्य नृत्यारम्भसूचीकर्मादिकृते शोभनकालः। मूले लतावृक्षाद्यारोपणं हितावहम्। वधूप्रवेशद्विरागमनमुहूर्त्तश्च। बङ्गवैशाखारम्भः। पू.भा. ४च. मीने च शुक्रः ५३।१७।
भ. ५६।३(प्रा. ४।७)उ.। अद्य मूले भैषज्यसेवनलतावृक्षारोपण वधूप्रवेशद्विरागमनादि मु.। *स्थितिर्निविष्टासमफलदासिंहवाहनागजोपवाहना उत्कट शीतिदा श्वेतवस्त्रास्वेतोपऽ§
भ. २४।४४(दि. १५।३४)या.। विष्टेः परं वस्तुविक्रयश्शुभः रात्रिशेषे उत्तरायां वधूप्रवेशद्विरागमनादि मु.। अश्वि. २च. रविः २६।२।
काल ८। कालभैरव यात्रा। शीतला ८। पर्युषितान्नपानादिकं हितावहम्। तिथिदानात्प्रसूतिकास्नानसुभगेतरनववस्त्रादिधारणपूर्वदिग्गमनादि मु.। अश्वि. २च. वक्रीबुधः ५२।२०।†
अद्य रात्रिशेषे औषधसेवनासवारिष्टनिर्माणवधूप्रवेशद्विरागमनादि मु.।
†उत्तरभाद्रपदायां शुक्रः ३८।२। भ. ४च. शनिः ४६।४२।
भ. १२।४२(दि. १०।४४)। उ. ४०।८ (रा. २१।४२) या.। पञ्चकारम्भः १२।३१(दि. १०।३९)। विष्टेः पूर्वं पूर्वदिग्गमने लग्नंचिन्त्यम्। अश्वि. ३च. रविः ५१।६। उ.षा. भे कुजः‡
वरूथिनी ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। अद्य जातकर्मनामकरणान्नप्राशनचूडाकरणक्षेमार्थशान्त्याचरणादि मु.। राष्ट्रीयवैशाखारम्भः। उ.भा. २च. शुक्रः २२।४१।
प्रदोषव्रतम्। पूर्वायां विक्रयः शुभः। उत्तरायां नववस्त्रभूषाधारणोत्तरदिग्गमनवधूप्रवेशद्विरागमनादिकृते शोभनसमयः।
‡३।११। बुधे दृश्यार्कः ४८।१७।
भ. २२।१७(दि. १४।३१)उ. ४९।२१(रा. १।२१)या.। मासशिवरात्रिः। वैधृतिरिक्तादोषाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः। अश्वि. १च. बुधः ८।३९।
श्राद्धादौ दर्शः ३०। पञ्चकनिवृत्तिः २४।१८(दि. १५।१९)। शुभकर्मणिरिक्ताविवुक्षयादिदोषः। अश्वि. ४च. रविः १६।३७। उ.भा. ३च. शुक्रः ७।११।
स्नानदानादौदर्शः ३०। सक्तुदानम्। मुद्गलोपाख्यानं ◎श्रवणीयं पठनीयञ्च। शुभकर्मणि अश्विन्यां विवुक्षयदोषः।
§वस्त्राभुशुण्डायुधाअन्नभक्ष्याकस्तूरीलेपनकरीदेवताजातिः पुन्नागपुष्पाढ्यासुवर्णभोजनपानानूपुरभूषणाविचित्रकञ्चुकीयुतागंगायांस्नानकरीबालवयस्केति च। पू.षा. ४च. कुजः २३।८।

विवाहमुहूर्त्ताः

ति. ४ बुधे वासरान्तं मीनार्कदोषः।

ति. ५ गुरौ मूले मृत्युबाणव्याप्तेर्लग्नाभावः।

ति. ६ शुक्रे मूले ।।।।।ऽऽ।ऽ रे. ७ ल. गोधूलिः वा.ल. ८।

ति. ७ शनौ उ.षा.भे ।।।।।।ऽ।। रे. ९ ल. १२ ने.दा.।

ति. ८ रवौ उ.षा.भे रे. ८ ल.गो.।

ति. १२ गुरौ उ.भा. भे ।।।।। घ. १४ उ.नृपः ऽ।।। रे ९ ल. १२ ने.दा.।

ति. १३ शुक्रे वैधृतिरिक्तादिदोषाल्लग्नाभावः।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथय.	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सिं. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.
१बु.	५ ५४	७ ३२	९ २८	११ ४१	१३ ५९	१६ १३	१८ २६	२० ४२	२२ ५९	१ ५	२ ५१	४ २३
२च.	५ ५०	७ २८	९ २४	११ ३७	१३ ५५	१६ ९	१८ २२	२० ३८	२२ ५५	१ १	२ ४७	४ १९
३म.	५ ४७	७ २५	९ २१	११ ३४	१३ ५२	१६ ६	१८ १९	२० ३५	२२ ५२	० ५८	२ ४४	४ १६
४बु.	५ ४४	७ २२	९ १८	११ ३१	१३ ४९	१६ ३	१८ १६	२० ३२	२२ ४९	० ५५	२ ४१	४ १३
५बृ.	५ ४०	७ १८	९ १४	११ २७	१३ ४५	१५ ५९	१८ १२	२० २८	२२ ४५	० ५१	२ ३७	४ ९
६शु.	५ ३६	७ १४	९ १०	११ २३	१३ ४१	१५ ५५	१८ ८	२० २४	२२ ४१	० ४७	२ ३३	४ ५
७श.	५ ३२	७ १०	९ ६	११ १९	१३ ३७	१५ ५१	१८ ४	२० २०	२२ ३७	० ४३	२ २९	४ १
८सू.	५ २८	७ ६	९ २	११ १५	१३ ३३	१५ ४७	१८ ०	२० १६	२२ ३३	० ३९	२ २५	३ ५७
९चं.	५ २५	७ ३	८ ५९	११ १२	१३ ३०	१५ ४४	१७ ५७	२० १३	२२ ३०	० ३६	२ २२	३ ५४
१०मं.	५ २१	६ ५९	८ ५५	११ ८	१३ २६	१५ ४०	१७ ५३	२० ९	२२ २६	० ३२	२ १८	३ ५०
११बु.	५ १७	६ ५५	८ ५१	११ ४	१३ २२	१५ ३६	१७ ४९	२० ५	२२ २२	० २८	२ १४	३ ४६
१२बृ.	५ १३	६ ५१	८ ४७	११ ०	१३ १८	१५ ३२	१७ ४५	२० १	२२ १८	० २४	२ १०	३ ४२
१३शु.	५ ९	६ ४७	८ ४३	१० ५६	१३ १४	१५ २८	१७ ४१	१९ ५७	२२ १४	० २०	२ ६	३ ३८
१४श.	५ ५	६ ४३	८ ३९	१० ५२	१३ १०	१५ २४	१७ ३७	१९ ५३	२२ १०	० १६	२ २	३ ३४
३०सू.	५ २	६ ४०	८ ३६	१० ४९	१३ ७	१५ २१	१७ ३४	१९ ५०	२२ ७	० १३	१ ५९	३ ३१

ति. ४ बुधे-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घ. १८।२९ चन्द्रो दक्षिणे। ति. ८ रवौ-कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. ७।९ चन्द्रो दक्षिणे। ति. १२ गुरौ-शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. ११० चन्द्रो दक्षिणे। ति. १४ शनौ-बुधचन्द्रयुतिः रे. घं. २०।२० बुधो दक्षिणे।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टाग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

स्प. सू.	स्प. चं.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
११ २७ ४८ १३	६ ८ ५६ ५७	८ २१ ५३ ४८	० ९ १२ १	७ १८ ९ ३५	१० २५ ० ५३	० २२ २७ ५४	१० ० ५८ २१	४ ० ५८ २१
११ २८ ४७ १	६ २१ १६ १८	८ २२ २६ ५६	० ९ ९ ४६	७ १८ ६ ३९	१० २६ १३ ४२	० २२ ३५ ३५	१० ० ५५ १०	४ ० ५५ १०
११ २९ ४५ ४७	७ ३ ४७ २४	८ २३ ० २	० ९ ० ५२	७ १८ ३ ३१	१० २७ २६ ३१	० २२ ४३ १९	१० ० ५१ ५९	४ ० ५१ ५९
० ० ४४ ३०	७ १६ ३२ १४	८ २३ ३३ २	० ८ ४५ २६	७ १८ ० १३	१० २८ ३९ २२	० २२ ५१ ५	१० ० ४८ ४९	४ ० ४८ ४९
० १ ४३ ११	७ २९ ३२ ४	८ २४ ५ ५०	० ८ २३ ३५	७ १७ ५६ ४३	१० २९ ५२ १४	० २२ ५८ ५२	१० ० ४५ ३८	४ ० ४५ ३८
० २ ४१ ५०	८ १२ ४७ २६	८ २४ ३८ ४२	० ७ ५५ ४२	७ १७ ५३ ३	११ १ ५ ७	० २३ ६ ४०	१० ० ४२ २७	४ ० ४२ २७
० ३ ४० २७	८ २६ १८ ७	८ २५ ११ १०	० ७ २२ १४	७ १७ ४९ ११	११ २ १८ ०	० २३ १४ ३०	१० ० ३९ १६	४ ० ३९ १६
० ४ ३९ २	९ १० ३ ५	८ २५ ४३ ४१	० ६ ४३ ४७	७ १७ ४५ ८	११ ३ ३० ५४	० २३ २२ २२	१० ० ३६ ६	४ ० ३६ ६
० ५ ३७ ३५	९ २४ ० ३९	८ २६ १६ ७	० ६ १ ९	७ १७ ४० ५४	११ ४ ४३ ५०	० २३ ३० १४	१० ० ३२ ५५	४ ० ३२ ५५
० ६ ३६ ५	१० ८ ८ २७	८ २६ ४८ २९	० ५ १५ १२	७ १७ ३६ ३०	११ ५ ५६ ४६	० २३ ३८ ७	१० ० २९ ४४	४ ० २९ ४४
० ७ ३४ ३२	१० २२ २३ ३९	८ २७ २० ५०	० ४ २७ ०	७ १७ ३१ ५३	११ ७ ९ ४३	० २३ ४६ ३	१० ० २६ ३३	४ ० २६ ३३
० ८ ३२ ५८	११ ६ ४२ ५८	८ २७ ५२ २८	० ३ ३७ ३८	७ १७ २७ १०	११ ८ २२ ४२	० २३ ५४ ०	१० ० २३ २३	४ ० २३ २३
० ९ ३१ २३	११ २१ २ ३८	८ २८ २४ ३	० २ ४८ २५	७ १७ २२ १६	११ ९ ३५ ४१	० २४ १ ५७	१० ० २० १२	४ ० २० १२
० १० २९ ४४	० ५ १८ ४४	८ २८ ५५ ३३	० २ ० ३२	७ १७ १७ १२	११ १० ४८ ४०	० २४ ९ ५६	१० ० १७ १	४ ० १७ १
० ११ २८ ४	० १९ २७ ५७	८ २९ २६ ५९	० १ १५ १४	७ १७ ११ ५९	११ १२ १ ४०	० २४ १७ ५६	१० ० १३ ५१	४ ० १३ ५१

...ब्रह्मवदारा श्रीमधुसूदनदेवताप्रीत्यर्थममुकतीर्थे वैशाखस्नानारम्भमहं करिष्ये। स्नानमन्त्राः—वैशाखे सकल मासे मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातस्सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन ॥२॥ मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानुग्रहात्... निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम् ॥२॥ माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रात...
...नाथ फलदो भव तापहन् ॥३॥ इति स्नायात्। एवं संपूर्णं मासे स्नानाशक्तौ वैशाखशुक्ले त्रयो... [illegible] ...तुर्दश्यां... —त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां पैशाख्यां वा दिनत्रये। अपि... विधानेन... स्नाने सनियमं सर्वपापैः प्रमुच्यते इति ॥

ति. ४ बुधे

२ | १ | १२
३ | ल. सु. बु. | शु. रा.
४ | १० | के.५
७ | ९ मं. | ६ | ८ चं. गु.

ति. ११ बुधे

२ | १ | १२ शु.
३ | ल. सु. बु. | चं. रा. ११
४ | १० | के.५
७ | ९ मं. | ६ | ८ गु.

वैशाखमासकृत्यम्—पद्मपुराणे-एकभुक्तमथो नक्तमयाचितमतन्द्रितः। माधवे मासि यः कुर्याल्लभते सर्वमीप्सितम् ॥१॥ वैशाखे विधिना स्नानं देवनद्यादिके बहिः। हविष्यं ब्रह्मचर्यञ्च भूशय्यानियमस्थितिः ॥२॥ व्रतं दानं दमो देवि मधुसूदनपूजनम्। अपि जन्मसहस्रोत्थं पापं दहति दारुणम् ॥३॥ स्कान्दे—प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम् ॥१॥ जलपात्राणि देयानि तथा पुष्पगृहाणि च। पानकाणि च चित्राणि द्राक्षारम्भाफलानि ॥२॥ पाद्मे—तीर्थे चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम्। दानं धर्मघटादीनां मधुसूदनपूजनम् ॥१॥ माधवे मासि कुर्वीत मधुसूदनतुष्टिदम्। माधव सकलं मासं लक्ष्मीं योजयते नरः। त्रिसन्ध्यं मधुहन्तारमस्ति नस्य पुनर्भव इति। प्रातःस्नात्वा बहुयत्नेनाश्वत्थमूलं सिंचेत्—प्रदक्षिणञ्च कुर्यात्तत्फलमनेककुलतारणमेवं गवां कण्डूयनेऽपि इति ◎ति. ३० सूर्ये मुद्गलोपाख्यानं पठनीयं श्रवणीयञ्च भारते अश्वमेधपर्वणि नवतितमेऽध्याये। तत्र सारभूतोऽयमुपदेशोऽवधारणीयः। श्रद्धा धर्मसुता देवी पावनी विश्वरूपिणी। सावित्री प्रसवित्री च संसारार्णवतारिणी ॥ श्रद्धया साध्यते धर्मो महद्भिर्नार्थराशिभिः। अकिञ्चना हि मुनयः श्रद्धावन्तो दिवं गताः। सहस्रशक्तिश्च शतं शतशक्तिर्दशापि च। दद्यादपश्च यः शक्त्या सर्वतुल्यफलं स्मृतम्। रन्तिदेवो हि नृपतिरपः प्रादादकिञ्चनः। शुद्धेन मनसा विप्र नाकपृष्ठे ततो गतः ॥ न धर्मः प्रीयते तात दानैर्दत्तैर्महाफलैः। न्यायलब्धैर्यथा सूक्ष्मैः श्रद्धापूतैः स तुष्यति ॥ विभवो न नृणां पुण्यं स्वशक्त्या स्वर्जितम् सताम्। न यज्ञैर्विविधैर्विप्र यथान्यायेन सञ्चितैः न राजसूयैर्बहुभिरिष्ट्वा विपुलदक्षिणैः। न चाश्वमेधैर्बहुभिः फलं समर्जितं तव। सक्तुप्रस्थेन विजितो ब्रह्मलोकस्त्वयाऽनघ। विरजो ब्रह्मसदनं गच्छ विप्र यथासुखम्। तारितो हि त्वया देहो लोके कीर्तिः स्थिरा च ते। स भार्यः सहपुत्रश्च सस्नुषश्च दिवं व्रज ॥ इति ॥ योगियाज्ञवल्क्यः—अहरहः सन्ध्यामुपासीत इति श्रुतिः। अहोरात्रकृतैः पापैर्यामुपास्य प्रमुच्यते ॥ यावन्तोऽस्यां पृथिव्यां तु विकर्मस्था द्विजातयः। तेषां हि पावनार्थाय सृष्टा संध्या स्वयंभुवा ॥ संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः। विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम् सर्वावस्थासु यो विप्रः संध्योपासनतत्परः। ब्राह्मण्याच्च न हीयेत अन्यजन्मगतोऽपि सः ॥ एतद्विदित्वा यः संध्यामुपासीत संशितव्रतः। दीर्घमायुः स विन्देत सर्वपापैः प्रमुच्यते। अत्र तैत्तरीयकश्रुतिः। उद्यन्तमस्तं यान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणो विद्वान् सकलं भद्रमश्नुते। असावादित्यो ब्रह्मेति ब्रह्मव सन् ब्रह्माप्नोति य एवं वेद। अथ वैशाखकृत्यादश्यां वा पूर्णिमायां वा मेषार्कमारभ्य वैशाखस्नानारम्भः—स्नानसंकल्पः (देशकालौ संकीर्त्य—मम वाङ्मनःकायजा...

भागवते—तप्यन्ते लोकतापेन साधवः प्रायशो जनाः। परमाराधनं तद्धि पुरुषस्याखिलात्मनः॥ किंतु तद्दुस्त्यजं ब्रह्मन् पुंसां भूतानुकम्पिनाम्॥ शिवाय लोकस्य भवाय भूतये य उत्तमश्लोकपरायणा जनाः। जीवन्ति, नात्मार्थम्॥ देवा ऊचुः॥ योऽध्रुवेणात्मना नाथ न धर्मं न यशः पुमान्। ईहेत भूतदयया स शोच्यः स्थावरैरपि॥

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	समाप्ति	घं. मि.	न.	घ. प.	समाप्ति	घं. मि.	यो.	घ. प.	समाप्ति	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	क.	घ. प.	घं. मि.	यं. ग.	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशि सञ्चारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त	र. क्रा. उ.	चन्द्र रत घं. मि.
३३ २१	१	शु.	२१ ४८	दि.	१४ ३	पु.	१५ ५७	दि.	११ ४२	व.	४ ३६	प्रा.	७ १०	ब.	२१ ४८	१४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	२ २७	उत्पात	२३	२९	६	१५	१						५ २०	६ ४०	२० १६	१९ ३४
३३ १९	२	श.	२३ ५०	दि.	१४ ५२	श्ले.	१९ ०	दि.	१२ ५६	सि.	३ २५	प्रा.	६ ४२	कौ.	२३ ५०	१४ [illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ३१	मानस	२४	१	७	१६	२	सि.	१९	०	१२	५६	५ २०	६ ४०	२० १३	२० ९
३३ १७	३	सू.	२७ १	दि.	१६ ९	म.	२३ ४६	सा.	१४ १	व्य.	३ १०	प्रा.	६ ३७	ग.	२७ १	१६ [illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ५९	मुद्गर	२५	२	८	१७	३						५ २१	६ ३९	१९ ५१	२० ४०
३३ १४	४	च.	३१ १०	सा.	१७ ४९	पू.	२९ २८	रा.	१७ ८	व.	३ ४४	प्रा.	६ ५१	वि.	३१ १०	१७ [illegible]	[illegible]	[illegible]	× ×	केतु	२६	३	९	१८	४	क.	४६	२	२३	४६	५ २१	६ ३९	१९ ३९	२१ ९
३३ १२	५	म.	३५ ५८	सा.	१९ ४५	उ.	३५ ४७	रा.	१९ ४०	प.	४ ५६	प्रा.	७ २०	ब.	३ ३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९ ४५	धाता	२७	४	१०	१९	५						५ २२	६ ३८	१९ २५	२१ ३८
३३ ९	६	बु.	४१ १	रा.	२१ ४६	ह.	४२ २०	रा.	२२ १८	शि.	६ २८	प्रा.	७ ५७	कौ.	८ २९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१ ४६	आनन्द	२८	५	११	२०	६						५ २२	६ ३८	१९ ११	२२ ८
३३ ७	७	वृ.	४५ ५२	रा.	२३ ४४	चि.	४८ ४१	रा.	० ५१	सि.	८ ५	प्रा.	८ ३६	ग.	१३ २७	१० [illegible]	[illegible]	[illegible]	२३ ४४	चर	२९	६	१२	२१	७	तु.	१५	३१	११	३५	५ २३	६ ३७	१८ ५८	२२ ३८
३३ ५	८	शु.	५० १०	रा.	१ २७	स्वा.	५४ २८	रा.	३ १०	सा.	९ २५	दि.	९ ९	वि.	१८ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१ २७	गद	३०	७	१३	२२	८						५ २३	६ ३७	१८ ४४	२३ १३
३३ २	९	श.	५३ ३४	रा.	२ ४९	वि.	५९ २४	प्रा.	५ ९	शु.	१० १५	दि.	९ ३०	बा.	२१ ५२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ४९	शुभ	३१	८	१४	२३	९	वृ.	४३	१०	२२	४०	५ २४	६ ३६	१८ २९	२३ ५२
३२ ५९	१०	सू.	५२ ५२	रा.	२ ३३	अनु.	६० ०	स.	× ×	शु.	१० २१	दि.	९ ३३	तै.	२३ १३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ३३	मृत्यु	१	९	१५	२४	१०						५ २४	६ ३६	१८ १५	० ३७
३२ ५७	११	च.	५६ ५५	रा.	४ ११	अनु.	० २३	प्रा.	५ ३४	ब्र.	९ ३२	दि.	९ १४	व.	२४ ५४	१५ [illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ११	मानस	२	१०	१६	२५	११						५ २५	६ ३५	१८ ०	१ २९
३२ ५४	१२	म.	५६ ४९	रा.	४ ९	ज्ये.	५ ५३	प्रा.	७ ४६	ऐ.	७ ४६	प्रा.	८ ३१	व.	२६ ५२	१६ [illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ०	मुद्गर	३	११	१७	२६	१२	ध.	५	५३	७	४६	५ २५	६ ३५	१७ ४४	२ २८
३२ ५१	१३	बु.	५५ २६	रा.	३ ३६	मू.	७ १६	प्रा.	८ २०	वै.	५ ०	प्रा.	७ २६	कौ.	२६ ७	१५ [illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ३६	केतु	४	१२	१८	२७	१३						५ २६	६ ३४	१७ २९	३ ३२
३२ ४९	१४	गु.	५२ ५३	रा.	२ ३६	पू.	७ २८	प्रा.	८ २६	वि.	[illegible]	प्रा.	[illegible]	ग.	२४ १०	१५ [illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ३६	धाता	५	१३	१९	२८	१४	म.	२२	१४	१४	२०	५ २६	६ ३४	१७ १३	४ ३८
३२ ४६	१५	शु.	४९ ११	रा.	१ ११	उ.	६ ३३	प्रा.	८ ४	आ.	५१ ६	रा.	१ ५३	वि.	२१ ६	१३ [illegible]	[illegible]	[illegible]	१ ११	आनन्द	६	१४	२०	२९	१५						५ २७	६ ३३	१६ ५६	× ×

श्रीशुभसंवत् २०२८ शकः १८९३ श्रावणशुक्लपक्षः (जुलाई ता० २३···३१, अगस्त ता० १···६ सन् १९७१) याम्यायनं, सौम्यगोलः, वर्षर्त्तुश्च।

इष्टिः। चन्द्रदर्शनम् मु. १५ फलं महर्घंकरम्। पुन. ४ च. कर्के च शुक्रः १७।१७। राष्ट्रीयश्रावणारम्भः। जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनववस्त्रधारणलतावृक्षादिरोपण मु.। सिंहे दृश्यार्कः ३१।२३।

जमादिउस्सानी ६। अन्नासवारिष्टनिर्माण मु.। पुष्य २ च. रविः ३।२३। म. २ च. बुधः ३३।१। तृतीयापूर्वयोगे वस्तुविक्रयः शुभः।

भ. ५९।६ (प्रा. ४।५९) उ.। मधुश्रवा ३ (मिथिलायां प्रसिद्धा)। ठकुराइन जयन्ती (गुर्जरेषु प्रसिद्धा)। सुकृतव्रतम्। स्वर्णगौरी व्रतम्। व्यतिपातात्परमासवारिष्टनिर्माणादि मु.। पुष्यभे शुक्रः ०।३४।

भ. ३१।१० (सा. १७।४९) या.। सोमप्रदोषः। वैनायकी ४। पञ्चम्यां विविधशुभकर्मार्हे समयः। श्रवणं ❀। अत्र पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानसुभगेतरनववस्त्रधारणमन्त्रयन्त्रानुष्ठानपूर्व-*

नागपञ्चमी ५ (मध्याह्ने नागकूपयात्रा) वासुकिदर्शनम्। तक्षकपूजा। पूर्णिमायां चन्द्रग्रहणसत्वात् ऋग्वेदिनां यजुर्वेदिनां चोपाकर्म। गृहप्रवेशे चक्रशुद्धिः। सप्तम्यां गृहारम्भे चक्रशुद्धिः। पु. २ च. शुक्रः ४३।४६।

तिथिदानात् हस्ते गोत्रयविक्रयनववस्त्रभूषाधारणलतागुल्मवृक्षारोपणभैषज्यसेवनादि मु.।

भ. ४५।५२ (रा. २३।४४) उ.। अद्य सप्तम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशनगृहारम्भगृहप्रवेशभैषज्यसेवनशिशोस्ताम्बूलभक्षणनववस्त्रभूषाधारणादि मु.। *दिग्गमनादि मु.। पु. ३ च. रविः ३३।४०। म. ३ च. बुधः ३२।४६।

भ. १८।१ (दि. १२।३६) या.। विष्टेः परं स्वात्यां तिथिदानात् विविध शुभकर्मादिकृते शोभनकालः।

शुभकर्मणि रिक्तादोषोऽवधेयः। पु. ४ च. रविः ३।४६। श्र. ३ च. व. कुजः ५५।३९। म. ४ च. बुधः १९।७। केन्द्रांशवशेनमार्गी गुरुः ३३।४६। पु. ३ च शुक्रः २६।५२।

प्रसूतिकास्नानसुभगेतरनववस्त्रभूषाधारणशिशोस्ताम्बूलभक्षणभैषज्यसेवनपश्चिमेतरसर्वदिग्गमनादि मु.।

भ. २४।५४ (दि. १५।२२) उ. ५६।५५ (प्रा. ४।११) या.। पुत्रदा ११ एकादशीव्रतं स्मार्त्तानाम्। सोमप्रदोषः। मैत्रे जीर्णगृहारम्भे गृहप्रवेशे च चक्रशुद्धिसत्वेऽपि केतुवेधः। पूर्वाम्बिहायान्यदिग्गमन मुहूर्त्तश्च। ज्येष्ठायां॥ श्लेषायां रविः ३३।३६। पु. स्त्री मु. चं. योगः शचानकवाहनं वह्निनाडी तदीशो भौमस्तेन॥ खण्डवृष्टियोगः।

पुत्रदा ११ एकादशीव्रतं वैष्णवानाम्। दधिव्रतारम्भः। शाकदानम्। ग्रहणशालारम्भः। वैधृतेः पूर्वं सामान्यविहितशुभकर्मणां मु.। ‡विष्टेः पूर्वं तुलारम्भः शुभः। पु. ४ च. शुक्रः ९।५४।

प्रदोषः। अद्य वैधृतेः परं पूर्वायां वस्तुविक्रयमुहूर्त्तः। अत्यावश्यके शुक्रवार्द्धक्यारम्भः ५७।५७।

भ. ५२।५३ (रा. २।३६) उ.। अद्य रिक्तविष्टिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः। श्लेषाभे शुक्रः ५२।४८।

भ २१।६ (दि. १३।५३) या.। व्रतस्नानदानादौ श्रावणीपूर्णिमा १५ पुण्यतमा। पूर्णिमायां चन्द्रग्रहणसत्वादद्यैव भद्रोत्तरं (दिवा १३।५३ वादनानन्तरं) रक्षाबन्धनम्❀। सर्वग्रासचन्द्रग्रहणम् (विवरणं चतुर्थपृष्ठे द्रष्टव्यम्)।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र.	वृ. प्र.	मि. प्र.	क. प्र.	सि. प्र.	क. प्र.	तु. प्र.	वृ. प्र.	ध. प्र.	म. प्र.	कु. प्र.	मी. प्र.	म.मा.
१श.	२३ ७	० ४५	२ ४१	४ ५४	७ १२	९ २६	११ ३९	१३ ५५	१६ १२	१८ १८	२० ४	२१ [illegible]	१७ ३४
२श.	२३ ३	० ४१	२ ३७	४ ५०	७ ८	९ २२	११ ३५	१३ ५१	१६ ८	१८ १४	२० ०	२१ [illegible]	१७ ३२
३सू.	२२ ५९	० ३७	२ ३३	४ ४६	७ ४	९ १८	११ ३१	१३ ४७	१६ ४	१८ १०	१९ ५६	२१ [illegible]	१७ ३१
४च.	२२ ५५	० ३४	२ ३०	४ ४३	७ १	९ १५	११ २८	१३ ४४	१६ १	१८ ७	१९ ५३	२१ [illegible]	१७ ३०
५म.	२२ ५२	० ३०	२ २६	४ ३९	६ ५७	९ ११	११ २४	१३ ४०	१५ ५७	१८ ३	१९ ४९	२१ [illegible]	१७ २९
६बु.	२२ ४८	० २६	२ २२	४ ३५	६ ५३	९ ७	११ २०	१३ ३६	१५ ५३	१७ ५९	१९ ४५	२१ [illegible]	१७ २८
७वृ.	२२ ४४	० २२	२ १८	४ ३१	६ ४९	९ ३	११ १६	१३ ३२	१५ ४९	१७ ५५	१९ ४१	२१ [illegible]	१७ २७
८शु.	२२ ४०	० १८	२ १४	४ २७	६ ४५	८ ५९	११ १२	१३ २८	१५ ४५	१७ ५१	१९ ३७	२१ [illegible]	१७ २५
९श.	२२ ३७	० १५	२ ११	४ २४	६ ४२	८ ५६	११ ९	१३ २५	१५ ४२	१७ ४८	१९ ३४	[illegible]	१७ २४
१०सू.	२२ ३३	० ११	२ ७	४ २०	६ ३८	८ ५२	११ ५	१३ २१	१५ ३८	१७ ४४	१९ ३०	[illegible]	१७ २३
११च.	२२ २९	० ७	२ ३	४ १६	६ ३४	८ ४८	११ १	१३ १७	१५ ३४	१७ ४०	१९ २६	[illegible]	[illegible] २२
१२मं.	२२ २५	० ३	१ ५९	४ १२	६ ३०	८ ४४	१० ५७	१३ १३	१५ ३०	१७ ३६	१९ २२	[illegible]	१७ २१
१३बु.	२२ २१	२३ ५९	१ ५५	४ ८	६ २६	८ ४०	१० ५३	१३ ९	१५ २६	१७ ३२	१९ १८	[illegible]	१७ १९
१४गु.	२२ १८	२३ ५६	१ ५२	४ ५	६ २३	८ ३७	१० ५०	१३ ६	१५ २३	१७ २९	१९ १५	२० [illegible]	१७ १८
१५शु.	२२ १४	२३ ५२	१ ४८	४ १	६ १९	८ ३३	१० ४६	१३ २	१५ १९	१७ २५	१९ ११	२० [illegible]	१७ १७

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

स्प. सू.	स्प. च.	स्प. मं.	स्प. बु.	स्प. बृ.	स्प. शु.	स्प. श.	स्प. रा.	स्प. के.
३ ६ २४ ५८	३ २३ २२ ९	९ २१ ५५ १७	४ २ २४ ४१	७ ७ ५२ ४४	३ ० ३७ ६	१ ५ २० २७	९ २५ ३० ५४	३ २५ ३० ५४
३ ७ २१ ५९	४ ५ ५१ २	९ २१ ४३ २	४ ३ ३७ ३८	७ ७ ५१ २१	३ १ ५० ३३	१ ५ २५ ४५	९ २५ २७ ४३	३ २५ २७ ४३
३ ८ १९ १	४ १८ ८ ३५	९ २१ ३० ८	४ ४ ४७ ८	७ ७ ५० ८	३ ३ ४ २	१ ५ ३० ५९	९ २५ २४ ३३	३ २५ २४ ३३
३ ९ १६ ४	५ ० १७ २५	९ २१ १६ ४०	४ ५ ५३ ५	७ ७ ४९ ८	३ ४ १७ ३१	१ ५ ३६ ८	९ २५ २१ २२	३ २५ २१ २२
३ १० १३ ८	५ १२ २० ४०	९ २१ २ ४३	४ ६ ५५ १५	७ ७ ४८ २०	३ ५ ३१ १	१ ५ ४१ ११	९ २५ १८ ११	३ २५ १८ ११
३ ११ १० १३	५ २४ २१ ४७	९ २० ४८ १८	४ ७ ५३ २३	७ ७ ४७ ४३	३ ६ ४४ ३२	१ ५ ४६ ७	९ २५ १५ ०	३ २५ १५ ०
३ १२ ७ १९	६ ६ २४ ५१	९ २० ३३ १३	४ ८ ४७ १५	७ ७ ४७ २०	३ ७ ५८ ४	१ ५ ५० ५८	९ २५ ११ ५०	३ २५ ११ ५०
३ १३ ४ २६	६ १८ ३३ २३	९ २० १७ ५१	४ ९ ३६ ३२	७ ७ ४७ ८	३ ९ ११ ३७	१ ५ ५५ ४५	९ २५ ८ ३९	३ २५ ८ ३९
३ १४ १ ३४	७ ० ५० २९	९ २० २ १३	४ १० २० ५६	७ ७ ४७ १८	३ १० २५ १०	१ ६ ० २८	९ २५ ५ २८	३ २५ ५ २८
३ १४ ५८ ४४	७ १३ १८ ५०	९ १९ ४६ ६	४ ११ ० १६	७ ७ ४७ २१	३ ११ ३८ ४५	१ ६ ५ ५	९ २४ २ १७	३ २४ २ १७
३ १५ ५५ ५५	७ २६ ० ३२	९ १९ २९ ३२	४ ११ ३४ १२	७ ७ ४७ ४५	३ १२ ५२ २०	१ ६ ९ ३६	९ २४ ५९ ७	३ २४ ५९ ७
३ १६ ५३ ६	८ ८ ५७ १	९ १९ १३ १३	४ १२ २ २८	७ ७ ४८ २१	३ १४ ५ ५८	१ ६ १४ १	९ २४ ५५ ५६	३ २४ ५५ ५६
३ १७ ५० २०	८ २२ ९ ०	९ १८ ५६ ३०	४ १२ २४ ४८	७ ७ ४९ १०	३ १५ १९ ३७	१ ६ १८ २०	९ २४ ५२ ४५	३ २४ ५२ ४५
३ १८ ४७ ३४	९ ५ ३६ २२	९ १८ ३९ ३८	४ १२ ४१ २	७ ७ ५० १०	३ १६ ३३ १५	१ ६ २२ ३४	९ २४ ४९ ३४	३ २४ ४९ ३४
३ १९ ४४ ५०	९ १९ १८ २१	९ १८ २२ ४५	४ १२ ५० ५६	७ ७ ५१ २१	३ १७ ४६ ५६	१ ६ २६ ४०	९ २४ ४६ २४	३ २४ ४६ २४

ति. ४ चन्द्रे

- बु. ५
- ३
- ६ चं.
- ४ गु. के. सू.
- २ श.
- ७
- १
- ८ वृ.
- १० रा. मं.
- १२
- ९
- ११

ति. ११ चन्द्रे

- ५ बु.
- ३
- ६
- ४ के. सू.
- २ श.
- ७
- १
- ८चं. वृ.
- १० रा. मं.
- १२
- ९
- ११

❀ति. ५ कुजे-उपाकर्मकालस्तत्र व्यवस्था "अध्यायानामुपाकर्म श्रावण्यां श्रवणेन वा। हस्तेनौषधिभावे वा पञ्चम्यां श्रावणस्य तु" इति याज्ञवल्क्यादिस्मृतिवाक्यात् श्रावण्यामुपाकर्म कर्तव्यत्वेन प्राप्तम्। निर्णयसिन्धुपराशरमाधवादिनिबन्धोद्धृतगोभिलवृद्धगार्ग्यादिवचनैः सङ्गवकालव्यापिन्यामेव पौर्णमास्यां उपाकर्मणो ग्राह्यत्वमुच्यते। 'कर्मणो यस्य यः कालः तत्कालव्यापिनी तिथिः। तया कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम्' इति वचनेन च कर्मकालव्यापिन्या एव तिथेः ग्राह्यत्वदर्शनाच्च सङ्गवकालव्यापिन्यां पूर्णिमायामुपाकर्मानुष्ठानं धर्मशास्त्रसम्मतं, ग्रहणे तु पंचम्यामेव कार्यमितिपक्षः। ❀रक्षाबन्धननिर्णयः—रक्षाबन्धनं तु नोपाकर्माङ्गभूतं सर्वेषामुपाकर्मानन्तरमस्य विधानात्। द्विजातिरिक्तेषु उपाकर्माभावात्, रक्षाबन्धनस्य सर्वेषां विधानात्। तेनोदयव्यापिन्या पूर्णिमायां रक्षाबन्धनं युक्तम्—कारयेच्चाक्षतैस्तद्वत्सिद्धार्थैर्हेमचर्चितैः। कार्पासैः क्षौमवस्त्रैर्वा विचित्रैर्मलवर्जितैः। पुरोधा नृपते रक्षां सम्यग् बध्नीत मानवैः। इति॥ तत्र मन्त्रः—येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्चान्यैश्च मानवैः। कर्त्तव्यो रक्षिकाबन्धो द्विजान् संपूज्य भक्तितः॥ अनेन विधिना यस्तु रक्षाबन्धनमाचरेत्। ससर्वदोषरहितः सुखी संवत्सरं भवेत्॥

लोकसेवा—अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्। परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥ अस्मिन् विषये शिबेरौशीनरस्य कथा श्येनकपोतीयाख्याने (महाभारते) द्रष्टव्या। यस्याः सारभूताः कतिपयश्लोका अत्र लिख्यन्ते॥ शिबिरुवाच—यथात्मनः प्रियाः प्राणाः सर्वेषां प्राणिनां तथा। तस्मान्मृत्युभयत्रस्ता त्रातव्या प्राणिनो बुधैः॥ यथा हि ते जीवितमात्मनः प्रियं तथा परेषामपि जीवितं प्रियम्। संरक्षसे जीवितमात्मनो यथा तथा परेषामपि रक्ष जीवितम्॥ नाऽतो भूयान् परो धर्मः कश्चिदन्योऽस्ति खेचर। प्राणिनां भयभीतानामभयं यत्प्रदीयते॥ वरमेकस्य सत्त्वस्य दत्ता त्वभयदक्षिणा। न तु विप्रसहस्रस्य गोसहस्रमलंकृतम्॥ अभयं सर्वभूतेभ्यो यो ददाति दयापरः। तस्य देहाद्विमुक्तस्य न भयं विद्यते क्वचित्। हेमधेनुधरादीनां दातारः सुलभा भुवि। दुर्लभः पुरुषो लोके सर्वभूतहितप्रदः॥ महतामपि यज्ञानां कालेन क्षीयते फलम्। भीताभयप्रदानस्य क्षयं तस्य न विद्यते॥ येन तप्तं तपस्तेन तीर्थसेवा श्रुतं तथा। यज्ञं भयप्रदानस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ अपि त्यजेत् राज्यमिमं शरीरं वाऽपि दुस्त्यजम्। न त्विमं भयसंत्रस्तं त्यजेद् दीनं कपोतकम्॥ यन्ममास्ति शुभं किञ्चित्तेन जन्मनि जन्मनि। भवेयमहमार्तानां प्राणिनामार्तिनाशकः॥ न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्। प्राणिनां दुःखतप्तानां कामये दुःखनाशनम्॥ यथा च नानृता वाणी ममैषा समुदाहृता। सत्येन तेन भगवान् प्रसीदतु महेश्वरः॥ अध्रुवेण शरीरेण प्रतिक्षणविनाशिना। ध्रुवं यो नार्जयेद्धर्मं स[illegible] मूढचेतनः। यदि प्राण्युपकाराय देहोऽयं नोपयुज्यते। ततः किमुपकारोऽस्य प्रत्यहं क्रियते वृथा। लोमश उवाच—गच्छतस्तिष्ठतो वाऽपि जाग्रतः स्वपतोऽपि वा। यन्न भूतहितार्थाय तत् पशोरिव चेष्टितम्॥ जङ्गमानि च भूतानि स्थावराणि च ये नराः। आत्मवत् परिरक्षन्ति यान्ति ते परमां गतिम्॥ वध्यमानं तु यः शक्तः शरण्यं [illegible] त्वं जगद्बन्धु समोक्षार्थं बद्धः करुणया नृपः॥ अकृत्वेर्ष्यो [illegible] नरकं घोरमिति प्राहुर्मनीषिणः॥ त्यक्तस्वात्मफलभोगेच्छा सर्वसत्त्वसुखैषिणः। भवन्ति परदुःखेन साधवो नित्यदुःखिताः॥ इन्द्र उवाच—परार्थैकान्तकल्याणी सर्वथात्यन्तनिष्ठुरा। त्वय्येव केवलं राजन् करुणा तरुणायते॥ [illegible] सुदुर्बद्धं कृत्स्नमिदं जगत्। [illegible] च। अकृत्वा सदृशी स्पर्द्धा त्वं लोकोत्तमतां गतः॥ पशवोऽपि हि जीवन्ति केवलात्मोदरम्भराः। स पुनर्जीवितश्लाघ्यो यः परार्थं हि जीवति॥ परोपकारैकधियः स्वसुखाय गतस्पृहाः। जगद्धिताय जायन्ते साधवस्त्वादृशा भुवि॥

ति. २ शनौ-बुधचन्द्रयुतिः रे. घ. २२।८ बुधो दक्षिणे।
ति. १० रवौ-गुरुचन्द्रयुतिः रे. घ. ७।५६ चन्द्रो दक्षिणे।

दे. मा.	इ. प.	ति.	वा	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	न.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	क.	घ.	प.	[illegible]	क.	प.	प.	घं.	मि.	योगः	अं.	फा.	बं.	फ.	रा	चन्द्रराशि संचार रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय		सूर्यास्त		र. का. उ.		चंद्रास्त घं.	मि.
३०	१४	१	च.	३५	४५	रा	२०	१५	उ.	१०	५२	दि.	१०	१८	शु.	४४	५३	रा.	२३	५४	कि.	३	१८	[illegible]	व.	३५	४५	२०	१५	श्रीवत्स	२०	२८	३	१५	२९						५	५७	६	३	१	२६	१८	११
३०	१०	२	मं.	४०	५८	रा	२२	२१	ह.	१७	२१	दि	१२	५४	ब्र.	४६	२४	रा	०	३२	बा	८	२२	[illegible]	कौ	४०	५८	२२	२१	सौम्य	२१	२९	४	१६	३०	तु	५०	३८	२	१३	५	५८	६	२	१	३	१८	४१
३०	६	३	बु.	४६	१	रा	०	२३	चि.	२३	५५	दि	१५	३३	ऐं.	४७	४८	रा.	१	६	तै.	१३	३०	[illegible]	ग.	४६	१	०	२३	का. द	२२	१	५	१७	३१						५	५९	६	१	०	३९	१९	१३
३०	३	४	बृ.	५०	३२	रा.	२	१२	स्वा	३०	१	सा.	१८	०	वै.	४८	४७	रा	१	३०	व.	१८	१७	[illegible]	वि	५०	३२	२	१२	सुस्थिर	२३	२	६	१८	१						५	५९	६	१	०	१६	१९	४९
२९	५९	५	शु.	५४	११	रा	३	४१	वि.	३५	२४	सा.	२०	१०	वि	४९	८	रा	१	३९	ब.	२२	२१	[illegible]	बा	५४	११	३	४१	म. तङ्ग	२४	३	७	१९	२	वृ.	१९	३	१३	३७	६	०	६	०	०	७	२०	२८
२९	५५	६	श.	५६	४५	रा.	४	४३	अ.	३९	४५	रा	२१	५५	प्री.	४८	४३	रा	१	३०	कौ.	२५	२८	[illegible]	तै.	५६	४५	४	४३	अमृत	२५	४	८	२०	३						६	१	५	५९	०	३०	२१	१३
२९	५२	७	सू.	५८	५	प्रा.	५	१६	ज्ये.	४२	५७	रा	२३	१२	आ.	४७	१३	रा	०	५५	ग.	२७	२५	[illegible]	व.	५८	५	५	१६	काण	२६	५	९	२१	४	ध.	४२	५७	२३	१२	६	२	५	५८	०	५३	२२	४
२९	४८	८	चं.	५८	१०	प्रा	५	१८	मू.	४४	५५	रा	०	०	सौ	४४	४८	रा	२३	५८	वि.	२८	८	[illegible]	व.	५८	१०	५	१८	लुम्ब	२७	६	१०	२२	५						६	२	५	५८	१	२७	२३	०
२९	४४	९	मं.	५६	५९	रा	४	५१	पू.	४५	३९	रा	०	१९	शो.	४१	२४	रा	२	३७	वा.	२७	३५	[illegible]	कौ.	५६	५९	४	५१	मित्र	२८	७	११	२३	६						६	३	६	४७	१	४०	०	०
२९	४१	१०	बु.	५४	४०	रा.	३	५६	उ.	४५	१३	रा	०	९	अ.	३७	३	रा	०	५३	तै.	२५	५०	[illegible]	ग.	५४	४०	३	५६	वज्र	२९	८	१२	२४	७	म.	०	३२	६	१७	६	४	५	५६	२	४	१	३
२९	३७	११	बृ.	५१	१८	रा	२	३६	श्र.	४३	४५	रा	२३	३५	सु.	३१	५०	सा.	१८	४९	व.	२२	५९	[illegible]	वि	५१	१८	२	३६	केतु	३०	९	१३	२५	८						६	५	५	५५	२	२७	२	७
२९	३३	१२	शु.	४७	३	रा.	०	५४	ध.	४१	२३	रा.	२२	३८	धृ.	२५	५०	दि	१६	२५	व.	१९	१०	[illegible]	वा	४७	३	०	५४	धाता	१	१०	१४	२६	९	कुं.	१२	३४	११	७	६	५	५	५५	२	५०	३	१२
२९	३०	१३	श.	४२	४	रा.	२२	५६	श.	३८	१६	रा	२१	२४	शू.	१९	१०	दि.	१३	४६	कौ.	१४	३३	[illegible]	तै.	४२	४	२२	५६	आनन्द	२	११	१५	२७	१०						६	६	५	५४	३	१४	४	१९
२९	२६	१४	सू	३६	३२	रा.	२०	४४	पू.	३४	३७	सा.	१९	५९	गं.	११	४८	दि	१०	५०	ग.	९	१८	[illegible]	व.	३६	३२	२०	४४	चर	३	१२	१६	२८	११	मी	२०	३१	१४	१९	६	७	५	५३	३	३७	५	२४
२९	२२	१५	चं.	३०	३६	सा.	१८	२२	उ.	३०	३१	सा.	१८	२०	वृ.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	वि	३	३४	[illegible]	व.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गद	४	१३	१७	२९	१२						६	८	५	५२	४	०	×	×

श्रीशुभसंवत् २०२८ शकः १८९३ आश्विन शुक्लपक्षः (सितम्बर ता० २०...३०, अक्टूबर ता० १...४ सन् १९७१) याम्यायनं, सौम्यगोलः शरदृतुः।

इष्टिः। शारदीयनवरात्रारम्भः [symbol]। कलशस्थापनम्। "केशसंस्काररद्रव्याणि प्रदद्यात् प्रतिपद्दिने"। अद्य ऋतुमतीस्नानजातकर्मादि मु.। द्वितीयायां हस्ते पूर्वोत्तरदिग्यात्रा शुभा। उ. फा. ३ च. रविः ५५।२२। ह. २ च. शुक्रः ४८।६।

चन्द्रदर्शनम् मु. ३० फलं समम्। "पट्टडोरं द्वितीयायां केशसंयमहेतवे"। अद्य पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानसुभगेतररक्तवस्त्रधारणविनोतरामन्यदिग्गमनादि मु.।

"दर्पणं तु तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा"। श्रावान ८। अद्य जातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारणभैषज्यसेवनादि मु.। पू. फा. ४ च. बुधः ९।५५।

भ. १८।१७ (दि. १३।१८) उ. ५०।३२ (रा. २।१२) या.। वैनायकी ४। "मधुपर्कं चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमण्डलम्"। प्रतीच्यां शुक्रोदयः ४५।५२। अद्य रिक्तावैधृतिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः। राष्ट्रीयाश्विनारम्भः।$

उपाङ्गललिताव्रतम् *(अपराह्णव्यापिनी) महाराष्ट्रे प्रसिद्धम्। "पञ्चम्यामङ्गरागञ्च शक्त्यालंकरणानि च"। पञ्चम्यां मैत्रे पश्चिमेतरान्यदिग्गमने लग्नं विमृग्यम्। उ. फा. ४ च. रविः १९।३४। उत्तराफाल्गुनीभे बुधः १९।३४।

"षष्ठ्यां बिल्वतरौ बोधं सायं सन्ध्यासु कारयेत्"। बिल्वाभिमन्त्रणम्। रात्रिशेषे सप्तम्यां पश्चिमदिग्यात्राशुभा। यायिजयप्रदयोगश्च। श्र. ३ च. कुजः ३२।५६।

भ. ५८।५ (प्रा. ५।१६) उ.। "सप्तम्यां प्रातरानीय गृहमध्येप्रपूजयेत्"। सरस्वत्याऽऽवाहनम् "मूलेनावाहयेद्देवीं पूर्वाषाढासु पूजयेत्"। अयनदृक्के शुक्रबालत्वनिवृत्तिः ४५।५२। अद्य सूचीकर्मनृत्यारम्भशिशोस्ताम्बूलभक्षणादि मु.।†

भ. २८।८ (रा. १७।१७) या.। महानिशापूजा। बलिदानादिकञ्च। महाष्टमी ८। श्रीअन्नपूर्णापरिक्रमा। (उपोषणमष्टम्यामसमर्थस्तु पूजनं)। विष्टेःपरं मूले लतावृक्षादिरोपण मु.। हस्तेचचार्कः ४३।२० स्त्री.॥

महानवमी ९। "नवम्यां च जपं होमं समाप्य विधिवद्बलिम्"। नवमीप्रयुक्तो होमः बलिदानादिकञ्च। अद्य उग्रक्रूरकर्माचरणादि मु.। उ. फा. ३ च. बुधः २७।५८। चित्राभे शुक्रः ५१।५५।

विजयादशमी १० [symbol]। राज्यपट्टाभिषेकयोग्यादशमी १०। राजचिह्नपूजा। सीमोल्लङ्घनम्। विजय यात्रा। शमीवृक्षपूजनम्। अपराह्णे अपराजितापूजा। नवरात्रव्रतीनां पारणा। अद्य ऋतुमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशन*

भ. २२।५९ (दि. १५।१६) उ. ५१।१८ (रा. २।३६) या.। पापाङ्कुशा ११ एकादशीव्रतं प्रायः सर्वषाम्। विष्टेः पूर्वं जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनादि मु.। उ. फा. ४ च बुधः २८।१२। अनु ४ च. गुरुः १३।५२।

पापाङ्कुशा ११ एकादशी व्रतं वैष्णवानाम्। पद्मनाभ १२। दुग्धदानम्। द्विदलत्यागव्रतारम्भः। पञ्चकारम्भः १२।३४ (दि. ११।७)। अद्य नववस्त्रभूषाधारणासवारिष्ट निर्माणादि मु.। ह. २ च. रविः ६।३९।§

शनिप्रदोषः। श्रीगान्धी जयन्ती। मद्यकर्मासवारिष्ट निर्माणादि मु.। हस्तभे बुधः २६।३०। † २ उ. फा. च. कन्यायां व बुधः २५।१८। ह. ४ च. शुक्रः १०।४३। बुधास्तं प्राच्याम् १६।२५।

भ. ३६।३२ (रा. २०।४४) उ.। वाराही १४ (वाराही पूजा)। रिक्ताविष्टिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्त्ताभावः। §ह. ३ च. शुक्रः २१।२७। तुलायां दृश्यार्कः ४१।७। *नवाम्बरधारणविपणिव्यापारादि मु.।

भ. ३।२४ (प्रा. ७।३३) या.। व्रतस्नानदानादौ शारदीयपूर्णिमा १५ पुण्यतमा। कार्तिकस्नानव्रतनियम,ध्यारम्भः। कोजागरी १५ व्रतम्। आकाशदीपदानम्। अद्य जातकर्मान्नप्राशनशिशोस्ताम्बूलभक्षणलतावृक्षादिरोपण मु.।‡

‡ह. ३ च. रविः २९।३१। ह. २ च. बुधः २३।२०। चि. ३ च. तुले च. शुक्रः १४।७। ||पुं. सू. सू. योगः महिषवाहनं वह्निनाडीतदीशो भौमस्तेन खण्डवृष्टिः। §चि. २ च. शुक्रः ३३।२।

दैनिकलग्नसारिणी

तिथयः	मे.	प्र.	वृ.	प्र.	मि.	प्र.	क.	प्र.	सिं.	प्र.	क.	प्र.	तु.	प्र.	वृ.	प्र.	ध.	प्र.	म.	प्र.	कुं.	प्र.	मी.	प्र.
१चं.	१९	२७	२१	४	२३	१	१	१४	३	३२	५	४६	७	५९	१०	१५	१२	३२	१४	३८	१६	२४	[illegible]	[illegible]
२मं.	१९	२४	२१	१	२२	५८	१	११	३	२९	५	४३	७	५६	१०	१२	१२	२९	१४	३५	१६	२१	[illegible]	[illegible]
३बु.	१९	२०	२०	५७	२२	५४	१	७	३	२५	५	३९	७	५२	१०	८	१२	२५	१४	३१	१६	१७	[illegible]	[illegible]
४बृ.	१९	१६	२०	५३	२२	५०	१	३	३	२१	५	३५	७	४८	१०	४	१२	२१	१४	२७	१६	१३	[illegible]	[illegible]
५शु.	१९	१३	२०	५०	२२	४७	१	०	३	१८	५	३२	७	४५	१०	१	१२	१८	१४	२४	१६	१०	[illegible]	[illegible]
६श.	१९	९	२०	४६	२२	४३	०	५६	३	१४	५	२८	७	४१	९	५७	१२	१४	१४	२०	१६	६	[illegible]	[illegible]
७सू.	१९	५	२०	४२	२२	३९	०	५२	३	१०	५	२४	७	३७	९	५३	१२	१०	१४	१६	१६	२	[illegible]	[illegible]
८चं.	१९	२	२०	३९	२२	३६	०	४९	३	७	५	२१	७	३४	९	५०	१२	७	१४	१३	१५	५९	[illegible]	[illegible]
९मं.	१८	५८	२०	३५	२२	३२	०	४५	३	३	५	१७	७	३०	९	४६	१२	३	१४	९	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०बु.	१८	५४	२०	३१	२२	२८	०	४१	२	५९	५	१३	७	२६	९	४२	११	५९	१४	५	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११बृ.	१८	५१	२०	२८	२२	२५	०	३८	२	५६	५	१०	७	२३	९	३९	११	५६	१४	२	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२शु.	१८	४७	२०	२४	२२	२१	०	३४	२	५२	५	६	७	१९	९	३५	११	५२	१३	५८	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३श.	१८	४३	२०	२०	२२	१७	०	३०	२	४८	५	२	७	१५	९	३१	११	४८	१३	५४	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४सू.	१८	४०	२०	१७	२२	१४	०	२७	२	४५	४	५९	७	१२	९	२८	११	४५	१३	५१	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५चं.	१८	३६	२०	१३	२२	१०	०	२३	२	४१	४	५५	७	८	९	२४	११	४१	१३	४७	१५	३३	[illegible]	[illegible]

ति. १ चन्द्र–शुक्रचन्द्रयुतिः रे. घं. १०।११ चन्द्रो दक्षिणे।
ति. ६ शनी–गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. ९।१६ चन्द्रो दक्षिणे।
ति. ११ गुरौ–कुजचन्द्रयुतिः रे. घं. २३।४३ कुजो दक्षिणे।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि. मा.		स्प. सू.				स्प. चं.				स्प. मं.				स्प. बु.				स्प. बृ.				स्प. शु.				स्प. श.				स्प. रा.				स्प. के.			
४६	३१	५	३	११	२०	५	१७	१०	८	९	१५	२८	१५	४	२१	१५	२	७	११	५१	१४	५	१३	१८	२	१	७	३६	२९	९	२२	२३	२०	३	२२	२३	२०
४६	३०	५	४	१०	०	५	२९	११	१८	९	१५	४२	१९	४	२२	४४	२८	७	१२	०	७	५	१४	३२	२२	१	७	३५	२०	९	२२	२०	९	३	२२	२०	९
४६	२९	५	५	८	४६	६	११	१४	०	९	१५	५६	४०	४	२४	१५	३१	७	१२	९	७	५	१५	४६	४४	१	७	३४	२	९	२२	१६	५९	३	२२	१६	५९
४६	२८	५	६	७	३३	६	२३	२१	४८	९	१६	११	५३	४	२५	४८	७	७	१२	१८	१५	५	१७	१	६	१	७	३२	३८	९	२२	१३	४८	३	२२	१३	४८
४६	२८	५	७	६	२१	७	५	३७	४७	९	१६	२७	४६	४	२७	२२	७	७	१२	२७	३१	५	१८	१६	२९	१	७	३१	७	९	२२	१०	३७	३	२२	१०	३७
४६	२७	५	८	५	१२	७	१८	४	४७	९	१६	४३	५४	४	२८	५७	२९	७	१२	३६	५३	५	१९	२९	५३	१	७	२९	३०	९	२२	७	२६	३	२२	७	२६
४६	२६	५	९	४	५	८	०	४४	५६	९	१७	१	१५	५	०	३४	०	७	१२	४६	२३	५	२०	४४	१८	१	७	२७	४५	९	२२	४	१६	३	२२	४	१६
४६	२५	५	१०	३	१	८	१३	३९	४६	९	१७	१८	५१	५	२	११	३९	७	१२	५६	०	५	२१	५८	४३	१	७	२५	५३	९	२२	१	५	३	२२	१	५
४६	२४	५	११	१	५८	८	२६	५०	३	९	१७	३७	४	५	३	५०	१९	७	१३	५	४२	५	२३	१३	९	१	७	२३	५५	९	२१	५७	५४	३	२१	५७	५४
४६	२३	५	१२	०	५८	९	१०	१५	४६	९	१७	५६	५	५	५	२९	५८	७	१३	१५	३१	५	२४	२७	३५	१	७	२१	५०	९	२१	५४	४३	३	२१	५४	४३
४६	२२	५	१३	०	१	९	२३	५६	१३	९	१८	१५	८	५	७	१०	२४	७	१३	२५	२९	५	२५	४२	३	१	७	१९	३८	९	२१	५१	३३	३	२१	५१	३३
४६	२१	५	१३	५९	६	१०	७	४९	५४	९	१८	३५	२६	५	८	५१	५१	७	१३	३५	३०	५	२६	५६	३१	१	७	१७	२०	९	२१	४८	२२	३	२१	४८	२२
४६	२०	५	१४	५८	१२	१०	२१	५४	३८	९	१८	५५	४३	५	१०	३३	३८	७	१३	४५	४०	५	२८	११	०	१	७	१४	५५	९	२१	४५	११	३	२१	४५	११
४६	१९	५	१५	५७	२२	११	६	७	३१	९	१९	१६	४६	५	१२	१६	१७	७	१३	५५	५५	५	२९	२५	२९	१	७	१२	२४	९	२१	४२	१	३	२१	४२	१
४६	१७	५	१६	५६	३३	११	२०	२६	६	९	१९	३८	३४	५	१३	५९	३०	७	१४	६	१८	६	०	३९	५८	१	७	९	४८	९	२१	३८	५०	३	२१	३८	५०

ति. ४ गुरौ

७ चं. ५ बु. ८ वृ. ६ सू. गु. ४ के. ३ ९ १०रा.म १२ २ श. १

ति. ११ गुरौ

७ ८ वृ. ६ शु. सू. बु. ४ के. ३ ९ मं. रा. १० १२ २ श. ११ १

[symbol] ति. १ चन्द्रे देवीपूजनारम्भः॥ तत्रादौ संकल्पपुरस्सरं विधिवद् घटस्थापनम्, तदुपरि वरुणपूजनं कृत्वा तत्कुम्भोपरि जीर्णायां नूतनायां वा प्रतिमायां दुर्गामावाह्य प्रत्यहं नवरात्रे सविधि षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्॥ पूजनमंत्राः॥ जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये इत्यादि मन्त्रैरथवा वागाम्भृणी ऋग्भिः षोडशोपचारैः श्रद्धया देवीं सम्पूज्य होमं च कारयेत्। ॐ दुर्गे रक्षिणी स्वाहेति सर्वमङ्गलमाङ्गल्येत्यादिभिः सम्प्रार्थ्य बलिदानपक्षे माषभक्तेन कूष्माण्डेन वा बलिदानम्॥ यथोक्तं कालिकापुराणे—कूष्माण्डमिक्षुदण्डं च मासं सारसमेव च। एता बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौछागसमाः सदा। तथा च। ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्माण्डं बलिकर्मणि। श्रीफलं वा सुराधीश छेदनं नैव कारयेत्॥ कुमारीपूजाञ्च कुर्यात्। ततः अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकं प्रज्वालयेदहोरात्रमेकचित्तंदृढव्रतः॥

इदं च शुक्रास्तादावपि कर्तव्यम्। श्रवणे विसर्जनाङ्गपूजनञ्च कृत्वा विसर्जयेत् [symbol] ति. १० बुधे विजया १०॥ तत्र दशम्यां अपराह्णे अपराजितापूजा–तदुक्तं स्कान्दे। दशम्यां तु नरैः सम्यक् पूजनीयाऽपराजिता। ऐशानीं दिशमाश्रित्य अपराह्णे प्रयत्नतः॥ तेनापराह्णे नाममंत्रैरपराजितापूजनं कृत्वा प्रार्थयेत्॥ तत्र प्रार्थनामन्त्रः॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्तिसमन्विताम्। रक्षार्थं ते समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम्॥ अन्ते नमस्कारः—हारेण तु विचित्रेण भास्वत्कनकमेखला। अपराजिता भद्ररता करोतु विजयं मम॥ इत्यादिमन्त्रैर्विजयां सम्प्रार्थ्य पूर्ववद्विसर्जयेदिति॥ ततः शमीवृक्षपूजनं—शमीवृक्षं जगन्नाथं भक्तानामभयंकरम्। अर्चयित्वा शमीवृक्षमर्चयेच्च ततः पुनः॥ अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्॥ शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। करिष्यमाणयात्रायां यथाकाले सुखं मया। तदा निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते॥ इति॥ गृहीत्वा साक्षतामार्द्रां शमीमध्यगतां मृदम्। ततो वादित्रनिर्घोषैरानयेत्स्वगृहं प्रति॥ इति॥ परस्त्रीनिरीक्षणनिन्दाविधौ—मा मतिः परदारेषु परद्रव्येषु मा मतिः। परापवादिनी जिह्वा माभूज्जन्मनि जन्मनि॥ भीष्मः—नहीदृशमनायुष्यं लोके किञ्चन विद्यते। यथा हि पुरुषव्याघ्र परदारोपसेवनम्॥ सीतारावणंप्रति—यथा तव तथाऽन्येषां रक्ष्या दारा निशाचर। आत्मानमुपमां कृत्वा स्वेषु दारेषु रम्यताम्। अतुष्टं स्वेषु दारेषु चपलं चपलेन्द्रियम्। नयन्ति निकृतिप्रज्ञं परदाराः पराभवम्। इममुपदेशं रावणो नागृहीत्ततस्तस्य पराजयः सर्वस्वहानिश्चजाता। रामरावणयोर्युद्धं तु प्रसिद्धमेव। युद्धकाण्डे—[illegible] रात्रि न दिवसे न मुहूर्तं न च क्षणम्। रामरावणयोर्युद्धं विराममुपगच्छति॥ अभिमंत्र्य ततो रामस्तमहेषुं महाबलः। वेदप्रोक्तेन विधिना संदधे कार्मुकं बली। स रावणाय संक्रुद्धो भृशमायम्य कार्मुकम्। चिक्षेप परमायत्तः शरं मर्मविदारणम्॥ स शरो रावणं हत्वा रुधिरार्द्रकृतच्छविः। कृतकर्मा निभृतवत्सतूणीं [illegible] हस्ताद्धतस्याशु कार्मुकं चापि सायकम्। निपपात सहप्राणैर्भ्रश्यमानस्य जीवितात्॥ ततो विनेदुः संहृष्टा वानरा जितकाशिनः। वदन्तो राघवजयं रावणस्य च तद्वधम्॥ आविवेश महान् हर्षो देवानां चारणैः सह। रावणे निहते रौद्रे सर्वलोकभयङ्करे। स तु निहतरिपुः स्थिरप्रतिज्ञः स्वजनबलाभिवृतो रणे [illegible] महौजास्त्रिदशगणैरभिसंवृतो महेन्द्रः॥ आश्विनस्य सिते पक्षे दशमी सर्वराशिषु सायंकाले शुभा यात्रा दिवा च विजयक्षणम्॥ एकादशमुहूर्तो यो विजयः संप्रकीर्तितः। तस्मिन् सर्वा विधातव्या यात्रा विजयकाङ्क्षिभिः॥ श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा॥ श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुत्स्थः प्रस्थितो यतः।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥ यदन्यैर्विहितं नेच्छेदात्मनः कर्म पूरुषः। न तत्परेषु कुर्वीत जानन्नप्रियमात्मनः॥ न तत्परस्य संदध्यात्। प्रतिकूलं यदात्मनः। एष सामासिको धर्मः कामादन्यः प्रवर्तते॥ जीवितुं यः स्वयं चेच्छेत् कथं सोऽन्यं प्रघातयेत्। यद्यदात्मनि चेच्छेत् तत्परस्यापि चिन्तयेत्॥

दि. घ.	दि. प.	ति	वा	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	न.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	समाप्ति	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.	प.	घं.	मि.
२९	१८	१	मं.	२४	२६	दि	१५	५५	रे.	२६	१६	सा.	१६	३९	व्या	४८	४६	रा	१	३९	कौ.	२४	२६	१५	[illegible]	११	२३	२	४१
२९	१५	२	बु.	१८	१९	दि.	१३	२९	अ.	२२	३	दि	१४	५८	ह.	४१	४	रा	२२	३५	ग.	१८	१९	१३	[illegible]	[illegible]	३५	०	२३
२९	११	३	गु.	१२	५२	दि	११	१९	भ	१८	५	दि.	१३	२४	व.	३३	३६	रा.	१९	३६	वि	१२	५२	११	[illegible]	१०	१३	२२	१५
२९	८	४	शु.	७	३४	प्रा	९	१२	कृ.	१५	१	दि	१२	११	सि.	२६	३३	दि	१६	४८	बा	७	३४	९	[illegible]	[illegible]	१५	२०	१३
२९	४	५	श.	२ / ५६	५६ / १०	प्रा	७ / २२	२२ / १८	रो.	१२	१९	दि.	११	७	व्य.	२०	०	दि	१४	११	तै.	२	५६	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८ / ५	३६ / ५०
२९	०	७	र.	५६	१५	रा	४	४२	मृ	१०	२५	दि	१०	२२	व.	१४	४४	दि.	१२	६	व	२७	४१	१७	[illegible]	१६	१५	४	४२
२८	५७	८	सं.	५१	३०	रा	४	१	आ.	९	३१	दि.	१०	१	प.	९	५०	दि.	१०	९	[illegible]	२५	२३	१६	[illegible]	[illegible]	३०	४	१
२८	५३	९	मं.	५४	०	रा	३	४९	पु.	९	४५	दि.	१०	७	शि.	५	४३	रा	८	३३	तै.	२४	१५	१५	[illegible]	[illegible]	०	३	४९
२८	४९	१०	बु.	५४	४७	रा.	४	३	पु	११	१०	दि	१०	४२	सि.	२	४६	प्रा	७	२१	व.	२४	२३	१५	[illegible]	[illegible]	४७	४	९
२८	४६	११	गु.	५६	५१	रा.	४	२९	श्ले	१३	४९	दि.	११	४६	सा.	० / ५८	४ / ५६	प्रा.	[illegible]	[illegible]	व	२५	४९	१६	[illegible]	[illegible]	५१	४	५९
२८	४२	१२	शु.	६०	०	न.	×	×	म	१७	१६	दि.	१३	१०	शु.	५९	२९	प्रा.	६	३	का.	२८	२८	१७	[illegible]	६०	०	×	×
२८	३९	१२	श.	०	५	रा	६	१८	पू	२२	२५	दि.	१५	१८	ब्र.	६०	०	न.	×	×	नै	०	५	६	[illegible]	३२	१२	१९	९
२८	३५	१३	र.	४	१८	प्रा	८	०	उ.	२८	१८	सा	१७	३६	ब्र.	०	४	प्रा.	६	१९	व	४	१८	८	[illegible]	[illegible]	४६	२१	०
२८	३१	१४	सं.	९	१४	दि	९	५९	ह	३४	४४	सा.	२०	११	ऐ.	१	१०	प्रा.	६	४६	श.	९	१४	९	[illegible]	[illegible]	१०	२३	२
२८	२८	३०	मं.	१४	२६	दि	१२	५	चि.	४१	१६	रा.	२२	४९	वै.	२	२६	प्रा.	७	२०	ना	१४	२६	१२	[illegible]	[illegible]	७	१	९

ति	योगः	अं.	का.	वं.	क.	रा.	चन्द्रराशि संचारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र. क्रा. अं.	क.	चन्द्रोदय घं.	मि.
१	गुन	५	१४	१८	१	१३	मे	२६	१६	१६	३९	६	८	५	५२	४	२३	१८	८
२	नत्यु	६	१५	१९	२	१४						६	९	५	५१	४	४६	१८	५४
३	पद्म	७	१६	२०	३	१५	वृ	३२	१९	१९	५	६	१०	५	५०	५	९	१९	४४
४	छत्र	८	१७	२१	४	१६						६	११	५	४९	५	३२	२०	४१
५	श्रीवत्स	९	१८	२२	५	१७	मि.	४१	२२	२२	४४	६	११	५	४९	५	५५	२१	४०
७	सौम्य	१०	१९	२३	६	१८						६	१२	५	४८	६	१८	२२	४०
८	का. द.	११	२०	२४	७	१९	क.	५४	४१	४	५	६	१३	५	४७	६	४१	२३	४१
९	सुस्थिर	१२	२१	२५	८	२०						६	१३	५	४७	७	४	०	३९
१०	मातङ्ग	१३	२२	२६	९	२१						६	१४	५	४६	७	२६	१	३४
११	अमृत	१४	२३	२७	१०	२२	सिं.	१३	४९	११	४६	६	१५	५	४५	७	४९	२	२६
१२	काण	१५	२४	२८	११	२३						६	१६	५	४४	८	११	३	१७
१२	लुम्ब	१६	२५	२९	१२	२४	क.	३८	५४	२१	५०	६	१६	५	४४	८	३३	४	८
१३	मित्र	१७	२६	३०	१३	२५						६	१७	५	४३	८	५५	४	५८
१४	वज्र	१८	२७	१	१४	२६						६	१८	५	४२	९	१७	◐	◐
३०	ध्वांक्ष	१९	२८	२	१५	२७	तु.	८	०	९	३१	५	१८	५	४२	९	३९	◐	◐

श्रीशुभसंवत् २०२८ शकः १८९३ कार्तिककृष्णपक्षः (अक्टूबर ता० ५ ··· १९, सन् १९७१) याम्यायनं, सौम्यगोलः, तुलार्कात् याम्यगोलः, शरदृतुः।

इष्टिः। कार्तिकस्नानारम्भः ◊। कार्तिके द्विदलं त्यजेत्। तुलसीदलेन [चिह्न] श्री विष्णुं प्रपूजयेत्। पञ्चकनिवृत्तिः २६।१६ (सा. १६।३९)। अद्य सूतिकास्नानसुवर्णरत्नवस्त्रधारणादि मु.। श्र. ४ च. कुजः ४८।४९।

भ. ४५।३५ (रा. ०।२३) उ.। अद्याश्विन्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशननवाम्बरधारणोत्तराम्बिहायान्यदिग्गमनादि मु.। ह. ३ च. बुधः १८।४३। वि. ४ च. शुक्रः ५५।१६।

भ. १२।५२ (दि. ११।१९) या.। श्री गणेश ४ व्रतम् (करक चतुर्थी)। चन्द्रोदये चतुर्थी योग सत्वात् (चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते)। रिक्ताविष्टिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः। ह. ४ च. रविः ५१।५९।

अद्य रोहिण्यां व्यतिपातात्पूर्वं जातकर्मनामकरणान्नप्राशननवाम्बरधारणादि मु.। ह. ४ च. बुधः १३।४०।

भ. ५९।७ (प्रा० ५।५०) उ.। शुभकर्माणि तिथिक्षयदोषोऽवधेयः। स्वाती भे शुक्रः ३६।१।

भ. २७।४१ (सा० १७।१६) या.। शुभकर्मणि मृगे विष्टिदोषः। चित्रा भे बुधः ७।४३।

अहोई ८ व्रतम् (चन्द्रोदये अष्टमी योगसत्वात्)। राधाजयन्ती। तिथिदानात्पुनर्वसौ विविधशुभकर्मणां मुहूर्तोऽवधेयः। चित्रायामर्कः १३।५८ सौ. सौ. मु. नं. योगः महिषवाहनं सौम्यानाडी तदनिष्टः गुरुस्तेन क्वचित्सुवृष्टिः क्वचिदल्पवृष्टिश्च।

रात्रिशेषे दशम्यामुत्तराम्बिहायान्यदिग्गमने दिग्द्वारानुगं लग्नमन्वेष्टव्यम्। चि. २ च. बुधः १।१८। स्वा. २ च. शुक्रः १६।५४।

भ. २४।२३ (दि. १५।५९) उ. ५४।४७ (प्रा. ४।९) या.। अद्य पुष्ये जातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारणउत्तरेतरसर्वदिग्गमने मु.। धनिष्ठाभे कुजः ५९।३९। चि. ३ च. तुले च बुधः ५४।३८।

रम्भा ११ एकादशी व्रतं स्मार्त्तानाम्। सार्पे यायियात्राशुभा। मघायामासवारिष्टनिर्माणादिकं शोभनम्। चि. २ च. रविः ३६।३। स्वा ३ च. शुक्र ५३।४५। कृ. ३ च. वक्रीशनिः १४।४९।

रम्भा ११ एकादशी व्रतं वैष्णवानाम्। गोवत्स १२ [चिह्न] (सायाह्ने पूजनम्)। पूर्वायां वस्तूनां विक्रय मु.। चि. ४ बुधः ४७।५६।

प्रदोषः। धनत्रयोदशी (धनतेरस)। धनवन्तरि जयन्ती [चिह्न]। अद्योत्तरायां सामान्यशुभकर्मणां मु.।

भ. ४।१८ (प्रा. ८।०) उ. ३६।४६ (रा० २।१०) या.। मासशिवरात्रिः। नरक चतुर्दशी १४ [चिह्न]। निशामुखे यमायबहिर्दीपोदेयः। चतुर्दश्यां विधूदये तैलेन नरकभीरुभिः स्नानं विधेयम्। हनुमज्जयन्ती [चिह्न]। त्रयोदश्यां प्रसूतिका-*

श्राद्धादौ दर्शः ३०। दीपावली ३०। प्रदोषे लक्ष्मीकुबेरादिपूजनम्। रात्रिशेषे दरिद्रनिस्सारणम्। साभ्यङ्गस्नानम्। प्रातरेव तर्पणम्। सायं वृद्धे देवालयादौ दीपदानम्। हनुमद्दर्शनम्। वङ्गकार्तिकारम्भः। ज्येष्ठा भे गुरुः ३९।५२।

स्नानदानादौ दर्शः ३०। अन्नकूटः। बलिपूजा। ★२५ पृष्ठे कथाभागे द्रष्टव्यम्। गोक्रीडनम्। स्वा. २ च. बुधः ३५।२२।

* स्नानाचरणं हितावहम्। चि. ३ च. तुलायां चार्कः ५६।४३ (प्रा. ४।५८) मु. ३० फलं समम्। स्वाती भे बुधः ४१।२८। स्वा. ४ च. शुक्रः ३८।३१।

दैनिकलग्नसारिणी

तिथयः	मे. प्र. घं.	मि.	वृ. प्र. घं.	मि.	मि. प्र. घं.	मि.	क. प्र. घं.	मि.	सिं. प्र. घं.	मि.	क. प्र. घं.	मि.	तु. प्र. घं.	मि.	वृ. प्र. घं.	मि.	ध. प्र. घं.	मि.	म. प्र. घं.	मि.	कुं. प्र. घं.	मि.	मी. घं.	मि.
१मं.	१८	३३	२०	११	२२	७	०	२०	२	३८	४	५२	७	६	९	२१	११	३८	१३	४४	१५	३०	१७	[illegible]
२बु.	१८	२९	२०	७	२२	३	०	१६	२	३४	४	४८	७	२	९	१७	११	३४	१३	४०	१५	२६	१६	[illegible]
३गु.	१८	२५	२०	३	२१	५९	०	१२	२	३०	४	४४	६	५८	९	१३	११	३०	१३	३६	१५	२२	१६	[illegible]
४शु.	१८	२२	२०	०	२१	५६	०	९	२	२७	४	४१	६	५५	९	१०	११	२७	१३	३३	१५	१९	१६	[illegible]
५श.	१८	१८	१९	५६	२१	५२	०	५	२	२३	४	३७	६	५१	९	६	११	२३	१३	२९	१५	१५	१६	[illegible]
७र.	१८	१४	१९	५२	२१	४८	०	१	२	१९	४	३३	६	४७	९	२	११	१९	१३	२५	१५	११	१६	[illegible]
८सं.	१८	११	१९	४९	२१	४५	२३	५८	२	१६	४	३०	६	४४	८	५९	११	१६	१३	२२	१५	८	१६	[illegible]
९मं.	१८	७	१९	४५	२१	४१	२३	५४	२	१२	४	२६	६	४०	८	५५	११	१२	१३	१८	१५	४	१६	[illegible]
१०बु.	१८	३	१९	४१	२१	३७	२३	५०	२	८	४	२२	६	३६	८	५१	११	८	१३	१४	१५	०	१६	[illegible]
११गु.	१८	०	१९	३८	२१	३४	२३	४७	२	५	४	१९	६	३३	८	४८	११	५	१३	११	१४	५७	१६	[illegible]
१२शु.	१७	५६	१९	३४	२१	३०	२३	४३	२	१	४	१५	६	२९	८	४४	११	१	१३	७	१४	५३	१६	[illegible]
१२श.	१७	५२	१९	३०	२१	२६	२३	३९	१	५७	४	११	६	२५	८	४०	१०	५७	१३	३	१४	४९	१६	[illegible]
१३र.	१७	४८	१९	२६	२१	२२	२३	३५	१	५३	४	७	६	२१	८	३६	१०	५३	१२	५९	१४	४५	१६	[illegible]
१४सं.	१७	४५	१९	२३	२१	१९	२३	३२	१	५०	४	४	६	१८	८	३३	१०	५०	१२	५६	१४	४२	१६	[illegible]
३०मं.	१७	४१	१९	१९	२१	१५	२३	२८	१	४६	४	०	६	१४	८	२९	१०	४६	१२	५२	१४	३८	१६	[illegible]

ति. ४ शुक्रे—शनिचन्द्रयुतिः रे. च. १०।४० शनिर्दक्षिणे।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरंगतिः

ता.	स्प. सू.				स्प. चं.				स्प. मं.				स्प. बु.				स्प. बृ.				स्प. शु.				स्प. श.				स्प. रा.				स्प. के.			
[illegible]	५	१७	५५	४५	०	४	४६	७	९	२०	०	३३	५	१५	४३	१२	७	१४	१६	४५	६	१	५४	२९	१	७	७	४	९	२१	३५	३१	३	२१	३५	३१
[illegible]	५	१८	५५	१	०	१९	३	४६	९	२०	२३	३३	५	१७	२७	२५	७	१४	२७	१९	६	३	९	०	१	७	४	१४	९	२१	३२	२८	३	२१	३२	२८
[illegible]	५	१९	५४	१९	१	३	१५	३४	९	२०	४६	२८	५	१९	१२	०	७	१४	३७	५८	६	४	२३	३२	१	७	१	१७	९	२१	२९	१८	३	२१	२९	१८
[illegible]	५	२०	५३	३१	१	१७	१८	२१	९	२१	९	४४	५	२०	५६	५७	७	१४	४८	४४	६	५	३८	५	१	६	५८	१५	९	२१	२६	७	३	२१	२६	७
[illegible]	५	२१	५३	१	२	१	९	५२	९	२१	३३	५९	५	२२	४२	११	७	१४	५९	३३	६	६	५२	३१	१	६	५५	८	९	२१	२२	५६	३	२१	२२	५६
[illegible]	५	२२	५२	२७	२	१४	४७	४३	९	२१	५८	२२	५	२४	२७	४०	७	१५	१०	३२	६	८	७	१२	१	६	५१	५५	९	२१	१९	४५	३	२१	१९	४५
[illegible]	५	२३	५१	५८	२	२८	१०	४०	९	२२	२३	१	५	२६	१३	१९	७	१५	२१	३४	६	९	२१	४६	१	६	४८	३७	९	२१	१६	३५	३	२१	१६	३५
[illegible]	५	२४	५१	२३	३	११	१८	५	९	२२	४८	३३	५	२७	५९	७	७	१५	३२	४१	६	१०	३६	२०	१	६	४५	१३	९	२१	१३	२४	३	२१	१३	२४
[illegible]	५	२५	५०	५८	३	२४	१०	८	९	२३	१४	६	५	२९	४४	५९	७	१५	४३	५५	६	११	५०	५५	१	६	४१	४३	९	२१	१०	१३	३	२१	१०	१३
[illegible]	५	२६	५०	२८	४	६	४७	४६	९	२३	४०	१८	६	१	३०	५२	७	१५	५५	१२	६	१३	५	३१	१	६	३८	७	९	२१	७	२	३	२१	७	२
[illegible]	५	२७	५०	४	४	१९	१२	३५	९	२४	६	४६	६	३	१६	४४	७	१६	६	५४	६	१४	२०	७	१	६	३४	२६	९	२१	३	५२	३	२१	३	५२
[illegible]	५	२८	४९	४२	५	१	२६	५३	९	२४	३३	२६	६	५	२	२९	७	१६	१८	२	६	१५	३४	४४	१	६	३०	३९	९	२१	०	४१	३	२१	०	४१
[illegible]	५	२९	४९	२२	५	१३	३३	२८	९	२५	०	४७	६	६	४८	३	७	१६	२९	३५	६	१६	४९	२२	१	६	२६	४९	९	२०	५७	३०	३	२०	५७	३०
[illegible]	६	०	४९	५	५	२५	३५	३५	९	२५	२८	२३	६	८	३३	२२	७	१६	४१	१२	६	१८	४	०	१	६	२२	५३	९	२०	५४	१९	३	२०	५४	१९
[illegible]	६	१	४८	५०	६	७	३६	५५	९	२५	५६	१	६	१०	१८	२४	७	१६	५२	५४	६	१९	१८	४०	१	६	१८	५३	९	२०	५१	९	३	२०	५१	९

ति. ४ शुक्रे

श. ७   ५
वृ. ८   ६ बु. सू.   ४ के.
९   ३
रा. १० मं.   १२   २ श.
११   १

ति. १२ शुक्रे

७ बु. शु.   ५ चं.
८ वृ.   ६ सू.   ४ के.
९   ३
रा. १० मं.   १२   २ श.
११   १

मदनपारिजात—कार्तिक सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ ◊ कार्तिकस्नानविधिः तत्र संकल्पः। देशकालौ संकीर्त्य—मम वाङ्मनःकायजाशेषपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अमुकतीर्थे कार्तिकस्नानमहं करिष्ये। तत्र मन्त्रः—कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमाप्रिय॥ ध्यात्वाऽहं त्वां च देवेश जलेऽस्मिन्स्नातुमुद्यतः। तव प्रसादात् पापं मे दामोदर विनश्यतु॥ इमौ मन्त्रौ समुच्चार्य मौनी स्नायाद्व्रती नरः॥ [चिह्न] तुलसीमाहात्म्यं पाद्मे—तुलसीदललक्षेण कार्तिके योऽर्चयेद्धरिम्। पत्रे पत्रे मुनिश्रेष्ठ लभते मौक्तिकं फलम्—ति. १२ शुक्रे गोवत्सपूजनम् [चिह्न] तन्मन्त्रः। सर्वदेवमयी देवी सर्वदेवैरलंकृते। मातर्ममाभिलषितं सफलं कुरु नन्दिनि इति॥ अथ त्रयोदश्यामपमृत्युनाशार्थं यमाय निशामुखे बहिर्दीपो देयः। तन्मन्त्रः—मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह॥ त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम॥ अथ त्रयोदशीमारभ्य गोत्रिरात्रव्रतं कर्तव्यम्। अथ

[चिह्न] १२ शनौ सायं धन्वन्तरिजन्मोत्सवः कार्यः। भा. २स्क. ७अ.। धन्वन्तरिश्च भगवान्स्वयमेव कीर्तिः नाम्ना नृणां पुरुरुजां रुज आशु हन्ति। यज्ञे च भागममृतायुरवावरुन्ध आयुश्च वेदमनुशास्त्यवतीर्य लोके। औषधदानमाहात्म्यं चरकः—अनेकं रोगजोकृत्य जन्तुर्यद्दृणकाद्भुतम्। आयुर्वेदप्रभावेण किं न दत्तं भवेद्भुवि॥ [चिह्न] अथ नरकचतुर्दशी ति. १३ रवौ विधूदये नरकभीरुभिः स्नानं कार्यम्। सीतालोष्ठसमायुक्त सकण्टकदलान्वित। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः॥ तैले लक्ष्मीर्जले गङ्गा दीपावल्यां चिधूदये। यः यः करोति नरः स्नानं यमलोकं न पश्यति॥ [चिह्न] अपि ति. १३ रवौ हनुमज्जन्मदिनम्—व्रतरत्नाकरे—अर्चिते ह्यासते यत्र भूतायां न महानिशि। भौमवारेऽञ्जनादेवी हनुमन्तमजीजनत्॥ शौर्यवर्धनं हनुमच्चरित वाल्मीकिरामायणे सुन्दरकाण्डे द्रष्टव्यम्, यस्यैतादृशी प्रतिज्ञा—न [illegible]द्रक्ष्यामि यदि तां लंकायां जनकात्मजाम्। अनेनैव हि वेगेन गमिष्यामि सुरालयम्॥ यदि वा त्रिदिवे सीतां न द्रक्ष्यामि कृतश्रमः। बद्ध्वा राक्षसराजानमानयिष्यामि रावणम्॥ सर्वथा कृतकार्योऽहमेष्यामि सह सीतया। तथा च तस्य जपनीयमन्त्राः—जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः। राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः॥ दासोऽहं कोसलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्टकर्मणः। हनूमान्शत्रुसैन्यानां निहन्ता मारुतात्मजः॥ न रावणसहस्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत्॥ शिलाभिश्च प्रहरतः पादपैश्च सहस्रशः। अर्दयित्वा पुरीं लङ्कामभिवाद्य च मैथिलीम्। समृद्धार्थो गमिष्यामि मिषतां सर्वरक्षसाम्॥ तथाऽस्य प्रार्थना—मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये। उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः। आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ अथ कार्तिके धात्रीमाहात्म्यमाह—कार्तिके धात्रीवृक्षादधश्चित्रान्नैस्तोषयेद्धरिम्। ब्राह्मणान्भोजयेद् भक्त्या स्वयं भुञ्जीत बान्धवैः॥ "अथ अमा[illegible]ता॥ तत्रैव—[illegible]तर विहितम्। तन्मन्त्रः—नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्॥ धनदायै नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपे शुभे। भवन्तु त्वत्प्रसादेन धनधान्यादि संपदः॥ अनेन श्रीलक्ष्मीः प्रीयताम्। इन्द्रपूजामन्त्रः—ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा[illegible] हरिं प्राध्यं संबोधयेत्—ततः पूर्णिमेव तिथौ निशीथोत्तरं स्त्रीभिः स्वगृहादलक्ष्मीनिस्सारणं कार्यमिति। एवं गतेनिशीथे तु जने निद्रार्धलोचने। तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिमवादनैः। निष्काश्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात्॥ वैधृतौ च व्यतीपाते भौमभार्गवभानुषु। पर्वद्वये च संक्रान्तौ द्वादश्यां सूतकद्वये। तुलसीं ये वि[illegible] जले स्थले ये विचरन्ति जीवाः। दृष्ट्वा नैव छिन्द्यात् रवौ दूर्वां तुलसीं निशि संध्ययोः। धात्रीपत्रं कार्तिके च पुण्यार्थीमतिमान्नरः॥

दिनमान घ.	प.	ति	वा	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	न.	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	यो	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	क.	घ.	प.	[illegible]	घं.	मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	क.	रा	चन्द्रराशि सचारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय		सूर्यास्त		र. का द.		चंद्रास्त घं.	मि.
२८	२४	१	बु.	१९	४८	दि	१४	१४	स्वा	४७	३०	रा	१	१९	वि	३	५५	प्रा	७	५३	व	१९	४८	[illegible]	३	१०	धूम्र	२०	२९	३	१६	२८						६	१९	५	४१	१०	१	×	×
२८	२१	२	बृ.	२४	२७	दि	१६	७	वि	५३	२	रा	३	३३	प्री	४	५६	प्रा	८	१८	कौ.	२४	२७	[illegible]	४	५२	प्र. सा	२१	३०	४	१७	२९	वृ.	३६	३९	२१	०	६	२०	५	४०	१०	२३	१८	२८
२८	१७	३	शु.	२८	१२	सा.	१७	३७	अनु	५७	३८	प्रा	५	२४	आ.	५	२१	प्रा	८	२९	ग.	२८	१२	[illegible]	६	९	रक्ष	२२	१	५	१८	३०						६	२१	५	३९	१०	४४	१९	११
२८	१४	४	श.	३०	५१	सा.	१८	४१	ज्ये.	६०	०	स	×	×	सौ	५	१	प्रा	८	२२	वि.	३०	५१	[illegible]	×	×	मुसल	२३	२	६	१९	१						६	२१	५	३९	११	५	२०	०
२८	१०	५	सू.	३२	१४	सा.	१९	१६	ज्ये.	१	६	प्रा	६	४९	शो.	३	४७	प्रा	७	५३	ब.	१	३२	[illegible]	११	१६	काण	२४	३	७	२०	२	ध.	१	६	६	४९	६	२२	५	३८	११	२६	२०	५३
२८	७	६	च.	३२	२१	सा	१९	१९	मू.	३	२१	प्रा.	७	४३	अ	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	कौ.	२	१८	[illegible]	११	११	लुम्ब	२५	४	८	२१	३						६	२३	५	३७	११	४७	२१	५०
२८	३	७	मं.	३१	१६	सा	१८	५३	पू.	४	२३	प्रा	८	९	धृ.	५४	९	रा	४	३	ग.	१	४८	[illegible]	१८	५३	मित्र	२६	५	९	२२	४	म.	१९	२१	१४	८	६	२३	५	३७	१२	८	२२	५२
२८	०	८	बु.	२८	५६	सा	१७	५८	उ.	४	१४	प्रा	८	५	शू.	४९	५	रा	२	२	वि	०	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मुद्गर	२७	६	१०	२३	५						६	२४	५	३६	१२	२९	२३	५३
२७	५७	९	बृ.	२५	३७	सा.	१६	३९	श्र.	३	८	प्रा	७	४०	ग	४३	१४	र	२३	४२	कौ.	२५	३७	[illegible]	३	४९	केतु	२८	७	११	२४	६	कुं.	३१	५८	१९	१२	६	२५	५	३५	१२	४९	०	५५
२७	५३	१०	शु.	२१	२२	दि	१४	५८	ध.	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	वृ.	३६	४२	रा	२१	६	ग.	२१	२२	[illegible]	१	५८	धाता	२९	८	१२	२५	७						६	२५	५	३५	१३	९	१	५८
२७	५०	११	श.	१६	२३	दि	१२	५९	पू	५४	१८	रा.	४	९	ध्रु.	२९	३७	सा.	१८	१७	वि.	१६	२३	[illegible]	२३	५०	का. द.	३०	९	१३	२६	८	मी.	४०	१३	२२	३१	६	२६	५	३४	१३	२९	३	१
२७	४७	१२	सू.	१०	३९	दि	१०	४२	उ.	५०	२०	रा	२	३५	व्या.	२२	५	दि	१५	१७	बा.	१०	३९	[illegible]	२१	२३	सुस्थिर	३१	१०	१४	२७	९						६	२७	५	३३	१३	४९	४	७
२७	४३	१३	च.	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	रे	४६	९	रा	०	५५	ह	१४	१६	दि	१२	१०	तै.	४	५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मतङ्ग	१	११	१५	२८	१०	मे.	४६	९	०	५५	६	२७	५	३३	१४	९	५	१४
२७	४०	१५	मं.	५२	५६	रा	३	३८	अ.	४१	५८	रा	२३	१५	व.	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	वि	२५	५४	[illegible]	३	३८	अमृत	२	१२	१६	२९	११						६	२८	५	३२	१४	२८	×	×

श्रीशुभसंवत् २०२८ शकः १८९३ कार्तिकशुक्लपक्षः (अक्टूबर ता० २०···३१, नवम्बर ता. १ ···२ सन् १९७१) याम्यायनं, याम्यगोलः, शरदृतुः ।

इष्टिः । काश्यां गोवर्धनपूजा । मार्गपालीबन्धनम् । षष्ठ्याकर्षणम् । नीराजनं प्रातः । साय मङ्गलमालिका । अद्य जातकर्मनामकरणवस्त्रभूषाधारणादि मु. । विशाखा भे शुक्रः १३।१२ ।

चन्द्रदर्शनम् मु. ४५, फलं समर्घकरम् । यमद्वितीया । भ्रातृद्वितीया । भगिनीगृहेभोजनम् । चित्रगुप्तपूजा । लेखन्यादिपूजा । कार्तिकान्यत्र गोवर्धनपूजा । रात्रिशेषे मैत्रे दक्षिणेतरसर्वदिग्यात्राप्रसूतीस्नानादि मु. । चि. ४¶

भ. ५९।३१ (प्रा. ६।९) उ. । रमजान ९ । अद्य तृतीयायां जातकर्मनामकरणान्नप्राशननवाम्बरधारणविपणिव्यापारपश्चिमेतरसर्वदिग्यात्रा मु. । वि. २ च शुक्रः ५९।५२ ।

† च. रविः १३।२६ । धनि २ च. कुजः १८।३३ । स्वा. ३ च. बुधः ३०।११ ।

भ. ३०।५१ (सा. १८।४१) या. । वैनायकी ४ । राष्ट्रीयकार्तिकारम्भः । स्वा. ४ बुधः २५।५० ।

मूले लतावृक्षादिरोपणभैषज्यसेवनपुंसवनसीमन्तोन्नयनादि मु. । सूर्यषष्ठीव्रतारम्भः । (संवतेत्यादिना नाम्ना लोके प्रसिद्धम् । तत्रैक भुक्तेन भवितव्यम् । स्वात्यामर्कः ३०।४७। वृश्चिके दृश्याकः १६।१५ ।

पूर्वायां वस्तुविक्रयादि मु. । सूर्यषष्ठी ६ (छठ) व्रतम् । सम्पूर्णदिनमुपोष्य सायंकालीनार्घ्यदानम् । विशाखा भे बुधः २२।३८ ।

भ. ३१।१४ (सा. १८।५३) उ. । सूर्योदये अर्घ्यं दत्त्वा पारणाचार्कव्रतीनाम् । विष्टेः पूर्वमुत्तरायां पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नानमुण्डनेतरवस्त्रवस्त्वादिधारण मु. ।

भ. ०।५ (प्रा० (प्रा. ६।२६) या. । गोपाष्टमी ८ । बुधाष्टमी ८ । "कार्तिकान्ते दिनान्यष्टौवादावग्रहणस्य । यमदंष्ट्रेति विख्याता स्वल्पा हारी स जीवति । विष्टेः परं तिथिदानादष्टम्यां भैषज्यसेवननववस्त्रभूषा-§

अक्षयनवमी ९ व्रतम् । सरत्नगर्भकुष्माण्डादिदानम् । अयोध्यापरिक्रमा । विष्णुत्रिरात्रिव्रतारम्भः । सौवर्णी विष्णुमूर्ति च सम्पूज्यद्यादद्वाताम् । पञ्चकारम्भः ३३।५८(सा. १९।१२) । अद्य दशम्यां जातकर्मनामकरणान्नप्राशन†

भ. ४८।५३ (रा. १।५८) उ. । अद्य जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनशिरोस्ताम्बूलभक्षणादि मु. । वि. ३ च. बुधः २१।४ । § वारणादि मु. । स्वा २ च. रविः ५।३० । वि. २ च. बुधः २०।५६ ।

भ. १६।२३ (दि. १२।५९) या. । प्रबोधिनी ११ एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । भीष्मपञ्चकारम्भः । रात्रिशेषे उत्तरायां सामान्य शुभकर्माणि मु. ।

प्रदोषः । द्विदलदानम् । चातुर्मास्य व्रतसमाप्तिः । अद्य त्रयोदश्यां प्रसूतिकास्नानसुभगेतरनववस्त्रधारणोत्तरदिग्गमनादि मु. । स्वा. ३ च. रविः २१।१८ । विशाखा ४ च. वृश्चिके च बुधः २३।३१ । अनु.भे. शुक्रः १४५ । ¶

भ. ५८।५२ (प्रा. ६।०) उ. । वैकुण्ठ १४ व्रतम् । विष्णुपूजायां रात्रिव्यापिनीग्राह्या । पञ्चकनिवृत्तिः ४६।१९ (रा. ०।५५) । श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनम् । अद्य शुभकर्मणितिथिक्षयदोषोऽवधेयः ।

भ. २५।५४ (सा. १६।५०) या. । स्नानदानव्रतादौपूर्णिमा १५ पुण्यतमा । भीष्मपंचकनिवृत्तिः । विष्टेः परमश्विन्यां प्रसूति स्नानादि हिताबहम् । नवदीपदानम् । कार्तिकेयदर्शनम् । पुष्करे स्नानम् । मन्वादिः । §

¶ बुधोदयः प्रतीच्याम् ५३।५० । § कार्तिकस्नानदानयमनियमादिसमाप्तिः । अनु भे बुधः २८।५० । अनु ३ च शुक्रः ४२।१७ ।

‡ भैषज्यसेवनशिरोस्ताम्बूलभक्षणादि मु. । धनि. ३ च. कुम्भे च कुजः ४।३ । वि. ४ च. वृश्चिके च शुक्रः २१।८ ।

दैनिक लग्नसारिणी

दिवसः	मे.	प्र	वृ.	प्र	मि	प्र	क.	प्र.	सिं.	प्र.	क.	प्र	तु	प्र.	वृ	प्र.	ध.	प्र.	म.	प्र	कु.	प्र.	मी.	प्र.
१बु.	१७	३७	१९	१५	२१	११	२३	२४	१	४२	३	५६	६	९	८	२५	१०	४२	१२	४८	१४	३४	१६	[illegible]
२बृ.	१७	३३	१९	११	२१	७	२३	२०	१	३८	३	५२	६	५	८	२१	१०	३८	१२	४४	१४	३०	१६	[illegible]
३शु.	१७	२९	१९	७	२१	३	२३	१६	१	३४	३	४८	६	१	८	१७	१०	३४	१२	४०	१४	२६	१५	[illegible]
४श.	१७	२५	१९	३	२०	५९	२३	१२	१	३०	३	४४	५	५७	८	१३	१०	३०	१२	३६	१४	२२	१५	[illegible]
५सू.	१७	२१	१८	५९	२०	५५	२३	८	१	२६	३	४०	५	५३	८	९	१०	२६	१२	३२	१४	१८	१५	[illegible]
६च.	१७	१७	१८	५५	२०	५१	२३	४	१	२२	३	३६	५	४९	८	५	१०	२२	१२	२८	१४	१४	१५	[illegible]
७मं.	१७	१३	१८	५१	२०	४७	२३	०	१	१८	३	३२	५	४५	८	१	१०	१८	१२	२४	१४	१०	१५	[illegible]
८बु.	१७	९	१८	४७	२०	४३	२२	५६	१	१४	३	२८	५	४१	७	५७	१०	१४	१२	२०	१४	६	[illegible]	[illegible]
९बृ.	१७	५	१८	४३	२०	३९	२२	५२	१	१०	३	२४	५	३७	७	५३	१०	१०	१२	१६	१४	२	[illegible]	[illegible]
१०शु.	१७	१	१८	३९	२०	३५	२२	४८	१	६	३	२०	५	३३	७	४९	१०	६	१२	१२	१३	५८	[illegible]	[illegible]
११श.	१६	५७	१८	३५	२०	३१	२२	४४	१	२	३	१६	५	२९	७	४५	१०	२	१२	८	१३	५४	[illegible]	[illegible]
१२सू.	१६	५३	१८	३१	२०	२७	२२	४०	०	५८	३	१२	५	२५	७	४१	९	५८	१२	४	१३	५०	[illegible]	[illegible]
१३च.	१६	४९	१८	२७	२०	२३	२२	३६	०	५४	३	८	५	२१	७	३७	९	५४	१२	०	१३	४६	[illegible]	[illegible]
१५मं.	१६	४६	१८	२४	२०	२०	२२	३३	०	५१	३	५	५	१८	७	३४	९	५१	११	५७	१३	४३	[illegible]	[illegible]

मिश्रमानकलिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

मि.मा.	स्प. सू.				स्प. च.				स्प. मं.				स्प. बु.				स्प. बृ.				स्प. शु.				स्प. श.				सा. रा.				सा. के.			
[illegible]	६	२	४८	३७	६	१९	४१	२७	९	२६	२४	३३	६	१२	३	६	७	१७	४	४०	६	२०	३३	१८	१	६	१४	४८	९	२०	४७	५८	३	२०	४७	५८
[illegible]	६	३	४८	२६	७	१	५२	३२	९	२६	५३	८	६	१३	४७	२४	७	१७	१६	३०	६	२१	४७	५८	१	६	१०	३८	९	२०	४४	४७	३	२०	४४	४७
[illegible]	६	४	४८	१७	७	१४	१३	८	९	२७	२१	५४	६	१५	३१	१६	७	१७	२८	२४	६	२३	२	३८	१	६	६	२४	९	२०	४१	३६	३	२०	४१	३६
[illegible]	६	५	४८	१०	७	२६	४५	४८	९	२७	५१	१८	६	१७	१४	३६	७	१७	४०	२४	६	२४	१७	१८	१	६	२	५	९	२०	३८	२६	३	२०	३८	२६
[illegible]	६	६	४८	६	८	९	३२	१९	९	२८	२०	४४	६	१८	५७	२३	७	१७	५२	२६	६	२५	३१	५८	१	५	५७	४१	९	२०	३५	१५	३	२०	३५	१५
[illegible]	६	७	४८	३	८	२२	३३	५७	९	२८	५०	१४	६	२०	३९	३३	७	१८	४	३४	६	२६	४६	३८	१	५	५३	१६	९	२०	३२	४	३	२०	३२	४
[illegible]	६	८	४८	३	९	५	५१	११	९	२९	२०	३६	६	२२	२१	३	७	१८	१६	४६	६	२८	१	१९	१	५	४८	४७	९	२०	२८	५३	३	२०	२८	५३
[illegible]	६	९	४८	६	९	१९	२३	३७	९	२९	५०	४७	६	२४	१	४९	७	१८	२९	१	६	२९	१६	०	१	५	४४	१४	९	२०	२५	४३	३	२०	२५	४३
[illegible]	६	१०	४८	१०	१०	३	१०	१०	१०	०	२१	२९	६	२५	४१	४३	७	१८	४१	१९	७	०	३०	४१	१	५	३९	३९	९	२०	२२	३२	३	२०	२२	३२
[illegible]	६	११	४८	१५	१०	१७	९	४	१०	०	५२	२९	६	२७	२०	४६	७	१८	५३	४२	७	१	४५	२३	१	५	३५	०	९	२०	१९	२१	३	२०	१९	२१
[illegible]	६	१२	४८	२३	११	१	१७	५४	१०	१	२३	४३	६	२८	५८	५१	७	१९	६	७	७	३	०	५	१	५	३०	१८	९	२०	१६	१०	३	२०	१६	१०
[illegible]	६	१३	४८	३४	११	१५	३७	४६	१०	१	५५	११	७	०	३५	५५	७	१९	१८	३६	७	४	१४	४७	१	५	२५	३३	९	२०	१३	०	३	२०	१३	०
[illegible]	६	१४	४८	४६	११	२९	५३	२०	१०	२	२६	४६	७	२	११	५१	७	१९	३१	८	७	५	२९	३०	१	५	२०	४५	९	२०	९	४९	३	२०	९	४९
[illegible]	६	१५	४९	०	०	१४	१२	४६	१०	२	५८	३२	७	३	४६	३४	७	१९	४३	४४	७	६	४४	१३	१	५	१५	५४	९	२०	६	३८	३	२०	६	३८

ति. १ बुधे—बुधचन्द्रयुतिः रे.घं. ६।३० चन्द्राद्दक्षिणे । अत्रैव शुक्रचन्द्रयुतिः रे.घं. २०।४८चन्द्रा द[illegible]

ति. ३ शुक्रे—गुरु चन्द्रयुतिः रे. घं. ०।४४ चन्द्रो दक्षिणे ।

ति. ९ गुरौ—कुज चन्द्रयुतिः रे. घं. ३।० कुजो दक्षिणे ।

ति. ४ शनौ

८ न. बु. ६
९ ७ सू.शु. ५
१० मं.रा. ४ के.
११ १ ३
१२ २ श.

ति. ११ शनौ

८ बृ.शु. ६
९ ७ सू बु. ५
१० रा. ४ के.
११ मं १ ३
१२ चं. २ श.

★ति. ३० कुजे—सायं प्रतिपत्सत्वात् बलिपूजा विधेया—वामनपुराणे बलिं प्रति त्रिविक्रम उवाच—वीरप्रतिपदा नाम तव भावीमहोत्सवः । तत्र त्वां नरशार्दूल नरा हृष्टाः स्वलंकृताः । पुष्पधूपप्रदानेन अर्चयिष्यन्ति तत्त्वतः । तत्रोत्सवो मुख्यतमो भविष्यति दिवानिशि ॥ पूजनान्ते प्रार्थयेत्—बलिराज नमस्तुभ्यं विरोचनसुत प्रभो । भविष्येन्द्र सुराराते पूजेयं प्रतिगृह्यताम् । बलिप्रशंसाविषये वामनवचनम् । भागवते—एवं दानवदैत्यानामग्रणीः कीर्तिवर्धनः । अजैषीदजयां मायां सीदन्नपि न मुह्यति ॥ क्षीणरिक्थश्च्युतः स्थानात् क्षिप्तो बद्धश्च शत्रुभिः । ज्ञातिभिश्च परित्यक्तो यातनामनुयापितः ॥ गुरुणा भर्त्सितः शप्तो जहौ सत्यं न सुव्रतः । छलैरुक्तो मयाधर्मो नाऽयं त्यजति सत्यवाक् । एष मे प्रापितः स्थानं दुष्प्रापममरैरपि । सावर्णेरन्तरस्यायं भवितेन्द्रो मदाश्रयः । तावत्सुतलमध्यास्तां विश्वकर्मविनिर्मितम् । यत्राधयो व्याधयश्च क्लमस्तन्द्रा पराभवः । नोपसर्गा निवसतां संभवन्ति ममेच्छया ॥ इन्द्रसेन महाराज याहि भो भद्रमस्तु ते । सुतलं स्वर्गिभिः सार्धं ज्ञातिभिः परिवारितः ॥ न त्वामभि भविष्यन्ति लोकेशाः किमुतापरे । त्वच्छासनातिगान्दैत्यांश्चक्रं मे सूदयिष्यति ॥ रक्षिष्ये सर्वतोऽहं त्वां सानुगं सपरिच्छदम् । सदा सन्निहितं वीर तत्र मां द्रक्ष्यते भवान् ॥ संपूर्णा बलिकथा भागवते ८ स्कन्धे २३ अ. द्रष्टव्या ॥ अन्नकूटगोवर्धनपूजाविषये व्रतराजे श्रीकृष्ण उवाच—एतत्सेवाप्रभावेण बलं लब्धं मया महत् । प्रतिसंवत्सरं तस्मादन्नकूटो विधीयताम् । गवां भवति कल्याणं पुत्रपौत्रादिसंततिः । ऐश्वर्यं च सदा सौख्यं भवेद् गोवर्धनोत्सवात् ॥ गोवर्धनपूजने मन्त्रः । गोवर्धन धराधार गोकुलत्राणकारक । बहुबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव । ततश्च गोपूजने मन्त्रो—लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता । घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ॥ अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ गोपूजने फलमुक्तम्—महाभारते-गावः श्रेष्ठाः पवित्राश्च पावन्यो जगदुत्तमाः । ऋते दधिघृताभ्यां च नेह यज्ञः प्रवर्तते ॥ पयसा हविषा दध्ना सकृताऽप्यथ चर्मणा । अस्थिभिश्चोपकुर्वन्ति वालैः शृङ्गैश्च भारत ॥ गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत । कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चाऽपि पार्थिव । गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं परम् । गावो लक्ष्म्यः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते । मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वशुभप्रदाः ॥ द्वितीयायां—स्नेहेनभगिनीहस्ताद् भोक्तव्यं पुष्टिवर्धनम् । दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विशेषतः ॥ ति. ९ गुरौ अक्षयनवम्यां दानादि कृते अक्षयपुण्याप्तिः । अस्याम् ॐधात्र्यै नमः—इत्यादि मन्त्रैः—धात्रीपूजां कृत्वा । पिता पितामहश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः । ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः । आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः । ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः ॥ इत्यादिना पितॄन् तर्पयेत् ततः सूत्रबन्धनपरिक्रमापुरस्सरं—दामोदरनिवासायै धात्र्यै देव्यै नमोनमः । सूत्रेणाऽनेनबन्धनामि धात्रि देवि नमोऽस्तुते—इति परिक्रमादिकं विधाय कूष्माण्ड[illegible] धृत्वा पुष्पादिना सम्पूज्य—कूष्माण्डं बहुबीजाढ्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा । दास्यामि [illegible] राजाय च—इति ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ततश्चैकादश्यां - ब्रह्मेन्द्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दित वन्दनीयः । बुद्धयस्व देवेश जगन्निवास मंत्रप्रभावेण सुखेन देव । इयन्तु द्वादशी देव प्रबोधार्थं विनिर्मिता ॥ तवैव—सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते । त्वयि सुप्ते जगन्नाथ [illegible] चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव । गता मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः । शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव । अयं विधिरिति प्रोक्तो मन्त्र उत्थापने हरेः । इत्यादिना हरि प्रार्थ्य संबोधयेत्—ततः पूर्णिमायां चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिश्च कार्या । कृत्तिकानक्षत्रयोगाद्विशेषफलमुक्तं यथा—आग्नेयन्तु यदा ऋक्षं [illegible] कर्तव्यस्त्रिपुरोत्सवः । दद्यादनेन मन्त्रेण प्रदीपांश्च सुरालये । कीटाः पतङ्गाः मशकाश्च वृक्षाः । जले स्थले ये विचरन्ति जीवाः । दृष्ट्वा प्रदीपं न च जन्मभागिनो भवन्ति नित्यं श्वपचा हि विप्राः । कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे कार्तिकेयदर्शनम् ।

तेजोऽसितेजोमयिधेहि । वीर्यमसिवीर्यमे धेहि ॥ बलमसि बलं मे धेहि बलंवाऽवविज्ञानद्भूयोऽपिह शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते ॥ नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः । सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया । बलवन्तंप्रतिष्ठार्हमात्मानं सततं कुरु ॥ दृतेदृंहमामित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा	घ.	प.		घं.	मि.	न.	घ.	प.		घं.	मि.	यो.	घ.	प.		घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	योगः	अं.	फा.	वं.	फ.	रा.	चन्द्रराशिसंचारः रा.	घ.	प.	घं.	मि.	सूर्योदय		सूर्यास्त		र. का. द.		चन्द्रोदय घं.	मि.
२८	४७	१	वृ.	५	२०	ग्रा	८	२३	उ.	५८	४	ग्रा	५	२८	वृ.	६	४६	दि	८	५७	कौ.	५	२०	८	२३	तै.	३७	१२	२१	७	प्र. मा.	१	१४	१७	१	११	क.	९	२४	१०	०	६	१५	५	४५	७	३८	१९	९
२८	५१	२	वृ.	९	४	दि	९	५२	ह.	६०	०	स	×	×	ग.	६	५३	दि	८	५९	ग.	९	४	९	५२	व.	४१	२३	२२	४७	रक्ष	२	१५	१८	२	१२						६	१४	५	४६	७	१५	२०	१
२८	५५	३	शु.	१३	४२	द्वि	११	४२	ह	३	५२	ग्रा.	७	४६	गं.	७	४२	दि.	९	१८	वि	१३	४२	११	४२	व.	४६	११	०	४५	अमृत	३	१६	१९	३	१३	तु.	३७	१	२१	१	६	१३	५	४७	६	५२	२०	५४
२८	५८	४	श	१८	५६	द्वि	१३	४७	चि.	१०	१०	दि.	१०	१६	वृ.	८	५७	दि.	९	४७	वा.	१८	५६	१३	४७	कौ.	५१	४०	२	५२	काँण	४	१७	२०	४	१४						६	१२	५	४८	६	२९	२१	४८
२९	२	५	सू.	२४	२४	[illegible]		५७	स्वा	१६	५६	दि.	१२	५८	ध्रु.	१०	२४	दि.	१०	२१	तै.	२४	२४	१५	५७	ग.	५६	५७	४	५९	लुम्ब	५	१८	२१	५	१५						६	१२	५	४८	६	६	२२	४२
२९	६	६	चं.	२९	३०	रा	१७	५९	वि	२३	२०	दि	१५	३१	व्या	११	४१	दि.	१०	५१	व.	२९	३०	१७	५९	वि	६०	०	×	×	मित्र	६	१९	२२	६	१६	वृ.	६	४४	८	५२	६	११	५	४९	५	४३	२३	३६
२९	९	७	मं.	३३	५५	रा.	१९	४४	अ.	२९	५	दि	१७	४८	[illegible]	१२	३४	दि.	११	१२	वि.	१	४३	५	५१	व.	३३	५५	१९	४४	वज्र	७	२०	२३	७	१७						६	१०	५	५०	५	१९	२	३२
२९	१३	८	बु.	३७	२१	रा	२१	६	ज्ये	३३	५५	रा.	१९	४३	व.	१२	४७	दि.	११	१६	रा	५	३८	८	२२	कौ.	३७	२१	२१	६	ध्वांक्ष	८	२१	२४	८	१८	ध.	३३	५५	१९	४३	६	९	५	५१	४	५६	१	२६
२९	१७	९	गु.	३९	३७	रा.	२१	५९	मू.	३७	३७	रा		११	सि.	१२	९	दि.	११	०	तै.	८	२९	९	३२	ग.	३९	३७	२१	५९	ध्र	९	२२	२५	९	१९						६	९	५	५१	४	३२	२	१७
२९	२१	१०	शु.	४०	३७	रा.	२२	२२	पू	४०	६	रा	२२	१०	व्य	१०	३६	दि.	१०	२२	व.	१०	७	१०	११	वि.	४०	३७	२२	२२	प्र. मा.	१०	२३	२६	१०	२०	म.	५५	२५	४	१८	६	८	५	५२	४	९	३	४
२९	२४	११	श	४०	२०	रा	२२	१५	उ.	४१	२२	रा	२२	४०	व.	८	४	दि.	९	२१	व.	१०	२८	१०	१९	बा	४०	२०	२२	१५	रक्ष	११	२४	२७	११	२१						६	७	५	५३	३	४५	३	४७
२९	२८	१२	सू.	३८	४१	रा	२१	३८	श्र.	४१	२४	रा	२२	४०	प.	४	३३	रा	७	५६	कौ.	९	३५	९	५६	तै.	३८	४१	२१	३८	गद	१२	२५	२८	१२	२२						६	६	५	५४	३	२२	४	२७
२९	३२	१३	चं.	३६	१२	रा	२०	३४	ध.	४०	२४	रा.	२२	१५	शि.	० ५४	७ ४३	प्रा.	२ ६	५ ६	ग.	७	३०	९	६	व.	३६	१२	२०	३४	शुभ	१३	२६	२९	१३	२३	कुं.	१०	५४	१०	२७	६	६	५	५४	२	५८	५	६
२९	३५	१४	मं.	३२	३४	रा	१९	६	श.	३८	२४	रा	२१	२६	सा.	४८	४८	रा.	१	३६	वि	४	२३	३	५०	श.	३२	३४	१९	६	मृत्यु	१४	२७	१	१४	२४						६	५	५	५५	२	३५	५	४०
२९	३९	३०	बु.	२८	५	सा.	१७	१८	पू	३५	३६	रा	२०	१९	शु.	४२	८	रा.	२२	५५	च.	०	१९	६	१२	ना	२८ ५५	५ ३०	१७ ४	१८ १६	पद्म	१५	२८	२	१५	२५	मी.	२१	१८	१४	३५	६	४	५	५६	२	११	[illegible]	[illegible]

श्रीशुभसंवत् २०२ शाकः १८९३ चैत्रकृष्णपक्षः (मार्च ता० १···१५ सन् १९७२) सौम्यायनं, याम्यगोलः, शिशिरर्तुः ।

इष्टिः ।·होली (प्रतिपद्युदितेरवावित्युक्तेः) । वसन्तोत्सवः । रजोत्सवः । श्वपचस्पर्शः । होलिकाभस्मधारणम् । चूतकुसुमप्राशनम् । तैलाभ्यङ्ग-*
भ. ४१।२३ (रा. २२।४७) उ. । अद्य पुंसवनसीमन्तोन्नयनप्रसूतिकास्नाननववस्त्रभूषाधारणजातकर्मनामकरणान्नप्राशनविपणिव्यापारा
भ. १३।४२ (दि. ११।४२) या. । गणेश ४ व्रतम् । अद्य हस्ते विष्टिदोषाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । पूर्वभाद्रपदायां रविः ५४।२३ । भर. ३ च.•
अ । पञ्चम्यां सामान्यशुभकर्मणां मुहूर्तोऽन्वेष्यः । उत्तरभाद्रपदायां बुधः १।८ । ‡योगः । पू. भा. २ च. रविः १३।५९ । ¶५१।४० ।
प्रसूतिकास्नानभैषज्यसेवनसुभगेतररक्तवस्त्रधारण मु । उपनयन मुहूर्तश्च । अश्वि. ३ च. शुक्रः ४८।४२ । •कुजः ३६।४९ ।
भ. २९।३० (सा. १७।५९) उ. । उ. भा. २ च. बुधः २४।३६ । §मीने चार्कः ५४।२३ । कृत्तिका भे कुजः ४५।२२ । □४५।३१ ।
भ. १।४३ (प्रा. ६।५१) या. । अद्य विष्टेः परं प्रसूतिकास्नानसुभगेतररक्तवस्त्रधारणोत्तराभिहायान्यदिग्गमनम् । अष्टम्यां स्थायीकार्याद्यं‡
अद्य ज्येष्ठायां नृत्यारम्भसूचीकर्मशिशोस्ताम्बूलभक्षणादि मु. । भ. ४ च. कुजः ४१।११ । उ. भा. ३ च. बुधः ५९।१५ । अश्वि ४ च. शुक्र¶
रिक्ताव्यतिपातादिदोषसत्वाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । शत. २ च. राहुः पुष्य ३ च. च केतुः ३९।५९ । §३४।० । पू.षा. २ च. गुरुः ४०।२३ ।
भ. १०।७ (दि. १०।११) उ. ४०।३७ (रा. २२।२२) या. । रात्रिशेषे उत्तरायां नवाम्बरधारणविपणिव्यापारादि मु. । पू. भा. ३ च. रविः§
पापमोचनी ११ एकादशी व्रतं सर्वेषाम् । अद्य दक्षिणदिग्यात्रायां लग्नं चिन्त्यम् । उ. भा. ४ च. बुधः ५२।९ । भरणी भे शुक्रः ५६।३६ ।
तिथिदानात् श्रवसि दक्षिणदिग्यात्रा शुभा । ‡जलाशयारामसुरप्रतिष्ठादि मु. । उपनयने लग्नं चिन्त्यम् । वधूप्रवेशद्विरागमनयोर्मु. । अश्वि.
भ. ३६।१२ (रा. २०।३४) उ. । प्रदोषः । मासशिवरात्रिः । वारुणी । अद्य जातकर्मनामकरणान्नप्राशनभैषज्यसेवनादि मु. । पू. भा. ४ च.§
भ. ४।२· (प्रा. ७।५०) या. । बङ्ग चैत्रारम्भः । रिक्ताविषुक्षयादिदोषसत्वाच्छुभकर्ममुहूर्ताभावः । रेवती भे बुधः । २०।२९ ।
स्नानदानश्राद्धादौदर्शः ३० । रात्रिशेषे प्रतिपदि नवाम्बरधारणविपणिव्यापारादि मु. । भर. २ च. शुक्रः ४।३ । ‖२ च. शुक्रः ४७।४४ ।
*पुंसवन[illegible]नम् । अद्य द्वितीयागतमतीस्नानजातकर्मनामकरणान्नप्राशननववस्त्रभूषाधारणविपणिव्यापारादि मु. । पू. भा. ४ च. मीने च बुधः□

चैत्रकृष्णपक्षः

ति. १ वृषे उ.फा. भे. ।।।।ऽ।।। रे. ९ ल. गो. ।
" २ गुरौ हस्त भे विष्टेः पूर्वं ।ऽ।।ऽ।।। रे. ८. ल. गोधूलिः ।
" ३ शुक्रे हस्त भे मृत्युबाणव्याप्तेर्लग्नाभावः ।
" ४ शनौ स्वात्यां ।।।।ऽऽ।। रे. ८ ल. गो. वा ल. १ ने. दा. ।
" ५ रवौ स्वात्यां रे. ७ दि. ल. चि. ।
" ६ चन्द्रे मैत्रे कुजनेत्रः विष्टिदोषश्च ।
" ७ भौमे मैत्रे भौमवेधाल्लग्नाभावः ।
" ८ बुधे मूल भे ।।।।ऽ।।। रे. ९ ल. गो. वा ९ ने. दा. ।
" ९ गुरौ मूल भे रे. ८ व्यतिपातात्पूर्वं ल. चि. ।
" १० शुक्रे उ. षा. भे. ।।।ऽऽ।।। रे. ७ ल. ९ ने. दा. ।
" ११ शनौ उ. षा. भे रे. ७ ल. गो. ।
अतः परं विवाहमुहूर्ताभावः

मभूत्तत्र जनौघैरभिसंवृतम् ॥ वैशम्पायन उवाच-एवमुक्तस्तदा भीमो जरासन्धमरिन्दमम् । उत्क्षिप्य भ्रामयामास बलवन्तं महाबलम् । भ्रामयित्वा शतगुणं जानुभ्यां भरतर्षभ । बभञ्ज पृष्ठं संक्षिप्य निष्पिष्य विननाद च ॥ [illegible]नादिप्रमुक्ताश्च राजानो मधुसूदनम् । पूजयामासुरूचुश्च स्तुतिपूर्वमिदं वचः ॥ नैतच्चित्रं महाबाहो त्वयि देवकिनन्दने । भीमार्जुनबलोपेते धर्मस्य प्रतिपालनम् ॥ रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुच ँ राजसु नस्कृधि । रुचं विश्वेषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ॥ ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।

दैनिक लग्नसारिणी

तिथ्य.	मे.	प्र	वृ.	प्र	मि.	प्र.	क.	प्र.	सि.	प्र	क.	प्र.	तु.	प्र	वृ.	प्र.	ध.	प्र.	म.	प्र.	कुं.	प्र	मी.	
१बु.	८	२६	१०	४	१२	०	१४	१३	१६	३१	१८	४५	२०	५८	२३	१४	१	३१	३	३७	५	२३	६	[illegible]
२वृ.	८	२२	१०	०	११	५६	१४	९	१६	२७	१८	४१	२०	५४	२३	१०	१	२७	३	३३	५	१९	६	[illegible]
३शु.	८	१८	९	५६	११	५२	१४	५	१६	२३	१८	३७	२०	५०	२३	६	१	२३	३	२९	५	१५	६	[illegible]
४श.	८	१४	९	५२	११	४८	१४	१	१६	१९	१८	३३	२०	४६	२३	२	१	१९	३	२५	५	११	६	[illegible]
५सू.	८	११	९	४९	११	४५	१३	५८	१६	१६	१८	३०	२०	४३	२२	५९	१	१६	३	२२	५	८	६	४०
६चं.	८	७	९	४५	११	४१	१३	५४	१६	१२	१८	२६	२०	३९	२२	५५	१	१२	३	१८	५	४	६	३६
७मं.	८	३	९	४१	११	३७	१३	५०	१६	८	१८	२२	२०	३५	२२	५१	१	८	३	१४	५	०	६	३२
८बु.	७	५९	९	३७	११	३३	१३	४६	१६	४	१८	१८	२०	३१	२२	४७	१	४	३	१०	४	५६	६	२८
९बृ.	७	५५	९	३३	११	२९	१३	४२	१६	०	१८	१४	२०	२७	२२	४३	१	०	३	६	४	५२	६	[illegible]
१०शु.	७	५१	९	२९	११	२५	१३	३८	१५	५६	१८	१०	२०	२३	२२	३९	०	५६	३	२	४	४८	६	[illegible]
११श.	७	४७	९	२५	११	२१	१३	३४	१५	५२	१८	६	२०	१९	२२	३५	०	५२	२	५८	४	४४	६	[illegible]
१२सू.	७	४४	९	२२	११	१८	१३	३१	१५	४९	१८	३	२०	१६	२२	३२	०	४९	२	५५	४	४१	६	[illegible]
१३चं.	७	४०	९	१८	११	१४	१३	२७	१५	४५	१७	५९	२०	१२	२२	२८	०	४५	२	५१	४	३७	६	९
१४मं.	७	३६	९	१४	११	१०	१३	२३	१५	४१	१७	५५	२०	८	२२	२४	०	४१	२	४७	४	३३	६	५
३०बु.	७	३३	९	११	११	७	१३	२०	१५	३८	१७	५२	२०	५	२२	२१	०	३८	२	४४	४	३०	६	२

ति. १० शुक्रे—गुरुचन्द्रयुतिः रे. घं. ३।२७ चन्द्रोऽधिकः ।

मिश्रमानकालिका दैनिक स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयंग्रहान्तरं [illegible]तिः

मि. मा.		स्प. सू.				स्प. च.				स्प. मं.				स्प. बु.				स्प. बृ.				स्प. शु.				स्प. श.				स्प. रा.				स्प. के.			
४५	१	१०	१७	५०	१२	५	७	२०	५०	०	१८	४६	१७	१०	२९	५९	१५	८	१५	१६	४७	०	२	१०	१४	१	[illegible]	११	५१	९	१३	४५	९	३	१३	४५	९
४५	४	१०	१८	५०	२८	५	१९	३३	७	०	१९	२५	४८	११	१	२९	७	८	१५	२६	३६	०	३	१७	२	१	[illegible]	१५	५२	९	१३	४१	५८	३	१३	४१	५८
४५	६	१०	१९	५०	४२	६	१	३८	२३	०	२०	५	२७	११	२	५७	३	८	१५	३६	१८	०	४	२३	३७	१	[illegible]	१९	५९	९	१३	३८	४७	३	१३	३८	४७
४५	९	१०	२०	५०	५६	६	१३	३१	५८	०	२०	४४	४६	११	४	२२	५८	८	१५	४५	५२	०	५	३०	३	१	[illegible]	२४	१२	९	१३	३५	३६	३	१३	३५	३६
४५	११	१०	२१	५१	८	६	२५	४१	४३	०	२१	२४	१७	११	५	४६	२७	८	१५	५५	१९	०	६	३६	१९	१	[illegible]	२८	३२	९	१३	३२	२६	३	१३	३२	२६
४५	१३	१०	२२	५१	१९	७	७	४७	२७	०	२२	३	४६	११	७	८	३	८	१६	४	४०	०	७	४२	२	१	[illegible]	३२	५८	९	१३	२९	१५	३	१३	२९	१५
४५	१६	१०	२३	५१	२७	७	२०	०	२७	०	२२	४३	१५	११	८	२६	५२	८	१६	१३	५२	०	८	४७	३७	१	१	३७	२७	९	१३	२६	४	३	१३	२६	४
४५	१८	१०	२४	५१	३१	८	२	२३	३६	०	२३	२२	४३	११	९	४२	५८	८	१६	२२	५७	०	९	५३	५	१	१	४२	४	९	१३	२२	५३	३	१३	२२	५३
४५	२१	१०	२५	५१	३३	८	१४	५९	१५	०	२४	२	९	११	१०	५६	१०	८	१६	३१	५४	०	१०	५८	२३	१	१	४६	४६	९	१३	१९	४३	३	१३	१९	४३
४५	२३	१०	२६	५१	३३	८	२७	४९	८	०	२४	४१	३७	११	१२	६	१५	८	१६	४०	४४	०	१२	३	३१	१	१	५१	३३	९	१३	१६	३२	३	१३	१६	३२
४५	२६	१०	२७	५१	२०	९	१०	५४	१८	०	२५	२१	४	११	१३	१२	५६	८	१६	४९	२६	०	१३	८	०	१	१	५६	२५	९	१३	१३	२१	३	१३	१३	२१
४५	२८	१०	२८	५१	१६	९	२४	१५	१	०	२६	०	२९	११	१४	१६	२	८	१६	५८	१	०	१४	१२	२९	१	२	१	१९	९	१३	१०	११	३	१३	१०	११
४५	३१	१०	२९	५१	९	१०	७	५०	४६	०	२६	३९	५४	११	१५	१५	१८	८	१७	६	२७	०	१५	१६	३३	१	२	६	२२	९	१३	७	०	३	१३	७	०
४५	३३	११	०	५०	५९	१०	२१	४०	१९	०	२७	१९	१८	११	१६	१०	२७	८	१७	१४	४५	०	१६	२०	२५	१	२	११	३१	९	१३	३	४९	३	१३	३	४९
४५	३६	११	१	५०	४८	११	५	४१	४३	०	२७	५८	४२	११	१७	१	१२	८	१७	२२	५४	०	१७	२३	५८	१	२	१६	४५	९	१३	०	३८	३	१३	०	३८

ति. ४ शनौ

बु. १२	११ सू.	१० रा.
शु. मं. १	श. २	९ बृ.
३	५	८
४ के.	६	७ चं.

ति. ११ शनौ

बु. १२	११ सू.	१० चं. रा.
शु. मं. १	श. २	९ बृ.
३	५	८
४ के.	६	७

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्, पथ्याशी व्यायामी स्त्रीषु जितात्मा नरो न रोगी स्यात् । यदि मनसा वचसा वा द्रुह्यति नैव भूतेभ्यः ॥ हिताशी स्यान्मिताशी स्यात् कालभोजी जितेन्द्रियः । पश्यन् रोगान् बहून् क्लेशान् बुद्धिमान् विषमाशनात् ॥ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ योगः कर्मसु कौशलम् ॥ काले हितं मितं सत्यं संवादि मधुरं वदेत् । भुञ्जीत मधुरप्रायं काले स्निग्धं हितं मितम् ॥ अथ व्यायामप्रशंसायां सुश्रुतः—शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम् । तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात् समन्ततः ॥ शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता । दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥ श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता । आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते ॥ न चास्ति सदृशं तेन किंचित् स्थौल्यापकर्षणम् । न च व्यायामिनं मर्त्यं मर्दयन्त्यरयो भयात् ॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति । स्थिरी-

भवति मांसञ्च व्यायामनिरतस्य च ॥ व्यायामक्षुण्णगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च । व्याधयो नोपसर्पन्ति सिंहं क्षुद्रमृगा इव । वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् । व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते । [illegible] व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् । स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥ सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुंभिरात्महितैषिभिः । बलस्यार्धेन कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा । हृदि स्थानस्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते । व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम् । वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च । समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोग[illegible] ॥ क्षयतृष्णारुचिच्छर्दिरक्तपित्तभ्रमक्लमाः । कासशोषज्वरश्वासा अतिव्यायामसम्भवाः ॥ रक्तपित्ती कृशः शोषी श्वासकासक्षयातुरः । भुक्तवान् स्त्रीषु च क्षीणो भ्रमा[illegible]वर्जयेत् ॥ प्राचीनकाले सर्वेषामेवार्याणां मल्लयुद्धमभिमतमासीत् भगवान् कृष्णस्तु मल्लानामशनिरिति श्रीमद्भागवते प्रसिद्धा, तेनैव मल्लयुद्धेन मुष्टिको हतः [illegible] चाणूरो हतः तद्वर्णनं भागवते १० स्कं, ४४ अ. एवं वर्णितस्तत्कल्पो भगवान्मधुसूदनः ॥ आससादाथ चाणूरं मुष्टिकं रोहिणीसुतः ॥ हस्ताभ्यां हस्तयोर्बद्ध्वा [illegible] विचकर्षतुरन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया ॥ अरत्नी द्वे अरत्निभ्यां जानुभ्यां चैव जानुनी । शिरः शीर्ष्णोरसोरस्तावन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ परिभ्रम[illegible] भवेत् च पादयोः । उत्सर्पणोपसर्पणैश्चान्योन्यं प्रत्यरुन्धताम् । उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैः स्थापनैरपि । परस्परं जिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ॥ भीमसेनस्य जरासन्धेन सह [illegible] नभो मंक्ष्वावपातनः । [illegible] मल्लयुद्धमभूत् तस्य वर्णनं महाभारते सभापर्वणि जरासन्धं प्रति श्रीकृष्णः—त्वयाह्वयामहे राजन् स्थिरो युद्धस्व मागध । मुञ्च वा नृपतीन् सर्वान् [illegible] जरासन्ध उवाच—भीम योत्स्ये त्वया सार्धं श्रेयसा निर्जितं परम् ॥ ततः सम्मन्त्र्य कृष्णेनकृतस्वस्त्ययनो बली । भीमसेनो जरासन्धमाससाद युयुत्सया । [illegible] ततौ परस्परं संरब्धावन्योन्यजयकाङ्क्षिणौ ॥ करग्रहणपूर्वं तु कृत्वा पादाभिवन्दनम् । कक्षैः कक्ष्यां विधुन्वानावास्फोटं तत्र चक्रतुः ॥ स्कन्धे दोर्भ्यां समाहत्य निहत्य च मुहुर्मुहुः । अङ्गमङ्गैः समाश्लिष्य पुनरास्फालनं विभो । चित्रहस्तादिकं कृत्वा कक्षाबन्धं च चक्रतुः । गल[illegible]हितै कर्णयुगले [illegible]शार्दूलौ बद्धवली समीयतुः । बाहुपाशादिकं कृत्वा पादाहतशिरावुभौ । उरोहस्तं ततश्चक्रे पूर्णकुम्भौ प्रयुज्यतौ ॥ करसम्पीडनं कृत्वा गर्जन्तौ वारणाविव । नर्दन्तौ मेघसङ्काशौ बाहुप्रहरणावुभौ ॥ तलेनाहन्यमानौ तौ अन्योन्यं कृतवीक्षणौ । सिंहाविव सुसंक्रुद्धावाकृष्याकृष्य युध्यताम् । अङ्गमङ्गैः समाश्लिष्य [illegible] बाहुभ्यामू[illegible]जङ्घादिषु ॥ छिद्रप्रीतिरछायायां [illegible] रज्ज्व प्रचक्रतुः ॥ उभौ कट्यां सुपार्श्वे तु तक्षवन्तौ सुपिण्डितौ । अधो हस्तं स्वकण्ठे तूदरस्योरसि चाक्षिपत् ॥ सर्वातिक्रान्तमर्यादं पृष्ठभङ्गं च चक्रतुः । सम्पूर्णमूर्च्छां बाहुभ्यां पूर्णकुम्भं प्रचक्रतुः ॥ [illegible] पूर्वगात्रं समुष्टिकम् । एवमादीनि युद्धानि प्रकुर्वन्तौ परस्परम् ॥ तयोर्युद्धं [illegible] सुहृद्बान्धवमल्लपत्तीम् । नगरजन्तिनश्युपत[illegible] वणिकस्तैव क्षत्रियाश्च सहस्रशः । शूद्राश्च नरशार्दूलस्त्रियो वृद्धाश्च सर्वशः । निरन्तरं

आयुस्सम्बन्धिनिर्णयः

अथजन्मकालाद्दीर्घादि ३ भेदानामत्रचरादि-

राशिवशादायुर्बोधकचक्रमिदम् ॥

दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः ॥
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः द्विस्वभावे ३ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः ॥
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावे ३ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः स्थिरभे २ रन्ध्रेशः
दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः ॥
द्विदेहभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः	द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः

अथायुर्निर्णयं चक्रानुसारेण ॥ जन्मलग्नाष्टमेशाभ्यां लग्नसप्तमयोः स्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां लग्नहोरालग्नाभ्यां चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णेतव्यम् ॥ प्रकारत्रयेऽप्येकरूपायुष्यागते तदेवग्राह्यम् ॥ विभेदे प्रकारद्वयागतमायुर्ग्राह्यम् ॥ त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् ॥ जन्मलग्ने विषमे द्वितीयाष्टमावीलयोर्यो बली,लग्ने समे द्वादशषष्ठाधीशयोर्मध्ये योबली तस्य केन्द्रे स्थित्यादीर्घायुः, पणफरे स्थित्यामध्यायु, आपोक्लिमे स्थित्याहीनायुरेव । एवमेवात्मकारकवशेनापिनिणतव्यम् । अष्टमेशयोः कारकेण सहैक्ये वा योगे सर्वदा मध्यमायुरेव ॥ विषमे जन्मलग्ने कारकः तृतीये समे जन्मलग्नेकारकःएकादशेभवेत्तदा कारकायुषि केन्द्रे हीनायुःपणफरे मध्यायुः आपोक्लिमेदीर्घायुरिति । लग्नदशमाष्टमानीवाःकेन्द्रविकोणलाभगाः तदा दीर्घायुः । लग्नेशोऽरवैमित्रंदीर्घायुः समश्चेन्मध्यायुः, शत्रुश्चेदल्पायुरिति ॥ सारण्युदाहरणम् ॥ कस्यचिज्जन्मेष्टम् २८।१५ जन्मलग्नं ७।३।५६।५४ होरालग्नं १।१०।२१।१ लग्नेशो भौमः ६।१९।३०।३० अष्टमेशो बुधः २।३।१।४७ चन्द्रः १०।१६।२।०।० अत्रलग्नेशाष्टमेशयोः प्रथमात्यायोः स्थित्या अल्पायुः । मन्देन्दुभ्यामल्पायुः । लग्नहोरालग्नाभ्याममल्पायुः । एवमल्पायुरेवसिद्धम् । तत्रभौम-बुध-लग्न-चन्द्र-लग्न होरालग्नानां षण्णामंशानां योगफलम्‌ः९।३१-११ अत्रांशाना वर्षादिफलं ९।७।६ कलानां मासादि, ६।१८।२४ विकलानां दिनादि १।१०।२४ तेषामैकार्पणेनात्स्यानयोगादमेकवर्षादि १०।१।२५।१ ३४।२४ अल्पायुषि धुवं सप्तमायुषो भोग्य वर्षादिकम् २१।१०।८।२५।३६ एवमेवमेभोग्यांशेरपि भवेदिति ॥ एवम् ३३।४० वर्ष खण्डमानापि ॥

जैमिनीयसूत्रोक्तायुस्साधने अंशफलज्ञानाय सारिणीयम् ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

जैमिनीयसूत्रोक्तायुस्साधने कलाफलज्ञानायसारिणीयम् ॥

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीयसूत्रोक्तायुः साधने विकलाफल सारिणीयम् ॥

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

अथविवायुर्योगोऽस्ति ॥ तदाह ॥ विविधायुर्योगाः स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमाः ॥ द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत् ॥१॥ चतुःषष्ठ्यायुरुत्तमं ततोदीर्घमुदाहृतम् ॥ उत्तमायुः शतादूर्ध्वमिति । अथालाद्यायुस्तयेपिविधायुर्योगोऽस्ति तदाह ॥ अल्पायुस्त्वम[illegible]षिविधं भवेत् ॥ मध्यमादल्पमध्यं च पूर्णायुस्त्रिविधं भवेत् ॥ दीर्घायुरल्पमध्यंतुपूर्णायुस्त्रिविधंभवेत् । एव नवविधं प्र[illegible]पूर्णायुर्विनिर्णये ॥ अल्पायुर्योगजातस्य विपद्वर्षे तु निर्भवेत् ॥ जातस्यमध्यमेयोगस्यप्रत्यरौतु मृतिर्भवेत् ॥ दीर्घायुर्योगजातानां [illegible]नैधनेभवेत् ॥ विपद्योगेगुरुवेषुइत्येकं त्रिविधंभवेदिति ॥ अथ मारकस्थानाद्युत्पन्नयोजनिमाह ॥ अष्टमर्क्षं तृतीयस्थं [illegible]हृतम् । द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ क्वचिद् रोगेशद्वयेशांष्टमेशादासपि मारकसम्भवः परस्परषष्ठा[illegible]न शोभनम् । मारको मारकांतरसंशोभनम् कर्याद्वितीयेबाद्धग्रहाः संबन्धतः फलप्रदाः लग्ने-शदशा[illegible]रककारिणी पापदशात्वनिष्टेति ।

अथा[illegible]दि सप्तग्रहे पुर्णांशात्रिकस आत्मा [illegible] मातृलितपुत्रजातिकारकाः भवति द्वयोरनुत्थस्ये [illegible]पितकारक इति । एवविधकारकांजैमिनी द्रष्टव्याः । अथ होरालग्नानयनम्—इष्टेष्ट नाडय[illegible] यथा रवौ होरोदयो भवेत्—इति वास्तविकं होरालग्नावकम् ॥ विषमेष्ठ रवौयुक्तं [illegible]विचार्यतिदूर्नं यदि सर्वाः लग्ना[illegible]

सत्याचार्यं मतानुसाराज्जन्मकालिकराश्यादिस्पष्टलग्नस्य ग्रहाणां च अंशायुः साधनाय सारिणीयम् ॥

अंशाः		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंशाः
राशयः	०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	वर्ष
	४	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	८	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
राशयः	५	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	वर्ष
	१	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	९	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
राशयः	२	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	वर्ष
	६	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	१०	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन
राशयः	३	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	वर्ष
	७	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	मास
	११	०	८१	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	दिन

अथात्र-अंशायुस्साधने कलाफलज्ञानाय सारिणीयम् ॥

क.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
दिन	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	०	२	४
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
क.को.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
मास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
दिन	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	१	३	४	६	८	१०
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
क.को.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मास	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिन	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६
घटी	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

अथात्रसत्योक्तांशायुस्साधनेविकलाफलज्ञानाय सारिणीयम् ॥

वि.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घटी	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३४
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
वि.को.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घटी	३६	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	५०	५२	५४	५५	५७	५९	१	३	४	६	८	१०
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
वि.को.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
दिन	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घटी	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४०	४२	४४	४६
पल	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

शनैश्चरण विचारः—शनैश्चरस्य राश्यन्तरगमनदिने जन्मराशितश्चन्द्रे यत्संख्यातुल्येतद्वशेनपादं ज्ञेयम्—यथा जन्माङ्कषड्रेषु १।६।११ सुवर्णपादम् । द्विपञ्चनन्दैः २।५।९ रजतस्य पादम् । त्रिसप्त दिक् ३।७।१० ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसार्केष्विह ४।८।१२ लौहपादम् ॥ तत्फलं च । लोहे धन विनाशः स्यात्सर्वं सौख्यञ्च कांचनं । ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत् । इति शिष्टाः ॥

आसन्नमृत्युलक्षणम्—अरुन्धतीं ध्रुवं चैव नभो मंदाकिनी तथा । स्वनासाग्रंच चन्द्रार्कमायुर्हीनो न पश्यति ॥ पांसुपङ्कादिषु न्यस्तं चरणं [illegible]तं यदि । स्नानाम्बुलिप्तगात्रस्य यस्यास्यं प्राक्प्रशुष्यति ॥ गात्रेष्वार्द्रेषुसर्वेषु सूर्यादिग्रहदर्शनम् । स्वर्णप्रतीतिर्धूलिषुस्वप्नदानामदर्शनम् । पिहिते कर्णयुगले यस्य घोषानश्रुतिः । अदर्शनं स्वशिरसः प्रतिबिम्बजलादिषु ॥ छिद्रप्रतीतिश्छायायां स चिरं नैवजीवति ॥ दीपं निर्वाप गन्धञ्च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम् । नजिघ्रन्तिन शृण्वन्ति[illegible]ते गतायुषः ।

सत्योक्तसारण्योक्तः अंशायुस्साधनायअत्र सनियमोदाहरणम् ॥

तत्रादौ कर्मभूमौ सलग्नान्सप्तान् रव्यादिग्रहखेटान्विलिख्य । यस्य यस्य ग्रहस्यायुस्साध्यते तस्य राश्यंशकोष्ठकस्थितवर्षादि फलं तथा कलाकोष्ठकस्थमासादिफलं विकलासारिणीकोष्ठ[illegible]स्थदिनादिफलं च स्वस्थाने विलिख्य यथास्थानसर्वाङ्कानां योगं समानजातीयानां विधाय यदागतं तदेवास्यायुर्ज्ञेयमिति ॥ यथा रविः ४।३।१८। ३६ अस्य राश्यंशफलं वर्षादि ०।१०।२४ कला १८ फलं मासादि १।२। २४ विकला ३६ फलं दिनादि १।४।४८ एषांस्थानैकैकस्थानान्तरयोगे योग तत्राप्तंवर्षादिकम् ०।११।२७।२८।४८ इदमेव सूर्यस्य मध्यमायुः । एवं सलग्नचन्द्रादीनामप्यायुर्दायं आनेयः यो निजोच्चांशत्रिभागगस्तदायुर्दायस्त्रिगुणः कार्यः ॥ योग्रहस्तत्र [illegible] वा स्थितस्तद्ग्रहस्यदत्तायुर्दायस्त्रिगुणः कार्यः ॥ वस्यग्रहस्य[illegible]त्रिगुणत्वे च संप्राप्ते सत्येकवारं त्रिगुणं कार्यम् ॥ एवं हानिश्च ॥ योग्रहो भौमं विनाऽरिभेस्थितस्तस्य दत्तायुषस्त्रिभागमपहरति ॥ यो ग्रहः स्वनीचराशौ शुक्रार्कजौ विना योऽस्तंगतश्च तस्य स्वायुषोऽर्धमपहरति । पापग्रहो यदि लग्नाद् द्वादशे तस्य सर्वायुर्दायंहरति ॥ एवमेवैकादशस्थे पापेऽर्धं भागहानिः दशमेत्रिभागहानिः ॥ यो नवमे तस्य चतुर्थांश हानिः । योष्टमे तस्य पञ्चमांशं योग्रह सप्तमे तस्य रसांशमेवहानिरिति । तत्र लग्नात् १२।११।१०।९।८।७ एषु स्थानेषु शुभग्रहश्चेत् तर्हि क्रमेण स्वायुर्दायस्यार्धं चतुर्थांशं रसांशमष्टमांशदिग्भागं द्वादशांशमेवमपहरति ॥ तथा एकराशौ यदि ग्रहद्वयं बहवो वा गतास्तेषांमध्ये यो बली तस्यैवात्रपापशुभानुसारेण यथोक्तं स्वायुर्दायमपहरति नान्यः ॥ अत्रबलवल्लग्नंचेत्तदालग्नस्यभतुल्यं वर्षं ग्राह्यम् । मासादिषु त्रैराशिकं कार्यम् ॥ यथा त्रिंशदंशैश्चेद्द्वादशमासास्तदेष्टांशैः किमित्येवं यदागतं मासादि तल्लग्न तुल्यवर्षेणसहसंकलितलग्नस्यवर्षाद्यायुर्विनियोज्यं तदेवाङ्गस्यांशायुः स्यादिति सर्वत्रबोध्यम् । एवं साङ्गसप्तग्रहस्यापृथगुक्तयोः चयोपचययोः संस्कारपूर्वकंमध्यमांशायुषि कृत्वा सर्वेषां वर्षादिकस्यैव कार्यम् ॥ एवं कृते यदाप्तं तदेतस्याष्टांशायुर्मानं स्यादितिसिद्धम् ॥ अथहानिवृद्धौविशेषमाह—ध्रुवापहानिः कर्तव्यास्ततोऽन्यासुबहुष्वपि ॥ प्राप्तास्वेकैवकर्तव्याया[illegible]ग्रहतरा ॥१॥ ततोत्रिगुणनाकार्याऽप्येकैवमहत्तासकृत् । द्वाभ्यांवर्गोत्तमेत्वांशेस्वद्रेष्काणस्वकेगृहे ॥२॥ त्रिभिर्वक्रातस्यायस्योच्चराशिगतस्य च ॥ ग्रहराशौ भवत्येवशोधयक्षेपकृत क्रिया ॥३॥ इति ॥

अथग्रहाणांविशोत्तरीयमहादशान्तर्दशादिज्ञानायचक्रमिदम् ।

११६ 2 ११२ ३।१८ ३।६ ३।२४ ३।१२ ११२ ४

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.ह.श्रवण				मृ. चि. ध.				आर्द्रा. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पुष्य.अनु.उ.भा.				आश्ले.ज्ये.रे.				मघा.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भर.			
अन्तर्दशादि. १८				अन्तर्दशादि. ३०				अन्तर्दशादि. २१				अन्तर्दशादि. ५४				अन्तर्दशादि. ४८				अन्तर्दशादि. ५७				अन्तर्दशादि. ५१				अन्तर्दशादि. २१				अन्तर्दशादि. ६०			
ग्र.	व.	मा.	दि.		व.	मा.	द.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शनिचक्रम्

द. कर. ४—रोगः
पादयुगल ६—लाभः
वाम. कर. ४—गमनम्
उदरे. ५—दरिद्रता
शिरसि. ३—लाभः
द. नेत्रे २ वा. नेत्रे२—सौभाग्यम्
गुदा.१अल्प मृत्युः । फलं शनिचारे

दशाद्ज्ञेयम्

श्लोकः—यस्मिन् शनिश्चरति वक्त्रगतं ततश्च, चत्वारि दक्षिण करेऽङ्घ्रियुगं भषट्कम् । चत्वारि वामकरगोत्युदरे च पञ्च मूर्ध्नि-त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ रोगो लाभं तथाध्वानमधनं लाभमेव च । सौभाग्यमल्पमृत्युश्च शनेः प्रोक्तं क्रमात् फलम् ॥

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थं चक्रमिदम् ॥

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			सङ्कटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्र. आर्द्रा.			ध. पुनर्वसु.			श. पुष्य.			अश्वि. श्ले.			भर. मघा			कृ.पू.फा.			रो.उ.फा.			मृग. हस्त		
चित्रा			स्वाती			विशा.			अनु.पू.भा.			ज्ये.उ.भा.			मू. रे.			पू. षा.			उ. षा.		

वर्षज्ञानाय सप्तनाडी चक्रम्

पतयः	शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः
भानि	कृत्तिः	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले.
भानि	विशा.	स्वाती	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	मं.
भानि	अनुरा.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रवण
भानि.	भरणी.	अश्वि.	रेवती	उ.भा.	पू.भा.	शत	धनि.
ना.ना	चण्डा.	वातः	वह्नि	सौम्य	नीरम्	जलम्	अमृत

रविसंक्रमणे वाहनादिबोधकचक्रमिदम् ॥

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	निविष्ट	उपविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निविष्ट	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फल	सम	मध्य	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवाह	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फल	भीति	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कम्बल	नग्न	घनाभ
उपवस्त्र	श्वेत	रक्त	चित्र	पीत	नील	कम्बल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वैणव
आयुध	भुशुण्ड	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	बाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शक्कर
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृत्तिका	गोरोचन	महावर	ओतुम	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कर्पूर
जाति	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्णसंकर
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बिल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	बेला	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खर्पर	पत्र	वस्त्र	करवा	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुञ्जा	कौड़ी	नीलम	वज्र	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पत्ता	हरित	भूर्जपत्र	सित	पाण्डु	नीला	कृष्ण	चर्म	वल्कल	वस्त्र
स्नान	गंगा	यमुना	सरस्व.	मंदाकि	नर्मदा	कृष्णा	गोदाव.	भागीर.	तुङ्ग	कावेरी	कृष्णा
वय	बाला	कुमारी	गतवय	युवती	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	वन्ध्या	पुत्रव.	प्रवालिक

सूर्यभुक्तभाद्हलचक्रम्

३	हानिरसत्
८	समृद्धिः
९	कर्तुर्नाशः
८	द्रव्यलाभः

हलचक्रमन्यत् सूर्यभुक्तनक्षत्रात्

३	अशुभम्
३	शुभम्
३	अशुभम्
५	शुभम्
३	अशुभम्
५	शुभम्
३	अशुभम्
२	शुभम्

वर्षमुन्थानयनम्

ग.व.+ज.ल. १२ हृते

पञ्चाधिकारिणः

१	जन्मलग्नपतिः
२	अब्दलग्नपतिः
३	मुन्थहापतिः
४	त्रिराशिपतिः
५	दि.रवि राशीशः
६	रा. चन्द्रराशीशः

वर्षप्रवेशसारणीयम्

जन्मवारेष्टघटीपलेषु प्रतिवर्षक्षेपकवारादि

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	ग. व.
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	वा.
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	घ.
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	ग. व.
६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	वा.
३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	घ.
१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.
६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	ग. व.
४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	वा.
४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	घ.
७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	प.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	वि.

त्रिराशिपाः ।

लग्नानि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्री	बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

त्रिपताकचक्रेग्रहस्थापनम्—सैकगताब्दसंख्यायाविभक्तानवभिस्ततः शेषांके जन्मनिगतचंद्रराशेरिहन्यसेत् ॥ शेष ग्रहाचतुर्भक्तं-शेषसंख्यासुविन्यसेत् । त्रिपताकेवर्षलग्नमदी तत्रविधुर्यदा ॥ शुभैर्विद्धः शुभफलः पापैः पापफलप्रद इति ॥

विंशोत्तरीयमुद्दादशाक्रमः ।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	पतयः
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मासाः
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिनानि

गताब्दप्रमाणं जन्मर्क्षसंख्यायुक्तं द्विरूनं विधाय नवतष्टे शेषे दशापतिः ।

हद्दाचक्रमिदम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशय.
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अं.
बृ.	शु.	बु.	मं.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	बु.	शु.	स्वा.
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं.
शु.	बु.	शु.	शु.	श.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	शु.	बृ.	स्वा.
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं.
बु.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	स्वा.
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अं.
म.	श.	मं.	बृ.	बु.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	म.	मं.	स्वा.
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं.
श.	मं.	श.	श.	मं.	मं.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	स्वा.

नवमांशचक्रमिदम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
म.	श.	शु.	च.	म.	श.	शु.	च.	म.	श.	शु.	च.	३	२०
शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	६	४०
बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	१०	०
च.	मं.	श.	शु.	च.	मं.	श.	शु.	च.	मं.	श.	शु.	१३	२०
सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	१६	४०
बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	२०	०
शु.	चं.	मं.	श.	शु.	च.	मं.	श.	शु.	च.	म.	श.	२३	२०
म.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	२६	४०
बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	बृ.	३०	०

गतर्क्षनाडीगुणिता दशाब्दाः सर्वर्क्षनाडी विहृतात्फलं वै । वर्षादिकं भुक्तमिदंविशोध्यं दशाब्दतोभोग्यमिदं फलं तत् । दशा[torn]तं त्रिगुणितं त्वन्तरे ध्रुवकं स्फुटम् । दशाब्दैर्गुणितं तद्धि भुक्तिमानं प्रजायते ।

दृष्टिचक्रमिदम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशय.
१०	१०	१०	१०	१०	१०	[torn]	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सु.	[torn]	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
२०	२०	२०	२०	२०	२०	[torn]	२०	२०	२०	२०	२०	अंशाः
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	ग्रहाः
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अंशाः
बु.	श.	सू.	चं.	मं.	बृ.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ग्रहाः

ग्रहाणां गृहोच्चनीचदीप्तांश हर्षस्थानानि

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
५	४	१, ८	३, ६	९, १२	२, ७	१०, ११	गृहाणि
०	१	९	५	३	११	६	उच्च रा
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अं
६	७	३	११	९	५	०	नीच रा
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अं
१५	१२	८	७	९	७	९	दीप्ता
९	३	६	१	११	५	१२	हर्ष

उच्चबलानयनम् ॥ नीचग्रहान्तरं कार्यं पञ्चमांशलवमब्दभवेत् ॥ तदंशानवभिर्भक्तं- मुहुर्मुहुर्बलं भवेत् ।

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि ॥ सद्वाराः चन्द्रबुधगुरुशुक्राः । तिथयः १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३। शुभभानि पुष्य. अश्वि. रो. मृ. उ. फा. पुनर्व. ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. श. एषु शुभः ।। दक्षिणांगेऽखिलेपुंसांवामांगे तु मृगीदृशाम् ॥ शुभम् ॥ जन्मर्क्षमृत्युयोगेऽह्नि दग्धेविष्ट्यादिदूषिते ॥ अशुभम् ॥ अथ पल्लीपतनविशेषफलम् ॥ पादयोर्जघने जान्वोः गुदे गुह्ये च मृत्युदा ॥ अन्यत्र शुभदा प्रोक्ता सचैलं स्नानमाचरेत् ॥१॥ पल्याः प्रपतने चैव शरटस्याधिरोहणे ॥ यथोक्तं हि मनुष्यस्य शुभाशुभप्रसूचकम् ॥२॥ स्त्रीणां तु तद्वैपरीत्याद्बोध्यम्बुद्धिमता सदा इति ॥ पल्लीपतनस्यानिष्टफलवारणार्थं मंत्रदानजपानाह ॥ तिलमापादिदानं च स्नात्वा देयं द्विजन्मने ॥ पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन् मंत्रं षडक्षरम् (ॐनमः शिवाय) ॥ शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवर्हणम् ॥ शिवालये प्रदद्याद्धि दीपं दोषोपशान्तये ॥२॥ अशुभश्वस्त्यै मृत्युञ्जयजपस्वर्णगोदानं कार्यमिति शुभम् ।

अथाङ्गस्य विभागेन पल्लीपतने फलमिदम् ॥

स्थानानि	फलं	स्थानम्	फलं	स्थानम्	फल	स्थानम्	फल	स्थानम्	फल
शिरसि.	राज्यलाभः	[illegible]	बंधुदर्शनम्	भ्रूमध्य	राजसन्मा	उत्तरोष्ठ	धननाशः	अधरोष्ठ	धनरत्नलाभः
नासाग्रे	व्याधिपीडन	[illegible]र्णे	आयुर्वृद्धिः	वामकर्णे	बहुलाभः	नेत्रयोः २	बंधनप्रा.	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
वामभुज	राज[illegible]	[illegible]	शत्रुनाशः	स्तनद्वये २	दौर्भाग्यं	उदरे	भूषणलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
जानुद्वय	[illegible]	[illegible]	शुभावहः	हस्तद्वये	वस्त्रलाभः	स्कंधयोः २	विजयः	नाभौ	बहुधनाप्तिः
कटिभाग	[illegible]लाटे केशाभावे सर्व[illegible]	[illegible]द.	मनस्तापं	वा.मणिबं.	कीर्तिनाशः	हृदये	धनलाभः	मुखेपादे	मिष्टान्नभोजन
		[illegible]ति	अतिकष्टम्	दक्षिणपादे	गमनम्	वामपादे	बंधुविनाशः	पादान्ते	स्त्रीनाशः

अथ तिथिवारयोर्भवारयोर्योगादनेकयोगनांबोधकचक्रमिदम् ।

योगनामानि	सूर्यवार	चंद्रवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
चराख्ययोगः	पू. षा.	आर्द्रा	विशा.	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
क्रकचयोगः	१२ ति.	११ ति.	१० ति.	९ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
दग्धयोगः	१२ ति.	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
विषाख्ययोगः	४ ति.	६ ति.	७ ति.	२ ति.	८ ति.	९ ति.	७ ति.
हुताशनयोगः	१२ ति.	[illegible]	७ ति.	८ ति.	९ ति.	१० ति.	११ ति.
यमघंटयोगः	मघा	[illegible]	आर्द्रा	मूल.	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
दग्धयोगः	भरणी	चित्रा	उ. षा.	धनिष्ठा.	उत्तरा फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यमदंष्ट्रयोगः	म. ध.	वि. मू.	कृ. भ.	पू. षा. पुन.	उ.षा.अश्वि	रो. अनु.	श्र. श.
सर्वार्थसिद्धियोगः ॥ भवारयोर्योगात्	ह. मू. उ. ३ पुष्य अश्वि.	श्र. रो. मृ. अनु. पुष्य.	अश्वि. उ. भा. कृ. आश्ले.	रो. अनु. ह. कृ. मृगशिरा	रेवती. अनु अश्विनी पुष्य पुन.	रे. अनु. अश्विनी पुन. श्र.	श्रवण रोहिणी स्वाती
अमृतसि. यो.	हस्त	मृ. श्र.	अश्वि.	अनुरा.	रेवती	रेवती	रोहिणी

अथदैर्घ्यविस्तारघातरूपपिण्डवशेनायादि बोधकचक्रम् ।

दैर्घ्य	२१	२१	२३	२३	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२९	२९	२९	३१	३१	३१	३१	३३	३३
विस्तार	१९	२१	१९	२१	२३	२१	२३	२५	२३	२५	२७	२५	२७	२९	२५	२७	२९	३१	२७	२९
आय	७	१	५	३	१	५	७	१	५	३	१	५	७	१	७	५	३	१	३	५
वार	७	७	६	७	१	७	२	४	३	६	२	१	५	२	३	१	६	४	४	३
अंश	९	९	३	९	६	९	३	६	९	९	९	३	९	६	६	९	३	६	९	९
द्रव्य	१२	१२	४	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२	४	१२	८	८	१२	४	८	१२	१२
ऋण	५	३	७	१	३	७	५	३	७	१	३	७	५	३	५	७	१	३	१	७
नक्षत्र	६	१८	१३	३	२०	१५	१०	५	२७	२७	२७	२२	[illegible]	५	१७	२७	१०	२०	२७	१५
तिथिः	१२	३	१	९	२	१५	१०	५	३	१५	१२	१०	९	८	५	६	७	८	३	६
योगः	३	९	२०	१५	१०	२१	५	१६	२७	२७	२७	११	७	१६	२२	२७	५	१०	२७	२१
आयुः	७२	४८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२	४०	२४	८	८०	९६	११२	८	४८	९६

दैर्घ्य	३३	३३	३५	३५	३५	३५	३७	३७	३७	३७	३९	३९	३९	३९	४१	४१	४१	४१	४१	४३
विस्तार	३१	३३	२९	३१	३३	३५	३१	३३	३५	३७	३३	३५	३७	३९	३३	३५	३७	३९	४१	३५
आय	७	१	७	५	३	१	३	५	७	१	७	५	३	१	१	३	५	७	१	१
वार	२	१	७	७	७	७	५	६	७	१	५	७	२	४	४	७	३	६	१	७
अंश	९	९	६	३	९	६	६	९	३	६	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३
द्रव्य	१२	१२	८	४	१२	८	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४
ऋण	५	३	५	७	१	३	१	७	५	३	५	७	१	३	३	१	७	५	३	३
नक्षत्र	३	१८	२०	१३	६	२६	२३	२१	११	१७	९	१२	१५	१८	२४	५	१३	२१	२	२५
तिथिः	९	१२	५	१०	१५	५	१०	३	१०	२	६	१५	९	३	९	५	१	१२	८	१०
योगः	१५	९	१०	२०	३	१३	२५	२४	२३	२२	१८	६	२१	९	१२	१६	२०	२४	१	२६
आयुः	२४	७२	८०	४०	१२०	८०	५६	४८	४०	३२	९६	१२०	२४	४८	२४	८०	१६	७२	८	४०

दैर्घ्यः	४३	४३	४३	४३	४५	४५	४५	४५	४५	४७	४७	४७	४७	४७	४९	४९	४९	४९
विस्तार	३७	३९	४१	४३	३७	३९	४१	४३	४५	३९	४१	४३	४५	४७	४१	४३	४५	४७
आय	७	५	३	१	१	३	५	७	१	१	७	५	३	१	१	३	५	७
वार	४	१	५	२	५	३	१	६	४	५	४	३	२	१	७	७	७	७
अंश	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३	६	९	३
द्रव्य	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४	८	१२	४
ऋण	५	७	१	३	३	१	७	५	३	३	५	७	१	३	३	१	७	५
नक्षत्र	११	२४	१०	२३	९	२७	१८	९	२७	३	२६	२२	१८	१४	७	८	९	१०
तिथिः	८	६	४	२	१५	१५	१५	१५	१५	९	११	१३	१५	२	७	११	१५	४
योगः	१३	१२	५	२५	१८	२७	९	१८	२७	[illegible]	१३	११	९	७	१७	४	१८	५
आयुः	८	९६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	[illegible]	५६	८८	१२०	३२	११२	५६	१२०	६४

दैर्घ्यः	४९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५५	५५	५५	५५	५५
विस्तार	४९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	४५	४७	४९	५१	५३
आय	१	३	१	७	५	३	१	७	१	३	५	७	१	३	१	७	५	३
वार	७	३	४	५	६	७	१	१	३	५	७	२	४	१	४	७	३	६
अंश	६	९	९	९	९	९	९	[illegible]	९	६	३	९	६	९	३	६	९	३
द्रव्य	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	[illegible]	१२	८	४	१२	८	१२	४	८	१२	४
ऋण	३	१	३	५	७	१	३	[illegible]	३	१	७	५	३	१	३	५	७	१
नक्षत्र	११	१५	२१	२७	६	१२	१८	७	१८	२	१३	२४	८	९	२५	२४	३	१९
तिथिः	८	३	९	१५	६	१२	३	७	[illegible]	८	१	९	२	१५	१०	५	१५	१०
योगः	११	२१	२४	२७	३	६	९	१४	६	१	२०	१२	४	१८	२६	७	१५	२३
आयुः	८	४८	२४	१२०	९६	७२	४८	११२	१२०	८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	१२०	४०

दैर्घ्यः	५५	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६१	६१	६१	६१	६१
विस्तार	५५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	४९	५१	५३	५५	५७
आय	१	७	१	३	५	७	१	३	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५
वार	२	३	७	४	१	५	२	७	५	३	१	६	४	७	६	५	४	३
अंश	६	९	९	९	९	९	९	३	९	६	३	९	६	६	९	३	६	९
द्रव्य	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	१२	८	४	१२	८	८	१२	४	८	१२
ऋण	३	५	३	१	७	५	३	१	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७
नक्षत्र	८	२१	१५	९	३	२४	१८	१६	१५	१४	१३	१२	११	१७	२१	२५	२	६
तिथिः	५	१२	९	६	३	१५	१२	१३	१२	११	१०	९	८	२	३	४	५	६
योगः	४	२४	२१	१८	१५	११	९	८	२१	७	२०	६	१९	२२	२४	२६	१	३
आयुः	८०	७२	२४	९६	४८	१२०	७२	८८	७२	५६	४०	२४	८	३२	४८	६४	८०	९६

दैर्घ्यः	६१	६१	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	[illegible]	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६७	६७
विस्तार	५९	६१	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	[illegible]	५५	५७	५९	६१	६३	६५	५५	५७
आय	७	१	५	३	१	७	५	३	१	[illegible]	[illegible]	१	३	५	७	१	५	३
वार	२	१	७	७	७	७	७	७	७	[illegible]	[illegible]	४	५	६	७	१	६	१
अंश	३	६	९	९	९	९	९	९	९	[illegible]	[illegible]	९	६	३	९	६	६	९
द्रव्य	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	४	१२	८	८	१२
ऋण	५	३	७	१	३	५	७	१	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	७	५	३	७	१
नक्षत्र	१०	१४	२७	९	१८	२७	९	१८	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	२२	९	२३	२३	१५
तिथिः	७	८	९	१२	१५	३	६	९	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५	५	५	१२
योगः	५	७	२७	१८	९	२७	१८	९	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५	२५	२१
आयुः	११२	८	२४	७२	१२०	४८	९६	२४	७२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८०	८०	७२

दैर्घ्यः	६७	६७	६७	६७	६७	६९	६९	६९	६९	६९	६९	६९	७१	७१	७१	७१	७१	७१
विस्तार	५९	६१	६३	६५	६७	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	५७	५९	६१	६३	६५	६७
आय	१	७	५	३	१	५	७	१	३	५	७	१	७	५	३	१	७	५
वार	३	५	७	२	४	५	१	४	७	३	६	२	२	६	३	७	४	१
अंश	३	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	९	९	६	३	९	६	३
द्रव्य	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	४	१२	८	४
ऋण	३	५	७	१	३	७	५	३	१	७	५	३	५	७	१	३	५	७
नक्षत्र	७	२६	१८	१०	२	९	६	३	२७	२४	२१	१८	३	५	७	९	११	१३
तिथिः	४	११	३	१०	२	९	३	१२	६	१५	९	३	६	२	१२	९	५	१
योगः	१७	१३	९	५	१	१८	३	२५	२७	१२	२४	९	१५	१६	१७	१८	१९	२०
आयुः	६४	५६	४८	४०	३२	२४	[illegible]	[illegible]	९६	१२०	२४	४८	९६	३२	८८	२४	८०	१६

दैर्घ्यः	७१	७१	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५	७५
विस्तार	६९	७१	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७५
आय	३	१	३	५	७	१	३	५	७	१	७	५	३	१	७	५	३	१
वार	५	२	४	२	७	५	३	१	६	४	१	७	६	५	४	३	२	१
अंश	९	९	३	६	९	३	६	९	३	६	९	९	९	९	९	९	९	९
द्रव्य	१२	८	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
ऋण	१	३	१	७	५	३	१	७	५	३	५	७	१	३	५	७	१	३
नक्षत्र	१५	१७	४	११	१८	२५	५	१२	१९	२६	१५	२७	१२	२४	९	२१	६	१८
तिथिः	१२	८	१	१४	१२	१०	८	६	४	२	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
योगः	२१	२२	२	१९	९	२६	१६	६	२३	१३	२१	२७	६	१२	१८	२४	३	१३
आयुः	७२	८	१६	१०४	७२	४०	८	१६	६४	३२	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०

प्रातः स्मरणम्

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैःस्तवैर्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः। ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥ यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः। अर्हन्नित्यथ जैनशास्त्रनिरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं नो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।

सन्ध्या

भूल से हुए पाप की निवृत्ति के लिए प्रतिदिन सायंकाल और प्रातःकाल दिन रात्रि के सन्धि में जो कर्म किया जाता है उसका नाम सन्ध्या है।

नीचे लिखे मन्त्र प[illegible] शरीर-शुद्धि के लिये जल छिड़के—

ॐअपवित्रः पवित्रो वा[illegible]विस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

दाहिने हाथ में जल लेकर सन्ध्या के लिये संकल्प करे—

ॐतत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं प्रातः (सायं) सन्ध्योपासनकर्म करिष्ये।

निम्न विनियोग पढ़कर भूमिशुद्धि के लिये जल छोड़े।

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

नीचे के मन्त्र को पढ़कर शुद्धि के लिये आसन पर जल छिड़के।

ॐपृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शिखाबन्धनम्—गायत्री मन्त्र को पढ़कर शिखाबन्धन करना तथा ३ आचमन भी करने के पश्चात् नीचे मन्त्र को पढ़कर पुनः आचमन करे। मन्त्र से किसी कर्म को जब करना होता है तो पहिले विनियोग करना आवश्यक है—अतः विनियोग :—अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता आचमने विनियोगः।

ॐऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। [illegible]समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्र[illegible] धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथ्वीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।

आत्मरक्षा—हाथ में जल लेकर गायत्री मन्त्र पढ़े तथा अपने चारों ओर रक्षार्थ [illegible]वे। प्राणायाम के निम्न चारों विनियोगों के लिये चार बार जल पृथ्वी पर छोड़े।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे [illegible] सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवशिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिग[illegible] पङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चि[illegible] यामे विनियोगः। गायत्र्याविश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने [illegible] विनियोगः। शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजु[illegible] विनियोगः।

नीचे लिखे मन्त्र से प्राणायाम करे। पद्मासन वा सिद्धासन से बैठकर पहिले एक दो खींचकर धीरे २ छोड़ देवे। पुनः अंगुष्ठ से नासिका के दक्षिण छिद्र को बन्दकर वाम छिद्र[illegible] श्वास लेता जावे तथा प्राणायाम मन्त्र को तीन बार पढ़े और विष्णु का ध्यान नाभि में करे। इसके बाद नासिका के दोनों छिद्र बन्दकर तीन बार मन्त्र पढ़े तथा ब्रह्मा का ध्यान हृदय में करे। पुनः दक्षिण छिद्र से धीरे २ श्वास का परित्याग करे तथा मन्त्रों को पढ़ते समयभगवान शंकर का ध्यान ललाट में करे। इसी प्राणायाम को क्रम से पूरक, कुम्भक, तथा रेचक कहते हैं। इसको सफलता पूर्वक करने से समस्त सिद्धियाँ सम्भव हैं।

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐआपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

प्रातःकाल आचमन का विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

सूर्यश्चमेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

रात्रिकृत सब ज्ञाताज्ञात पापों के क्षयार्थ निम्न मन्त्र को पढ़कर आचमन करे।

ॐसूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना। रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

निम्नलिखित विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

शरीर शुद्धि के लिये नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा सात वाक्य से शरीर पर जल छोड़े, आठवें से भूमि पर और नवें से पुनः मार्जन करे।

(१) ॐआपो हिष्ठा मयोभुवः। (२) ॐता न ऊर्जे दधात न। (३) ॐमहेरणाय चक्षसे (४) ॐयो वः शिवतमो रसः। (५) ॐतस्य भाजयते हनः। (६) ॐ उशतीरिव मातरः। (७) ॐतस्मा अरङ्गमामवः। (८) ॐयस्य क्षयाय जिन्वथ। (९) ॐआपो जनयथा च नः।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः॥

हाथ में जल लेकर मन्त्र को तीन बार पढ़, फिर उस जल को सिर पर छिड़क दें।

ॐद्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ देवे।

अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता पापनिरसने विनियोगः

दाहिने हाथ में जल लेकर उसको नासिका से लगाकर मन्त्र को पढ़ तथा जल बाईं ओर फेंक कर उसको न देखें।

ॐऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः। निम्न विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दें।

ॐअन्तश्चरसीतितिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। निम्न [illegible]न्त्र को पढ़कर आचमन करे।

ॐअन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।

सूर्यार्घ्य :—सूर्य भगवान को पूर्वाभिमुख हो गायत्री मन्त्र पढ़कर तीन बार अर्घ्य देवे।

[illegible]—क्रमशः एक एक विनियोग को पढ़कर जल छोड़े तथा उसके साथ के मन्त्र को [illegible] सन्ध्या के लिये दोनों हाथ अञ्जली बनाकर उपस्थान करें तथा मध्याह्न [illegible]ढ़कर उपस्थान करें।

प्रथम विनियोग तथा मन्त्र :—

उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवतासूर्योपस्थाने विनियोगः॥ १॥ मन्त्रः- ॐउद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

द्वितीय विनियोग तथा मन्त्र :—

उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥२॥ मन्त्र[illegible]—ॐउदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ तृतीय विनियोग ॐचित्रमित्यस्य [illegible]ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥३॥ मन्त्रः—ॐचित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथ्वी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

चतुर्थ विनियोग तथा मन्त्र :—

तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वणऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दःसूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥४॥ ॐतच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्र[illegible] शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

अंगन्यास तीन बार करना चाहिये। एक एक मन्त्र को पढ़ता जावे तथा शरीर के निम्नोक्त अङ्[illegible] स्पर्श दाहिने हाथ से करे। छठे मन्त्र को पढ़ते समय ताली देकर शिर के चारों ओर चुट[illegible] जावे।

ॐॐहृदयाय नमः १ ॐभूः शिरसे स्वाहा २ ॐभुवः शिखायै वषट् ३ ॐस्वः कवचाय हुम् ४ ॐ[illegible]वः नेत्राभ्यां वौषट् ५ ॐभूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ६।

गायत्री जप का विनियोग पढ़ तीन बार जल छोड़ दे।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः। त्रिव्याहृतीनां प्र[illegible]ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दास्यग्निवाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र[illegible]त्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

मन्त्र को पढ़कर गायत्री देवी के स्वरूप का ध्यान करे।

ॐश्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता। आदित्यम[illegible]था च ब्रह्मलोकगताथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।

गायत्री आवाहन, मन्त्र का विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे।

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्री छन्दः शुक्रो देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

नीचे के दो मन्त्रों के द्वारा गायत्रीदेवी का आवाहन करे।

ॐतेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

ॐगायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो[illegible]जसेऽसावदोम्।

यथाशक्ति गायत्री जप करे। कम से कम दश बार अवश्य करे।

गायत्री मन्त्र :—ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रदक्षिणा करे। अथवा हाथ में जल लेकर अपने शिर के चारों ओर फेर कर छोड़े।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे।

गायत्री का विसर्जन निम्न मन्त्र से करे—

उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्॥

भगवद्देवि स्वस्थानं गच्छ।

मध्याह्नकाल की सन्ध्या के लिये विनियोग तथा आचमन मन्त्र—

[illegible]आपः पुनन्त्विति विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

मन्त्र—ॐआपःपुनन्तु पृथ्वीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्॥ यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳस्वाहा॥

सायंकाले सन्ध्या के लिये विनियोग तथा मन्त्र—

विनियोग :—अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। मन्त्र—ॐअग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहं मामोमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।"

२—देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम्—(१) तर्पण में काल की विशेषता—तर्पण का जल सूर्योदय से एक प्रहर तक अमृत, डेढ़ तक दुग्ध, साढ़े तीन तक जल रूप से पितरों को प्राप्त होता है।

(२) तर्पण कर्ता—पूर्वाभिमुख हो कुशा के आसन पर बैठकर तीन बार आचमन कर बाद कुशा और जल लेकर संकल्प पढ़े।

(३) तर्पण संकल्प—ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीवैवस्वतमन्वन्तरे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

(४) तर्पण तीर्थ—तर्पण के तीन तीर्थ हैं। (१) देवतीर्थ—अंगुलियों का अग्रभाग (२) कायतीर्थ (प्रजापति) सबसे छोटी अंगुलि का मूल (३) पितृतीर्थ—तर्जनी और अंगुष्ठ मूल का मध्यभागः—

अथ देवतर्पणम्—सव्य (बायें कन्धे पर जनेऊ रखकर) होकर देवतीर्थ से पूर्वमुख बैठकर त्रिकुशा और अक्षत से एक एक अञ्जलि जल प्रत्येक नाम को पढ़कर देवे।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् १ ॐविष्णुस्तृप्यताम् २ ॐरुद्रस्तृप्यताम् ३ ॐप्रजापतिस्तृप्यताम् ॐ देवास्तृप्यन्ताम् ५ ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् ६ ॐऋषयस्तृप्यन्ताम् ७ ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् ८ ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ९ ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् १० ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ११ ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम् १२ ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् १३ ॐअप्सरसस्तृप्यन्ताम् १४ ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् १५ ॐ नागास्तृप्यन्ताम् १६ ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् १७ ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् १८ ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् १९ ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् २० ॐयक्षास्तृप्यन्ताम् २१ ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम् २२ ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् २३ ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् २४ ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् २५ ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् २६ ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् २७ ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् २८ ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् २९।

अथ दिव्यमनुष्यतर्पणम्—"निवीती" अर्थात् माला के समान यज्ञोपवीत और अंगोछे को धारण कर कायतीर्थ से उत्तर मुख बैठ कर त्रिकुशा और यव से दो दो अंजलि जल प्रत्येक को देवे।

ॐ सनकस्तृप्यताम् १ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २ ॐ सनातनस्तृप्यताम् ३ ॐ कपिलस्तृप्यताम् ४ ॐआसुरिस्तृप्यताम् ५ ॐवोढुस्तृप्यताम् ६ ॐपञ्चशिखस्तृप्यताम् ७।

अथ मरीच्यादितर्पणम्—पुनः सव्य होकर पूर्वाभिमुख देवतीर्थ से अक्षत सहित एक एक अञ्जलि जल नीचे के मरीच्यादि ऋषियों को देवताओं की तरह देवें।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् १ ॐअत्रिस्तृप्यताम् २ ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् ३ ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् ४ ॐ पुलहस्तृप्यताम् ५ ॐ क्रतुस्तृप्यताम् ६ ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् ७ ॐ वशिष्ठस्तृप्यताम् ८ ॐ भृगुस्तृप्यताम् ९ ॐ नारदस्तृप्यताम् १०।

अथ पितृतर्पणम्—अपसव्य दक्षिण कन्धे पर यज्ञोपवीत को करके दक्षिण मुख हो मोटक लेकर तीन तीन अञ्जलि जल तिल सहित वामपुटका मोड़ कर पितृतीर्थ द्वारा प्रत्येक को देवे।

ॐकव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, १ ॐसोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा २ ॐयमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा ३ ॐअर्यमातृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा. तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, ५ ॐअग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, ५ ॐसोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, ६ ॐर्बाहिषदः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा ७ ।

अथ यमतर्पणम्—पूर्वोक्त विधि से निम्न १४ यमों को भी तीन २ अञ्जलि जल देवे ।

ॐयमाय नमः १ ॐधर्मराजाय नमः २ ॐमृत्यवे नमः ३ ॐअन्तकाय नमः ४ ॐवैवस्वताय नमः ५ ॐकालाय नमः ६ ॐसर्वभूतक्षयाय नमः ७ ॐ औदुम्बराय नमः ८ ॐ दध्नाय नमः ९ ॐ नीलाय नमः १० ॐ परमेष्ठिने नमः ११ ॐ वृकोदराय नमः १२ ॐ चित्राय नमः १३ ॐ चित्रगुप्ताय नमः १४ ।

अथ पितृतर्पणम्—तीन कुश को एक में लपेट कर इकट्ठा कर लेने को मोटक कहते हैं और तीन कुश को त्रिकुशा कहते हैं । तिल और कुश सहित तीन-तीन अञ्जलि जल पितरों को देवे ।

ॐवसुरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ॐरुद्ररूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ॐआदित्यरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

ॐगायत्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ । ॐ सावित्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ॐसरस्वतीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ।

ॐअमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐअमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

इसी क्रम से पितृव्य, तत्पत्नी, भ्राता, तत्पत्नी, भगिनी, मातुल, मातुलानी, पितृष्वसा (फुआ) पैतृष्वस्रीय (फुआ का पुत्र), मातृष्वसा (मौसी) मातृष्वस्रीय, मातुलेयादि तथा पिता माता के सपिण्ड को एक एक अञ्जलि दिया जावे । ससुर, सास, गुरु का भी तर्पण करे । इसके अतिरिक्त और भी जो पितृ देव मानव आदि जिनको जल देना अभीष्ट हो नीचे लिखे मंत्र से जल देवे ।

ॐआब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

नीचे के श्लोक को पढ़ते समय बराबर जल देता जावे ।

येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥१॥

इस श्लोक को पढ़ते समय अंगोछे के खूंट से जल पृथ्वी पर निचोड़ कर तर्पण करे ।

ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥२॥

श्री भीष्म पितामह को अपसव्य होकर नीचे लिखे मन्त्र से अथवा केवल जल लेकर तीन अञ्जलि देवे । (ऐसा सौभाग्य बालब्रह्मचारी पितामह को ही प्राप्त है । जिसे सभी हिन्दू जनता अपना पितामह मान कर तर्पण करती है । यह हमारे देश का आदर्श है ।)

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्यप्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ।

सूर्यार्घ्यः—सव्य होकर पूर्वाभिमुख निम्नलिखित मन्त्र से पुष्प गन्ध तुलसी आदि लेकर अर्घ्य देवे ।

ॐएहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

अथ ब्रह्मादिदेवानां पूजनम्—निम्नलिखित मन्त्रों से पुष्प, गन्ध, तुलसी आदि लेकर निम्न-देवताओं के लिये पात्र में जल गिरावे ।

ॐब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः । अबुध्न्या ऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ॐब्रह्मणे नमः ॥१॥ ॐइदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा ॥ ॐविष्णवे नमः ॥२॥ ॐनमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ ॐरुद्राय नमः ॥३॥ ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐसवित्रे नमः ॥४॥ ॐमित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि द्युम्नंश्चित्रश्रवस्तमम् ॥ ॐमित्राय नमः ॥५॥ ॐइमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके । ॐवरुणाय नमः ॥६॥

अथ दिशां देवतानां च नमस्काराः—ॐप्राच्यै दिशे नमः । इन्द्राय नमः । ॐआग्नेय्यै० अग्नये नमः । ॐदक्षिणायै० यमाय नमः । ॐ नैर्ऋत्यै निर्ऋतये नमः । ॐपश्चिमायै० वरुणाय नमः । ॐवायव्यै० वायवे नमः । ॐ उदीच्यै० कुबेराय नमः । ॐऐशान्यै० ईशानाय नमः ।

विसर्जन का मन्त्र—ॐ देवागातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पतऽइमन्देव यज्ञᳪ स्वाहा व्वातेधाः ॥

अर्पणम्—अनेन तर्पणाख्यकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ इति देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणविधिः ॥

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।

यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्र—

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।

पार्थिवपूजनविधिः ।

जहाँ शंकर जी का पूजन अभीष्ट हो, पूजन कर्त्ता गङ्गा की मिट्टी या शुद्ध मिट्टी लेकर शिव जी को बनावे तदनन्तर शिवलिंग को बाएँ हाथ पर रखकर—ॐशिवाय नमः इस मन्त्र से पूजन सब कार्य करे । किसी आचार्य का मत है कि—

"मृदाहरण संघट्टे प्रतिष्ठाह्वानमेव च, स्नपनं, पूजनं चैव विसर्जनमतः परम् । हरोमहेश्वरः शूलपाणिःपिनाकधृक् । रुद्रःपशुपतिश्चैव महादेव इतिक्रमः । अर्थात् ॐहराय नमः इस मन्त्र से मिट्टी ले ॐमहेश्वराय नमः इस मन्त्र से पानी डाल कर साने और गोल बनावे, बाद में ॐशूलपाणये नमः इस मन्त्र से प्रतिष्ठा कर ॐपिनाकधृषे नमः इस मन्त्र से आवाहन कर ॐरुद्राय नमः से स्नान तथा ॐपशुपतये नमः से पूजन और ॐमहादेवाय नमः से विसर्जन कर दूसरे दिन मूर्ति को बहते हुए जल में छोड़ देवे ।

अथ गोदान प्रयोगः—कर्ता कृतनित्यकृत्यः । पुण्यकाले सवत्सां धेनुं द्विजं च यथाविभवं गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य गोशृङ्गमूलादिस्तनान्तस्थानादिषु देवताः पूजयेत् । तद्यथा शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । ब्रह्माविष्णुं पूजयामि शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः सर्वतीर्थानि पूजयामि एवं सर्वत्र शिरोमध्ये शिवाय । ललाटे देव्यै नमः । नासिकायां षण्मुखाय । नासापुटयोः कम्बलाश्वतरनागाभ्यां० कर्णयोः अश्विभ्यां० चक्षुषोः शशिभास्कराभ्याम् । दन्तेषु वायवे, जिह्वायां वरुणाय । हुंकारे सरस्वत्यै गण्डयोः पक्षमासाभ्याम् । ओष्ठयोःसन्ध्याद्वयाय । ग्रीवायाम् इन्द्राय । कुक्षिदेशे रक्षोभ्यः उरसि साध्येभ्यः पादेषु धर्माय जंघासु अर्यम्णे खुरमध्ये गंधर्वेभ्यः खुराग्रे पन्नगेभ्यः खुरपश्चिमांगे अप्सरोभ्यः । पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यः । सर्वसन्धिषु वसुभ्यः । श्रोणीतटे पितृभ्यः लाङ्गूले सोमाय गुह्ये आदित्यरश्मिभ्यः । गोमूत्रे गंगायै । गोमये यमुनायै । क्षीरे सरस्वत्यै । दधिन नर्मदायै । घृते अग्नये । रोमसु त्रयस्त्रिंशतिदेवकोटिभ्यः । उदरे पृथिव्यै । पयोधरेषु चतुःसमुद्रेभ्यश्चतुरः समुद्रान्पूजयामि एवं देवता अङ्गेषु सम्पूज्य अद्यैतदब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे इत्यादिना देशकालौ संकीर्त्य गोत्राय शर्मणे सुपूजितां पृथ्वीदान समफलकामः सर्वपापक्षयकामः विष्णुप्रीतिकामः इमां प्रत्यक्षधेनुं सुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरीं ताम्रपृष्ठीं घंटा-ग्रैवेयकां मुक्तालाङ्गूलां कांस्योपदोहनीं सितवस्त्रद्वयोपेतां सर्वाभरणभूषितां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे नमम तिल-पात्रं घृतावतं गोपुच्छं कृत्वा विप्रहस्ते सतिलं कुशोदकं दद्यात्—

मन्त्रस्तु—यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघविनाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा । ततोदाता दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णदक्षिणां दद्यात्—प्रार्थयेत्—नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवच । नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्वरे नमोनमः । पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता । कुपीहर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्, धेनुं दत्वा प्रदक्षिणीकृत्य किञ्चिदनुव्रजेत् ॥ इति प्रयोगः ॥

॥ बलिवैश्वदेवचक्रम् ॥

भोजन तैयार होने पर बलि वैश्वदेव का प्रयोग करना चाहिए । निम्नाङ्कित चक्र को जल से बनाकर, तदनुसार चक्र के पास एक तरफ अग्नि और एक तरफ जल रखकर क्रमानुसार दिए गए मन्त्रों द्वारा उक्त देवों का आवाहन पूजन करे ।

पञ्चसूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः । कण्डनी चोदकुम्भस्तु बध्यते यास्तु वाहयन् ॥
तासां क्रमेण सर्वासाम् निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः । पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः, पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥
पञ्चैतान्यो महायज्ञान् न हापयति शक्तितः । स गृहेऽपि वसन् नित्यं सूनादोषैर्न लिप्यते ॥

चूल्हा, चक्की, झाड़ू, ऊखल तथा पीने के लिये जहाँ पानी रखा जाता है । इन पाँचों स्थानों में जीवों के मरने की सम्भावना रहती है । उन दोषों के निवृत्ति के लिए पञ्च महायज्ञ का विधान है । यदि पञ्च महायज्ञ न कर सकें तो कम से कम प्रतिदिन भोजन बन जाने पर नमक रहित थोड़ा सा सामान निकाल कर पाँच बार हवन के रूप में अग्नि में डाल देवें । धार्मिक घरों में जिसे प्रायः सभी स्त्रियाँ करती हैं ।

१—अध्यापन, (ब्रह्मयज्ञ कहा जाता है) ।
२—तर्पण (पितृ यज्ञ) कहलाता है ।
३—होम (देव यज्ञ) क.
४—बलि (भूत यज्ञ) कहलाता है ।
५—अतिथिपूजन

कार्तिके धात्रीपूजा ।

तत्र संकल्पः देशकालादि संकीर्तनानन्तरं नामगोत्रोच्चारणानन्तरं सर्वपापक्षयद्वारा श्रीदामोदर प्रीत्यर्थं धात्रीमूले श्रीधात्रीपूजां करिष्ये—पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः संपूज्य गन्धपुष्पफलयुतमर्घ्यं दद्यात् । अर्घ्यं गृहाण भगवन् सर्वकामप्रदो भव । अक्षया संततिर्मेऽस्तु दामोदर नमोस्तुते ॥ ततो धात्री कुङ्कुमगन्धादिनाऽभ्यर्च्य पूजयेत्—धात्र्यै नमः । शान्त्यै नमः । मेधायै नमः । प्रकृत्यै नमः । विष्णुपत्न्यै नमः । महालक्ष्म्यै नमः । रमायै नमः । कमलायै नमः । इन्दिरायै नमः । लोकमात्रे नमः । कल्याण्यै नमः । कमलायै नमः । सावित्र्यै नमः । ततस्तर्पणं कार्यम् सव्येन ।

पिता पितामहाश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः । ते पिबन्तु मयादत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः ॥

धात्री का नाम आंवला है । इसके पूजन का विधान धार्मिक ग्रन्थों में विशेष रूप से लिखा है । मुख्यतया कार्तिक मास में आंवले का पूजन और वृक्ष के नीचे भोजन करने का अत्यधिक महत्व है । इसका आशय यह है कि नगर में बसने वाली जनता [illegible] निर्धारित किसी समय पर घर से बाहर जाकर स्वच्छ वायु मण्डल के सुख का अनुभव प्राप्त कर [illegible]

श्रीतुलसीपूजाविधिः ।

केशवाय नमः इत्यादिना, तीन बार, आचमन करके हस्त प्रक्षालन करे । संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य ममात्मनः पुत्रपौत्रफलप्राप्त्यर्थं तथा पत्न्या सह अखण्डसुखसौभाग्यसन्तत्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिप्राप्तये श्रीतुलसीदेवीप्रीत्यर्थं तुलसीपूजनमहं करिष्ये—

श्रीतुलस्यै नमः इतिमन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रदक्षिणां कृत्वा मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः । तन्मन्त्रः—विष्णुप्रियकरे देवि तुलसि सुखदायिके । पुष्पाञ्जलिं प्रयच्छामि धन्युतायुष्यवर्धिके ॥
अथ प्रार्थना—

सौभाग्यं सन्तति देहि धनं धान्यं च मे सदा । आरोग्यं शोकशमनं कुरु ते माधवप्रिये ॥
पूतनासयतस्थानाद्रक्षितश्च यथा हरिः । तथा संसारसंत्रासाद्रक्ष मे वंशमुत्तमम् ॥

प्रत्येक धार्मिक गृहस्थों के घर स्त्रियाँ तुलसी का पेड़ लगाकर नित्य पूजा करती हैं । इसके पूजन का शास्त्रों में अधिक महत्व कहा गया है ।

सरस्वतीशयनम्

सरस्वत्यावाहनं तदङ्ग पूजनं च करिष्यइति, संकल्प्य—तत्र मूले आवाहनं, पूर्वाषाढासु पूजनं, उत्तराषाढासु बलिदान तदङ्गभूत पूजनं तदनन्तरं श्रवणे विसर्जनाङ्गपूजां कृत्वा विसर्जयेत् ।

[illegible] भावार्थ—सभी विद्याप्रेमी व्यक्तियों को चाहिए कि आश्विन शुक्ल में जिस दिन मूल नक्षत्र हो उस दिन अपनी २ पुस्तकों को स्वच्छ कर रखें और तीन दिन तक उक्त पूजनादि करें ।

गोवर्धन पूजा—(अन्नकूट)—कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन—ब्रजवासी लोग इन्द्र की पूजा [illegible] थे. भगवान कृष्ण ने उक्त दिन इन्द्र का पूजन न कराकर गोवर्धन पूजा कराई और [illegible] में सभी पकवान जिसे ब्रजवासियों ने श्रद्धापूर्वक गोवर्धन को चढ़ाया था, स्वयं [illegible], फलतः इन्द्र कुपित होकर प्रलय कालिक मेघों द्वारा भीषण वृष्टि कराने लगे । जिससे [illegible] अन्त में उनके रक्षण के लिए भगवान ने गोवर्धन को उठाया, यह कथा [illegible] हो गये । इस दिन गोपूजन, और गोवर्धन पूजन का विशेष [illegible] के दशमस्कन्ध में विस्तृत है ।

[illegible] (होलिकादाह)—भक्त प्रह्लाद की बुआ ढुंढा नाम की राक्षसी थी । अपने भाई [illegible] की आज्ञा से प्रह्लाद को जलाने के लिये तैयार हुई । वरदान के कारण अग्निदेव उसे [illegible] थे । उक्त तिथि के दिन भक्त प्रह्लाद को गोदी में लेकर जलती हुई अग्नि में उसने [illegible] । किन्तु भगवान् की कृपा से भक्त प्रह्लाद बच गये और वह जल गई । अतः प्रह्लाद [illegible] में यह उत्सव मनाया जाता है ।

नोट—शुद्ध दशवर्ग [illegible] उसी राशि से २।३० अं[illegible]ना करना तथा नवमांश जान[illegible]कार अन्यत्र पृष्ठ ६६ में दिया [illegible]सी तरह दशवर्ग बनाने की प्र[illegible]चीन महर्षियों को अभिमत थी [illegible]चीन क्रममाध्यमिक है। विशे[illegible]वरण जानने के लिए गरुवर [illegible] की बनायी फलित विकास नाम की पुस्तक को देखिए। मैं आशा करता हूँ कि विद्वज्जन इन बातों पर विचार कर अपनी सम्मति देकर मुझे अनुग्रहीत करेंगे।

सूर्यादि ग्रहों के उच्च संवत् २०२८ मेषसंक्रमण काल के—सू. उ. २।१७।१७।३७ चं. [illegible] ५।६।५१।५७ मं. उ. ४।१०।२।४६ बु. उ. ७।१०।२८।३२ बृ. उ. ५।२१।२२।४९ शु. उ. २।१९।५२।३४ श. उ. ७।२६।२७।३५ [illegible]ही उच्च सूर्य सिद्धान्तानुसार उपलब्ध होता है।

शुद्ध होराचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	अंश
तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	
म.	मि.	सि.	तु.	ध.	कु.	१५
वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	३०

सर्वघातचक्रम्

रोगात गमने रणे नो मङ्गले।

जन्म रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
च. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा.	६	१०	२	७	११	३	९	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	२	८	१२	४	९	१	११	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
मा. घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	वै.	चै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति. घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १६	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वार घात	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	गु.	शु.
न. घा.	म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो. घा.	वि.	शु.	प.	वृ.	प्री.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र. घा.	म.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
धा. घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व. घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.
सं. घा.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.
सं. घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं. घा.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.
वर्ण घा.	र.	श्वेत.	हरि.	पांडु.	धूम्र.	चित्र.	कृष्ण.	कन.	पी.	कु.	धूम्र	श्वेत

अथ लोके प्रसिद्धिसत्वात्—गृहनिर्माणे मण्डलेशानयनम्—स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं मण्डलाधिप उच्यते॥ इंद्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः॥ अथा-ऽऽणप्रमाणम्—(दीर्घ विस्तार) दाता विचक्षणो भीरुः कलहो नृप दानवः। क्लीबश्चौरो धनी चेति नामतुल्यं फलं स्मृतम्।

गणेशचतुर्थी कथा

श्रीगणेश उवाच॥ भद्रे भाद्रपदे मासि संकष्टा या चतुर्थिका। अनेकफलदा प्रोक्ता सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥२॥ पूजा पूर्वविधानेन तस्यां कार्य्या समन्ततः। विशेषं तु प्रवक्ष्यामि भोजनादिषु पार्वति॥३॥ श्रीकृष्ण उवाच—एवं निगदिते पुत्रे पुनः पप्रच्छ पार्वती। को विशेषः प्रकर्तव्यः पूजने भोजनेषु च॥४॥ श्रीगणेश-उवाच—गुरूपदिष्टमार्गेण भक्त्या तद्व्रतमाचरेत्। द्वादशेष्वपि मासेषु पृथग्नामभिरर्चयेत्॥५॥ विनायकश्चैकदन्तः कृष्णपिंगो गजाननः। लम्बोदरो भालचन्द्रो हेरम्बो विकटस्तथा॥६॥ वक्रतुंडश्चाखुरथो विघ्नराजो गणाधिपः। द्वादशनामभिश्चैतैर्गणेशं पूज्येद्व्रती॥७॥ द्वादशेष्वपि मासेषु पूज्यते नामभिः पृथक्॥ चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय नित्यकृत्यं यथोदितम्॥८॥ नलो ह्यासीत्कृतयुगे पुण्यश्लोको नराधिपः। तस्य रूपवती भार्य्या दमयन्तीति विश्रुता॥९॥ तस्य दैववशाच्छापः स्त्रीवियोगविवादकृत्। तदा देव्या कृतं ह्येतद् व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥१०॥ पार्वत्युवाच—केनैव विधिना पुत्र दमयन्ती व्रतोत्तमम् चकार भूपतिं लेभे तृतीये मासि शोभना॥११॥ श्रीकृष्ण उवाच—एवं निगदितः पार्थ पार्वत्या गणनायकः। प्रोवाच वचनं धीमान् विस्तरेण शृणुष्व तत्॥१२॥ श्रीगणेश-उवाच—मातर्नलस्य भूपस्य विपत्तिर्विपुलाभवत्॥ गजाश्च गजशालायां मंदुरायां हया हताः॥१३॥ कोशस्तु तस्करैर्नीतो गृहं दग्धं कृशानुना॥ मंत्रिणोऽपि गतास्तस्य राजकार्यविनाशकाः॥१४॥ अक्षक्रीडनकेनैव राजा सर्वहृतोऽभवत्॥ भग्नदेशस्ततो राजा स्वपुरान्निर्गतो वनम्॥१५॥ दमयंत्या समं तत्र नानाक्लेशैश्च पीडितः॥ तत्रापि दमयन्ती च वियोगं प्राप दैवतः॥१६॥ कस्मिंश्चिन्नगरे राजा भृत्यभावं समागतः॥ कस्मिंश्चिद्विषये भार्या कस्मिंश्चिद्विषये सुतः॥१७॥ भिक्षाशिनस्तु ते सर्वे नानाव्याधिप्रपीडिताः॥ स्वकर्मभोगान् भुंजानः परस्परवियोगिनः॥१८॥ एकदा दमयन्ती सा शरभंगं महामुनिम्। प्रणम्य पादयोर्मूर्ध्ना बद्धाञ्जलिरभाषत॥१९॥ दमयन्त्युवाच—कथं भो मत्पतिप्राप्तिः पुत्रप्राप्तिः कथं भवेत्। कथं गजहयान् राज्यं नगरं नृभिराकुलं॥२०॥ कथमेतादृशं भाग्यं मुने तद्वद निश्चितम्। गणेश उवाच—इति तस्या वचः श्रुत्वा शरभंगोऽब्रवीद्वचः॥२१॥ शरभंग-उवाच—दमयन्ति शृणु वचो वक्ष्यामि हितकारकम्। महासंकष्टशमनं सर्वकामप्रदं शुभम्॥२२॥ भाद्रमासस्य या कृष्णचतुर्थी संकटा तु सा। तस्यां पूज्यो नरैः स्त्रीभिरेकदन्तो गजाननः॥२३॥ पूर्वोक्तेन विधानेन भक्त्या प्रीत्या च श्रद्धया व्रतेनानेन भो देवि लब्धकामा भविष्यति॥२४॥ मुनिमासैर्महाराजमिति मे-निश्चला मतिः। गणेश उवाच—दमयन्ती तदा चक्रे संकष्टव्रतमुत्तमम्। भाद्रे मासि कृतारंभा गणनायार्चने रता॥२५॥ सप्तमासैः पतिं प्राप राज्यं पुत्रं तथैव च। तथैव सुभदं राजा कृत्वा चैव व्रतोत्तमम्॥२६॥ श्रीकृष्ण उवाच—तथा पार्थ व्रतादस्माद्राज्यं प्राप्स्यसि निश्चितम्। वैरिणस्ते पराभूता भविष्यन्ति विशेषतः॥२७॥ इति ते कथितं भूप व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥ करिष्यति महाभागं सर्व-दुःखनिवारणम्॥२८॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादे भाद्रपद-कृष्णचतुर्थीव्रतकथा समाप्ता॥२९॥

105

गणेश व्रत की संक्षिप्त कथा—गणेश व्रत की कथा स्कन्द पुराण में श्रीकृष्ण युधिष्ठिर संवाद प्रकरण में लिखी गई है। जिस कथा को श्री गणेश जी ने श्री पार्वती जी को सुनाया था, उसी को भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शत्रुओं के नाश के लिए उपदेश दिया।

श्री गणेश जी ने कहा कि हे भद्रे! भाद्रपद मास में कृष्ण चतुर्थी के नाम से "संकटा चतुर्थी व्रत" है। सर्वसिद्धिदायिनी इस व्रत को करने से अनेकों फल प्राप्त होते हैं। सर्वप्रथम देवपूजन विधि के अनुसार पूजन करना चाहिए। पार्वती जी के पूछने पर श्री गणेश जी ने कहा कि गुरु उपदेशानुसार भक्तिपूर्वक व्रत को करे, और गणेश के इन बारह नामों (१ गणेश २ एकदन्त ३ कृष्णपिङ्ग ४ गजानन ५ लम्बोदर ६ भालचन्द्र ७ हेरम्ब ८ विकट ९ वक्रतुण्ड १० आखुरथ ११ विघ्नराज १२ गणाधिप) से पूजन करे और (तथा बारह मासों के कृष्णचतुर्थी को भी व्रत क्रम से पूजन कर सकता है।) कथा सुनकर रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य देवे।

कथा प्रारम्भ—कृतयुग में नल नामक पुण्यश्लोक राजा थे, जिनकी परमरूपवती दमयन्ती नाम की स्त्री थी। दैववशात् उस राजा को अपनी स्त्री से वियोग हुआ। किन्तु स्त्री ने इसी व्रत द्वारा पति को प्राप्त किया। माता पार्वती, ने, गणेश जी से पूछा, किस प्रकार दमयन्ती ने उस व्रत को करके तीसरे मास राजा को प्राप्त किया। (श्रीकृष्ण जी अर्जुन से बोले कि हे पार्थ जिस प्रकार गणेश जी ने माता पार्वती को कथा सुनायी थी उसे सुनो।) गणेश जी ने कहा कि हे माता, राजा नल के ऊपर एक समय विपत्ति आ पड़ी। और एकाएक उनका सर्वस्व नष्ट हो गया। सर्व विनाश होने पर राजा स्त्री के साथ वन में चले गये और बहुत कष्ट झेले। एकाएक दम्पति के ऊपर वियोग दुःख भी आ पड़ा। राजा किसी नगर में भृत्य होकर जीवन बिताने लगे। उनकी स्त्री पुत्र भी पृथक् पृथक् रह कर भिक्षावृत्ति से जीवन व्यतीत करने लगे। कुछ समय के बाद रानी दमयन्ती को शरभङ्ग मुनि का दर्शन मिला, मुनि के चरण पर गिर कर रानी ने पति और पुत्र की तथा धन-धान्य की प्राप्ति के लिए उपाय पूछा। श्री गणेश जी बोले कि दमयन्ती के इस प्रश्न पर शरभङ्ग मुनि ने कहा कि भाद्रपद कृष्णचतुर्थी के दिन गणेशव्रत है। उस दिन गणेश जी का पूजन करने से अपने मनोवाञ्छित फल प्राप्त होगा। गणेश जी बोले कि इस प्रकार उस व्रत को करने से दमयन्ती अपने पति, पुत्र और राज्य सम्पत्ति सभी को प्राप्त कर सकी। भगवान् श्री कृष्ण ने राज्य प्राप्ति और शत्रु विनाश के लिए अर्जुन को इस व्रत का उपदेश दिया।

हरितालिका व्रत विधिः—मिट्टी का शिव पार्वती बनाकर कदली स्तम्भ से मण्डित चौकी पीढ़ा वा वेदी पर स्थापित करे—और सायंकाल में स्नानादि से पवित्र होकर कौशेयवस्त्र पहन कर जल अक्षत हाथ में लेकर सङ्कल्प करे—देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रा अमुकप्रवरा अमुक नामाहम् सर्व पापक्षयपूर्वकसप्तजन्मसौभाग्यपुत्रादिसकलसमृद्धिपूर्वकशिवलोकप्राप्तिकामनया सोपवासहरितालिकाव्रतनिमित्तकं यथाशक्तिजागरणपूर्वकञ्च उमामहेश्वरपूजनं करिष्ये—हाथ में पुष्प लेकर श्रद्धाञ्जलि होकर ध्यान करे—मन्त्र—मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥ अथ आवाहनम्। आगच्छ देवि सर्वेशि सर्वदेवैश्च संस्तुते। अतस्त्वां पूजयिष्यामि प्रसन्ना भव पार्वति ॥२॥ अथध्यानम्—शिवे-शिवप्रिये देवि मङ्गले च जगन्मयि। शिवे कल्याणदे देवि शिवरूपे नमोऽस्तु ते ॥३॥ अथपाद्यम्। शिवरूपे नमस्तेऽस्तु शिवायै सततं नमः। शिवप्रीतियुता नित्यं पाद्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ अथार्घ्यम्। संसारतापविच्छेदं कुरु मे सिंहवाहिनि। सर्वकामप्रदे देवि अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥५॥ अथाचमनम्। राज्यसौभाग्यदे देवि प्रसन्नाभव पार्वति। मन्त्रेणानेन देवि त्वं पूजितासि महेश्वरि ॥६॥ लोकानां सृष्टिकर्त्री त्वं मुक्तिदा च सदा नृणाम्। वाञ्छितं देहि मे नित्यं दुरितं च विनाशय ॥७॥ ततः पञ्चामृत स्नानम्—पञ्चनद्यः सरस्वती अभिवन्ति सस्रोतसः। सरस्वतीतु पञ्चधा स देशेऽभवत्सरित् ॥८॥ अथ वस्त्रम्—वस्त्र युग्मं गृहाणेदं देवि देवस्य वल्लभे। सर्वसिद्धिप्रदे देवि मङ्गलं कुरु मे सदा ॥९॥ अथचन्दनम् चन्दनेन सुगन्धेन कर्पूरागरुकुङ्कुमैः। लेपय सर्वगात्राणि प्रीयतां च हरप्रिये ॥१०॥ अथाक्षतान्—रञ्जिताः कुङ्कुमेनैव अक्षतैश्च सुशोभनैः। पूजयेद् विधिना देवीं सुप्रसन्नाञ्च पार्वतीम् ॥११॥ अथ-पुष्पम्—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मया दत्तानि पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥[illegible]॥ अथ धूपम्—चन्दनागुरुकस्तूरीकुंकुमाढ्या मनोहरः। भक्त्या दत्तो मया देवि धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥[illegible]॥ अथदीपम्—त्वं ज्योतिः सर्वदेवानां तेजसां तेज उत्तमम्। आत्मज्योतिः परम्धाम दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१४॥ अथनैवेद्यम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे निश्चलां कुरु। ईप्सितं च वरं देहि [illegible] च परांगतिम् ॥१५॥ अथफलम्—इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवे-ज्जन्मनि जन्मनि ॥१६॥ अथताम्बूलम्—पूगीफलंमहद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरेण [illegible] युक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥१७॥ अथप्रार्थना—सौभाग्यञ्चाप्यवैधव्यं पुत्रपौत्रादिकं सु[illegible] बहुपुण्यफलं सर्वं ततः शान्ति च देहिमे ॥१८॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदीश्वरि। पूजि[illegible] महादेवि सम्पूर्णञ्च तदस्तु मे। इति पूजाविधि समाप्तः।

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ हरितालिकाव्रतकथा श्रवणं कुर्यात्। तद्यथा—मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालांकितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥ कैलाशशिखरे रम्य गौरी पृच्छति शंकरम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं कथयस्व महेश्वर ॥२॥ [illegible] सर्व धर्माणामल्पायासं महत्फलम्। प्रसन्नोऽसि यदानाथ तथ्य ब्रूहि ममाग्रतः ॥३॥ केन त्वं हि [illegible] प्राप्तस्तपोदानव्रतादिना। अनादिमध्यनिधनो भर्ता चैव जगत्प्रभुः ॥४॥ ईश्वरउवाच ॥ श्रृण [illegible] प्रवक्ष्यामि तवाग्र व्रतमुत्तमम्। यद्गोप्यं मम सर्वस्वं कथयामि तव प्रिये ॥५॥ यथा चोडुगणे[illegible] ग्रहाणां भानुरेव च। वर्णानां च यथा विप्रो देवानां विष्णुरेव च ॥६॥ नदीनां च यथा गंगा पुर[illegible] च भारतम्। वेदानां च यथा साम इन्द्रियाणां मनो यथा ॥७॥ पुराणवेदसर्वस्वं आगमे च यथोदि[illegible] एकाग्रेण श्रृणुष्वैतद्यथा दृष्टं पुराव्रतम् ॥८॥ येन व्रतप्रभावेण प्राप्तमर्द्धासनं मम। तत्सर्वं क[illegible]ष्यऽहं त्वं मम प्रेयसी यतः ॥९॥ भाद्रे मासि सिते पक्ष तृतीयाहस्तसंयुते। तदनुष्ठानमात्रेण [illegible] पापात्प्रमुच्यते ॥१०॥ शृणु देवि त्वया पूर्वं यद्व्रतं चरितं महत्। तत्सर्वं कथयिष्यामि यथ[illegible] हिमालये ॥११॥ पार्वत्युवाच—कथं कृतं मयानाथ व्रतानामुत्तमं व्रतम्। तत्सर्वं श्रोतुमिच्[illegible] त्वत्सकाशान्महेश्वर ॥१२॥ पार्वत्युवाच—कथं कृतं मयानाथ व्रतानामुत्तमं व्रतम्। भूमिसमाकीर्णं नानाद्रुमसमाकुलः ॥१३॥ नानापक्षिसमायुक्तो नानामृगविचित्रितः। यत्र [illegible] सगन्धर्वाः सिद्धचारणगुह्यकाः ॥१४॥ विचरन्ति सदा हृष्टा गन्धर्वाः गीततत्पराः। स्फटिकैः का[illegible] श्रृंगं मणिवैदूर्यभूषितम् ॥१५॥ भुजैर्लिखन्निवाकाशं सुहृदो मंदिरं यथा। हिमेन पूरितं सर्वं गंगा[illegible] निनादितम् ॥१६॥ पार्वति त्वं यथा बाल्ये परमाचरती तपः। अब्दद्वादशकं देवि धूम्रपाना अधो[illegible] ॥१७॥ संवत्सरचतुः षष्टि पक्वपर्णाशनं कृतम्। माघमासे जले मग्ना वैशाखे चाग्निसेविनी ॥[illegible]॥ श्रावणे च बहिर्वासा अन्नपानविवर्जिता। दृष्ट्वा तातेन तत्कष्टं चिन्तया दुःखितोऽभवत् ॥[illegible]॥ कस्मै देया मया कन्या एवं चिंतातुरोऽभवत्। तदैवावसरे प्राप्तो ब्रह्मपुत्रस्य धर्मवित् ॥२०॥ ना[illegible] मुनिशार्दूल शैलपुत्री दिदृक्षया। दत्त्वार्घ्यं विष्टरं पाद्यं नारदं प्रोक्तवान् गिरिः ॥२१॥ हिम[illegible]वाच ॥ किमर्थमागतः स्वामिन् वदस्व मुनिसत्तम। महाभाग्येन संप्राप्तः त्वदागमनमुत्तमम् ॥[illegible]॥ नारद उवाच—श्रृणु शैलेन्द्र मद्वाक्यं विष्णुना प्रेषितोऽस्म्यहम्। योग्यं योग्याय दातव्यं कन्यारत्न[illegible] त्वया ॥२३॥ वासुदेव समो नास्ति ब्रह्मशक्रशिवादिषु। तस्मद्देया त्वया कन्या अस्मार्थे सम्मतं [illegible] ॥२४॥ हिमवानुवाच—वासुदेवः स्वयंदेवः कन्यां प्रार्थयते यदि। तदा मया प्रदातव्या त्वदागम[illegible] गौरवात् ॥२५॥ इत्येवं कथितं श्रुत्वा नभस्यन्तदधे मुनिः। ययौ पीताम्बरधरं शंखचक्रगदाभृ[illegible] ॥२६॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा मुनीन्द्रस्तमभाषत ॥ नारद उवाच—श्रृणु देव भवत्कार्यं विवाह[illegible] निश्चितस्तव ॥२७॥ हिमवांस्तु ततो गौरीमुवाच वचनं मुदा। ददामि त्वं मया पुत्रि देवे त्वं गरुड-ध्वजे ॥२८॥ श्रुत्वा वाक्यं पितुर्देवि गता च सखिमन्दिरम् ॥ भूमौ पतित्वा सा तत्र विललापाति दुःखिता ॥२९॥ विलपन्तीं तदा दृष्ट्वा सखीवचनमब्रवीत् ॥ सख्युवाच—किमर्थं दुःखिता देवि कथयस्व ममाग्रतः ॥३०॥ यद्भवत्याभिलषितं करिष्येऽहं न संशयः। पार्वत्युवाच—सखि श्रृणु मन प्रीत्यामनोऽभिलषितं मम ॥३१॥ महादेवं च भर्तारं करिष्येऽहं न संशयः। एतन्मे चिन्तितं का[illegible] तातेन कृतमन्यथा ॥३२॥ तस्माद्देहपरित्यागं करिष्येऽहं न संशयः। पार्वत्या वचनं श्रुत्वा सखी-वचनमब्रवीत् ॥३३॥ सख्युवाच—पिता यत्र न जानाति गमिष्यामि हि तद्वनम्। इत्येवं मनसा कृत्वा [illegible] नीतासि त्वं मतङ्गलम् ॥३४॥ पिता निरीक्षयामास हिमवांस्तु गृहे गृहे। केन नीता च मे पुत्री [illegible] दानवकिन्नरैः ॥३५॥ नारदाग्रे कृतं सत्यं किं दास्ये गरुडध्वजे। इत्येवं चिन्तयाविष्टो मूर्छा[illegible] पपात ह ॥३६॥ हा हा कृत्वा प्रधावन्तो लोकास्ते गिरिपुङ्गवम्। ऊचुर्गिरिवरं सर्वे मूर्छितं गिरे[illegible] ॥३७॥ गिरिरुवाच—दुःखस्य हेतुं श्रृणुत कन्यारत्नं हृतं मम। दष्टा वा कालसर्पेण सिंहव्याघ्रेण वा हता ॥३८॥ न जाने क्व गता पुत्री केन दुष्टेन वा हृता। चकम्पे शोकसंतप्तो वातेनेव महातरुः ॥३९॥ गिरिर्वनाद्वनंयातस्त्वदालोकनकारणात्। सिंहव्याघ्रैश्च भल्लैश्च रोहिभिश्च महावनम् ॥४०॥ त्वं चापि विपिनं घोरे व्रजन्ती सखिभिःसह। तत्र दृष्ट्वा नदीं रम्यां तत्तीरे च महागुहाम् ॥४१॥ तां प्रविश्य सखीसार्धमन्नभोगविवर्जिता। संस्थाप्य बालुकालिङ्गं पार्वत्या सहितं मम ॥४२॥ भाद्रशुक्लतृतीयायां त्वमर्चयन्ती तु हस्तभे। तत्र वादनगीतेन रात्रौ जागरणं कृतम् ॥४३॥ व्रतराजप्रभावेण आसनं चलितं मम ॥ संप्राप्तोऽहं तदा तत्र यत्र त्वं सखिभिः सह ॥४४॥ प्रसन्नोऽस्मि मया प्रोक्तं वरं ब्रूहि वरानने ॥ पार्वत्युवाच ॥ यदि देव प्रसन्नोऽसि भर्ता भव महेश्वर ॥४५॥ तथेत्युक्त्वा तु संप्राप्तः कैलासं पुनरेव च। ततः प्रभाते प्रतिमां नद्यां कृत्वा विसर्जनम् ॥४६॥ पारणं तु कृतं तत्र सख्या सार्द्धं त्वया शुभे। हिमवानपि तं देशमाजगाम वनाद्वनम् ॥४७॥ चतुराशा निरीक्षंस्तु विकलो पतितो भुवि। दृष्ट्वा तत्र नदीतीरे प्रसुप्तं कन्यकाद्वयम् ॥४८॥ उत्थाप्योत्संगमारोप्य रोदनं कृतवान् गिरिः। सिंहव्याघ्रादिभिर्युक्ते किमर्थं वनमागता ॥४९॥ पार्वत्युवाच—शृणु तात मया पूर्वं दत्तः स्वात्मा तु शंकरे ॥ तदन्यथाकृतं तात तेनाहं वनमागता ॥५०॥ तथेत्युक्त्वा हिमवती नीतासि त्वं गृहं प्रति। यथा प्रयुक्तमस्माकं कृत्वा वैवाहिकीं क्रियाम् ॥५१॥ तेन व्रतप्रभावेण प्राप्तमर्धासनं प्रिय। तदादि व्रतराजं तु कस्याग्रे न न्यवेदयत ॥५२॥ व्रतराजस्य नामेदं श्रृणुदेवि यथाभवत्। आलिभिर्हरिता यस्मात्तस्मात्सा हरितालिका ॥५३॥ पार्वत्युवाच ॥ नामेदं कथितं नाथ विधिं वद च मे प्रभो। किं पुण्यं किं फलं चास्य केन वा क्रियते व्रतम् ॥५४॥ ईश्वर उवाच ॥ श्रृणु देवि विधिंवक्ष्ये नारीणां व्रतमुत्तमम्। कर्तव्यं तु प्रयत्नेन यदि सौभाग्यमिच्छति ॥५५॥ तोरणादि च प्रकर्तव्यं कदलीस्तंभमंडितम्। आच्छाद्य पटवस्त्रेण नानावर्ण विचित्रतम् ॥५६॥ चन्दनेन सुगन्धेन लेपयेद् गृहमण्डपम्। शंखभेरीमृदंगांश्च वादयेद् बहुभिर्जनैः ॥५७॥ नानामंगलसंचारं कर्तव्यं मम सद्मनि। स्थापयेत्प्रतिमां तत्र पार्वत्या सहितं मम ॥५८॥ पूजयेद्बहुभिः पुष्पैर्गन्धधूपैर्मनोहरैः ॥ नानाप्रकारनैवेद्यैरुपोष्य जागरणं निशि ॥५९॥ नारिकेलैः पूगफलैर्जंबीरैः सलवंगकैः। बीजपूरैस्तु नारंगैः फलैरन्यैर्विशेषतः ॥६०॥ ऋतुदेशोद्भवैश्चैव फलैश्च कुसुमैरपि। धूपदीपादिभिश्चैव मंत्रेणानेन पूजयेत् ॥६१॥ शिवायै शिवरूपिण्यै मंगलायै महेश्वरि। शिवे सर्वार्थदे देवि शिवरूपे नमोऽस्तु ते ॥६२॥ शिवरूपे नमस्तुभ्यं शिवायै सततं नमः। नमस्ते ब्रह्मरूपिण्यै जगद्धात्र्यै नमोनमः ॥६३॥ संसारभयसंत्रस्तांत्राहि मां सिंहवाहिनि। येन कामेन भो देवि पूजितासि महेश्वरि ॥६४॥ राज्यं सौभाग्यं मे देहि प्रसन्नाभव पार्वति। मन्त्रेणानेन भो देवि पूजयेदुमया सह ॥६५॥ कथां श्रुत्वा विधानेन दद्याद्वस्त्रादिकं तथा। ब्राह्मणाय प्रदातव्यं वस्त्रधेनुर्हिरण्यकम् ॥६६॥ कृत्वैवं चैकचित्तेन दम्पतिभ्यां सहैव तु ॥ संकल्पस्तु ततः कुर्याद्वस्त्ररत्नादिकं च यत् ॥६७॥ एवं या कुरुते देवि सर्वपापैः प्रमुच्यते। सप्त जन्म भवेद्राज्यं सौभाग्यं सुखदायकम् ॥६८॥ तृतीयायां तु या नारी अन्नाहारं समाचरेत्। सप्त-जन्म भवेद्वन्ध्या वैधव्यं च पुनः पुनः ॥६९॥ दारिद्र्यपुत्रशोकश्च कर्कशादुःखभागिनी। सा पतिता नरके घोरे नोपवासं करोति या ॥७०॥ अन्नाहारात् शूकरीस्यात् फलभक्षेण मर्कटी ॥ जलौका जलपानेन क्षीराहारेण सर्पिणी ॥७१॥ मांसाहाराद्भवेद्व्याघ्री मार्जारी दधिभक्षणात्। मिष्टान्नात् पिपीलिका जन्म मक्षिका सर्वभक्षणात् ॥७२॥ निद्रावशेनाजगरी कुक्कुटी पतिवंचनात्। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन-[illegible] कुर्यात् सदाशिवः ॥७३॥ कांचनं राजतं ताम्रं तथा वंशस्य भाजनम्। दापयेदन्नं विप्राय पारणा-नदनन्तरम् ॥७४॥ एवं विधिं या कुरुते च नारी मया निभं सा लभते च स्वामिनम्। विनाशकाले तव तुल्यरूपं सायुज्यमुक्तिं लभते च भुक्तिम् ॥७५॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। कथाश्रवणमात्रेण तत्फलं प्राप्यते नरैः ॥७६॥ एतत्ते कथितं देवि व्रतानां व्रतमुत्तमम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥७७॥ इति लिङ्ग पुराण हरितालिकाव्रतकथा समाप्ता ॥

हरितालिका व्रत की संक्षिप्त कथा—हरितालिका व्रत की कथा लिङ्गपुराण से उद्धृत है। इस कथा को श्री शिवजी ने पार्वती जी के विशेष आग्रह पर उन्हें कैलाश पर्वत पर सुनाया था। एक बार कैलाश पर्वत के शिखर पर बैठे हुए शिव जी से पार्वती जी ने कहा कि हे नाथ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो अत्यन्त गोप्य से गोप्य व्रत को, जिसके करने से [illegible] फल से हो उसे सुनाइये। भगवान् शङ्कर बोले मैं उस गोपनीय तथा फलदायक यह भी समझा है, मन को एकाग्र करके सुनो। भाद्रपदशुक्ल तृतीया के दिन हस्त[illegible] माहात्म्य और विधि को [illegible] को करने से पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी व्रत को तुमने पहले

को बतला रहा हूँ। श्री पार्वती जी ने पूछा कि किस व्रत को मैंने किया था? शिव जी बोले पर्वतों के राजा हिमवान् है जहाँ पर गन्धर्व, सिद्ध चारण, गुह्यक आदि का निवास है। वहीं पर तुमने [illegible] बाल्यकाल में कठिन तप किया था। तुम्हारी कठिन तपस्या को देखकर तुम्हारे पिता हिमवान को यह चिन्ता हुई कि किसे इस कन्या को प्रदान करूँ। उसी समय श्री नारद जी वहाँ पधारे। उनके यथोचित सत्कार के पश्चात् हिमवान ने पूछा कि हे नाथ! आप किस लिये पधारे हैं? श्री नारद जी ने कहा कि मैं वासुदेव द्वारा भेजा गया आपके पास आया हूँ। उनका कहना है, कि योग्य वर को ही कन्या देना उचित है, अतः उनके अतिरिक्त दूसरा कौन योग्य है? वह सर्वश्रेष्ठ है। श्री हिमवान ने उत्तर दिया कि विष्णु भगवान् को अपनी कन्या देना मुझे स्वीकार है। इसके बाद नारद जी ने विष्णु लोक में जाकर विष्णु भगवान से यह वृतान्त सुनाया। श्री हिमवान ने गौरी से कहा कि पुत्री! तुम्हें मैं विष्णु को दान करना चाहता हूँ। पिता की बात सुनकर रोती हुई गौरी सखी के पास पहुँची और पृथ्वी पर गिर पड़ी। सखी ने पुछा कि [illegible] प्रकार क्यों रो रही हो? पार्वती ने कहा कि श्री शिव जी ही हमारे अभीष्ट देव हैं और [illegible] जी ने मुझे श्री विष्णु भगवान को प्रदान करने का वचन दिया है। अतः मैं इस [illegible] शरीर को छोड़ देना चाहती हूँ। सखी ने पार्वती को उस वन में पहुँचा दिया जिस [illegible] को हिमवान नहीं जानते थे। इस प्रकार पार्वती के गुप्त हो जाने पर हिमवान को बहुत दुःख हुआ और वह मूर्छित हो गये। उन्हें विष्णु को कन्या दान करने की बात जब स्मरण हो जाती तो और कष्ट होने लगता था। पार्वती को उन्होंने सभी स्थानों में ढुढ़वाया। सभी बड़े बड़े पर्वत आकर राजा के मूर्छा का कारण पूछने लगे, सबसे उन्होंने पार्वती हरण की बात कही। शिवजी बोले कि हे पार्वती, तुम सखी के साथ भयानक घोर जंगल में होते हुए एक सुन्दर नदी तट पर पहुँची, और वहाँ एक पर्वत गुहा में प्रविष्ट होकर समग्र भोगों को छोड़ कर, भाद्रशुक्ल तृतीया के दिन हस्तनक्षत्र होने पर तुमने पार्वती के सहित बालू का लिङ्ग स्थापित करके वाद्य और गीत के साथ मेरी पूजा की, रात्रि में जागरण भी की। उस व्रत के प्रभाव से मेरा आसन चलित हो गया। सखी के साथ तुम्हें मेरा दर्शन हुआ। मैंने कहा कि वर माँगो, और तुमने मुझे वर रूप में याचना किया। मैंने "तथास्तु" कहा और तुमने दूसरे दिन प्रातः [illegible] प्रतिमा का विसर्जन किया। उसी समय वन में ढूढ़ते हिमवान वहाँ पहुँच गये और तुम्हें देख प्रसन्न होकर गोदी में बैठाकर घनघोर जंगल में आने का कारण पूछा, तब तुमने पूर्वजन्म के वृतान्त को उनसे बतलाकर मुझे पति रूप में पाने की बात बतलाया प्रसन्न होकर हिमवान ने घर पहुँच विवाह को सम्पन्न किया। उस व्रत के प्रभाव से तुमने मेरे आधे आसन को प्राप्त किया इसके बाद पार्वती जी ने शिवजी से व्रत के विधि विधान को पूछा। श्री शिवजी ने कहा कि यह स्त्रियों का व्रत है। व्रत के दिन तोरणादि से [illegible] सजा कर सुगन्धित द्रव्यों से युक्त गृह मण्डप में वाद्यगीत के साथ पार्वती सहित [illegible] पूजा करके दिन [illegible] करना चाहिये। पश्चात् उक्त पूजनविधि से पूजा करके [illegible] प्रार्थना से सन्तुष्ट होकर [illegible] चाहिये। हे देवि! जो स्त्री इस व्रत को करती है वह पापों से [illegible] पूर्व वृत्तान्त को [illegible] मनोवाञ्छित फल प्राप्त करती है। तथा जो स्त्री उस दिन अन्नग्रहण [illegible] कहे सुनाया। [illegible] जन्मान्तर वैधव्य भोगना पड़ता है। "हरितालिका व्रत" कथा को सुनने पश्चात् अनन्त [illegible] अश्वमेध यज्ञ और सैकड़ों "वाजपेय यज्ञ" करने का फल प्राप्त होता है। बोले कि हे प्यारी [illegible] जो स्त्री इस व्रत को मैंने तुम्हें बतलाया। बोले जो आप [illegible] देवि! इस उत्तमोत्तम व्रत को [illegible] इष्टफल को प्राप्त करेगी इसमें संशय नहीं है। यह गति थी [illegible] सभी पापों से छुटकारा पाकर

जो थीं वह [illegible] प्रदान करती [illegible] गुफा कठिन [illegible] दृश्य देख वह [illegible] लोक को चले [illegible] करके अपना [illegible] वह भवसागर [illegible]

[illegible] पूरा तु जाह्नवीतीरे धर्मो धर्मपराक्रम। जरासन्धवधार्थाय [illegible] अनन्तव्रतकथा ॥" सूत उवाच। [illegible] कृष्णेन सह धर्मोऽसौ भीमार्जुनसमन्वितः। यज्ञशालां प्रकुर्वीत नानारत्नोप-शोभिताम् ॥१॥ यज्ञार्थं भूपतीन्सर्वान् समानीय [illegible] ॥२॥ मुक्ताफलसमाकीर्णां महेन्द्रभवनसन्निभाम्। दुर्योधन इति ख्यातः सभागम्य मयालयम् ॥३॥ गान्धारीतनयो राजा चैकदा नृपनन्दनः। [illegible] कृत्वा तु वस्त्राणि तत्र गच्छन् शनैः शनैः [illegible] दुर्योधनस्तत्र भ्रान्तश्च जलसन्निधौ। दुर्योधनस्ततो गच्छन्जलमध्ये पपात ह ॥६॥ [illegible] तं दृष्ट्वा भीमार्जुनयमाकुलाः। [illegible] द्रौपद्यादिसुलोचनाः ॥७॥ उपहासं च चक्रुस्ता [illegible] महाराजा-[illegible] तपोधनाः।

वा देवदेवेशमनन्तमपराजितम् । वन्दमानो जगादोच्चैर्जयशब्द पुरःसरम् ॥१०२॥ पापोऽहं
हिं पापात्मापापसम्भवः । त्राहि मा पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरोभव ॥१०३॥ तच्छ्रुत्वाऽनन्त-
प्राह सुस्निग्धयागिरा । मा भैस्तं ब्रूहि विप्रेन्द्र यत्ते मनसि वर्तते ॥१०४॥ कौण्डिन्य उवाच ॥
त्यवलिप्तेन त्रोटितोऽनंतदोरकः । तेन पापविपाकेन भूतिर्मे प्रलयं गता ॥१०५॥ स्वजनैः
गेहे न कश्चिन्मां प्रभाषते । निर्वेदाद्गमितेऽरण्ये तव दर्शनकांक्षया ॥१०६॥ कृपया देव-
यात्मा संप्रदर्शितः । तस्य पापस्य मे शान्ति कारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ १०७ ॥ श्रीकृष्ण उवाच—
त्वाऽनन्तदेवेश उवाच द्विजसत्तमम् । भक्त्या सन्तोषितो देवः किं न दद्याद्युधिष्ठिर ॥ १०८ ॥
नन्त उवाच—स्वगृहं गच्छ कौण्डिन्य मा विलम्बं कुरु द्विज । चरानन्तव्रतं भक्त्या नववर्षाणिपञ्च च
॥ सर्वपाप विशुद्धात्मा प्राप्स्यते सिद्धमुत्तमम् ॥ पुत्रपौत्रान् समुत्पाद्य भुक्त्वा भोगान्यथे-
त् ॥ ११० ॥ अंते मत्स्मरणं प्राप्य मामुपैस्यप्यसंशयम् । अन्यच्च ते वरं ददमि सर्वलोको-
तम् ॥१११॥ इदमाख्यानकवरं शीलानन्तव्रतादिकम् । करिष्यति नरो यस्तु कुर्वन् व्रतमिदं
॥११२॥ सोऽचिरात् पापनिर्मुक्तः प्राप्नोति परमाङ्गतिम् । गच्छ विप्रगृहं शीघ्रं मया-
ोहर्सि ॥११३॥ कौडिन्य उवाच ॥ स्वामिन्पृच्छामि ते ब्रूहि किञ्चित् कौतूहलं मया ।
भ्रमता दृष्टस्तद् वदस्व जगद्गुरो ॥११४॥ कश्चूतवृक्षकस्तत्र का गौः को वृषभस्तथा ।
उत्पलकल्हारैः शोभितं सुमनोहरम् ॥११५॥ मयादृष्टं महारण्ये किं तत् पुष्करिणीद्वयम् । कःखरः
ः कोऽसौ कोऽसौ वृद्धो द्विजोत्तमः ॥११६॥ अनन्त उवाच–चूतवृक्षो विप्रोऽसौ वेदविद्या–
दः । विद्या न दत्ता शिष्येभ्यस्तेनासौ तरुतां गतः ॥११७॥ या गौर्वसुन्धरा दृष्टा पूर्वं सा वीज
ी । वृषो धर्मस्त्वयादृष्टः शाद्वले सत्यमास्थितः ॥११८॥ धर्माधर्मव्यवस्थानं तच्च पुष्करिणी-
। ब्राह्मण्यो केचिदप्यास्तां भगिन्यौ तत्परस्परम् ॥११९॥ धर्माधर्मादि यत्किञ्चित्तन्निवेदयतो
। विप्राय वेदविदुषे न दत्तं दुर्बलाय वै ॥१२०॥ भिक्षादत्ता न चार्थिभ्यस्तेन पापेन कर्मणा ।
कल्लोलमालाभिर्गच्छतस्तु परस्परम् ॥१२१॥ खरः क्रोधस्तथादृष्टः कुञ्जरो मद उच्यते ।
गोऽसावनन्तोऽहं गुहासंसार गह्वरम् । १२२ ॥ इत्युक्त्वा देवदेवशस्तत्रैवान्तरधीयत । स्वप्न
दृष्ट्वा ततः स्वगृहमागतः ॥१२३॥ कृत्वाऽनन्तव्रतं सम्यक् नववर्षाणि पञ्च च । भुक्त्वा
यथोक्तं पाण्डुनन्दन ॥१२४ ॥ अन्ते मत्स्मरणं प्राप्य ततोऽनन्त पुरे द्विजः । तथा त्वमपि
शृण्वन् व्रतं कुरु ॥१२५॥ प्राप्यसि चिन्तितं सर्वमनन्तस्यवचो यथो । यद्वच्चतुर्दशे वर्षे फलं
ना ॥१२६॥ वर्षेकेन तदाप्नोति कृत्वोपाख्यानकं व्रतम् । एतते कथितं भूप व्रताना-
॥१२७॥ यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः । तेऽपि पापविनिर्मुक्ताः प्राप्स्यन्ति
॥१२८॥ संसारगह्वरगुहासु सुखं विहर्तुर्वाञ्छन्ति ये कुरुकुलोद्भव शुद्धसत्वः । संपूज्य
न्तदेवं दधन्ति दक्षिणकरे वरदोरकं ते ॥ १२९ ॥ इति श्रीमदनन्तव्रते पूजाकथा च
मदनन्तार्पणमस्तु ॥

त कथा—श्री सूत जी ने शौनक आदि ऋषियों को इस "अनन्त व्रत" कथा को सुनाया
धर्मवीर महाराज युधिष्ठिर जरासन्ध को मारने के लिए राजसूययज्ञ प्रारम्भ किये ।
, शकुनी आदि भी पधारे थे । यज्ञशाला-भूमि में घमते समय दुर्योधन को स्थल के
जल के स्थान पर स्थल प्रतीत हो रहा था फलस्वरूप कई स्थानों पर गिर पड़ा,
कर सभी लोग हंसने लगे, हंसने वालों में द्रौपदी भी थी । दुर्योधन को अपना
हो गया और वह अपने मामा शकुनी से घर लौट जाने के लिये आग्रह किया,
के समझाने पर यज्ञ में सम्मिलित हुआ । हस्तिनापुर लौटने पर पाण्डवों को
ण लेकर दुर्योधन ने शकुनी की सहायता से पाण्डवों की सभी राज्य-सम्पत्ति जीत
अनुसार पाण्डव वनमें चले गये । वहाँ पर श्रीकृष्णजी भेंट करने के लिये गये ।
सत्कार के पश्चात् धर्मराज ने अपने इस दुःख से छुटकारा पाने के निमित्त भगवान श्रीकृष्ण से
य पूछा । श्रीकृष्ण भगवान् ने 'अनन्त व्रत' करने के लिए उन्हें उपदेश दिया और यह भी समझा
कि 'अनन्त' मैं ही हूँ और यह मेरा ही व्रत है । युधिष्ठिर ने अनन्त व्रत के माहात्म्य और विधि को
रण से पूछा, और यह भी पूछा कि पूर्व में इस व्रत को किसने किया था ?

श्री कृष्ण भगवान् ने कहा कि सतयुग में सुमन्तु नामक ब्राह्मण थे । उनकी पत्नी भृगुऋषि की कन्या थी ; दीक्षा उसका नाम था । उससे शीला नाम की एक कन्या पैदा हुई । थोड़े समय के बाद ऋषिपत्नी की मृत्यु हो गई और मृत्यु के बाद दुःशीला नामक दूसरी कन्या से ऋषि ने अपना विवाह कर लिया । शीला ने अपने पिता के घर में ही बहुत कलाकौशल सीख ली । कन्या की अवस्था जब विवाह योग्य हुई, तब सुमन्तु ने कौण्डिन्य नामक ऋषि से शीला का विवाह कर दिया । विवाह के पश्चात् सुमन्तु ने अपनी कर्कशा स्त्री से दामाद को दहेज में द्रव्यादिक देने के लिये कहा । सुमन्तु की कर्कशा स्त्री ने झूठ बोलकर उन्हें यों ही विदा किया । कौण्डिन्य मुनि शीला को रथ पर चढ़ाकर विदा हुए और रास्ते में मध्याह्नकाल होने पर यमुना तट पर संध्या वन्दन करने लगे । उसी समय शीला एक स्त्रियों के झुंड को चतुर्दशी के दिन जनार्दन भगवान् का पूजन करते हुए देखा उनसे उस व्रत के विषय में पूछा । उन स्त्रियों ने शीला को अनन्त व्रत के विधान को समझाया कि कुशा के शेष नाग के मण्डल में विष्णु की प्रतिमा रखकर देवपूजन विधि से पूजन कर केशर के रंग से रंगा हुआ सूत से चौदह गांठ वाला डोरा हाथ में बांधे । पश्चात् भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे और दान दे । इस प्रकार के उत्तम व्रत को शीला भी प्रारम्भ कर दी और उसके पास जो पाथेय था उसे आधा ब्राह्मण को दान दे पति के साथ घर गई । इस व्रत के प्रभाव से उसके पास मणियों से जड़ित आभूषण हो गये । एक दिन कौण्डिन्य मुनि ने अपने पत्नी के हाथ का बँधा डोरा देख कर उसके विषय में पूछा । शीला ने बतलाया कि यह अनन्त भगवान् हैं । अज्ञानवश कौण्डिन्य ने उस डोरे को तोड़कर अग्नि में फेंक दिया । उसी समय दौड़ कर शीला ने उसे दूध में डाल दिया । अनन्त भगवान् के कोप से कौण्डिन्य मुनि का धन-धान्य सभी जहाँ का तहाँ नष्ट भ्रष्ट हो गया । एक दिन शीला से उन्होंने इस विपत्ति का कारण पूछा । शीलावती शीला ने उन्हें अनन्त भगवान् के कोप को ही विपत्ति का मूल कारण बतलाया । स्त्री की बात सत्य मान कर अनन्त भगवान् की खोज में वे जंगलों में घूमने लगे । कुछ दूर जाने पर उन्हें एक दूषित फल वाला आम्र का वृक्ष दिखाई पड़ा उस वृक्ष से उन्होंने अनन्त के विषय में पूछा कि हे आम्र ! तुमने अनन्त भगवान् को देखा है ? उसने उत्तर दिया कि नहीं । इस प्रकार कौण्डिन्य ने बछड़े सहित, गौ और बैल से क्रमशः पूछा उन सबों ने भी नकारात्मक उत्तर दिया । इसके बाद उस ब्राह्मण ने भ्रमर हंस, चकोर, आदि से युक्त दो पुष्करिणियों से अनन्त भगवान् के विषय में पूछा उन बावलियों ने भी नकारात्मक उत्तर दे दिया । पश्चात् क्रमशः एक गधा, तथा एक हाथी से पूछा, उन दोनों ने कहा कि हम अनन्त भगवान् को नहीं जानते । निराश होकर उस ब्राह्मण ने ज्यों ही आत्महत्या करना चाहा । तभी ब्राह्मण वेषधारी अनन्त भगवान् प्रकट हुए और कौण्डिन्य का हाथ पकड़ कर एक गुफा में ले गये । वहाँ जाकर एक विशाल नगर देखा जिसमें विष्णुभगवान् सभी जनों से पूजित थे । भगवान् का दर्शन पाकर कौण्डिन्य ने उनकी बहुत प्रशंसा की । कौण्डिन्य की प्रार्थना से संतुष्ट होकर भगवान् कौण्डिन्य से अपने मन की बात कहने का आदेश दिया । कौण्डिन्य अपने पूर्व वृत्तान्त को (जिस प्रकार उसने अनन्त के डोरे को तोड़ा था तथा उसे जो जो कष्ट हुआ था) कह सुनाया । भगवान् ने कष्ट से छुटकारा पाने के लिये चौदह अनन्त व्रत करने को कहा । इसके पश्चात् अनन्त भगवान् ने उस ब्राह्मण से कहा कि जिस मार्ग से आये हो उसी से चले जाओ । कौण्डिन्य बोले कि हे प्रभो मैंने जंगल में घूमते हुए जो जो कौतुक देखा है कृपया उसे समझा दीजिये । भगवान् बोले जो आम्र का वृक्ष था वह वेद वेदाङ्गयुक्त पूर्व जन्म का ब्राह्मण था । विद्या दान न करने से उसकी यह गति थी जो गौ थी वह बीजहारिणी पृथ्वी थी, वृषभ सत्यनारायण धर्म था । दो पुष्करिणी जो थीं वह दोनो बहिन ब्राह्मणी थीं भिक्षुक को भिक्षा नहीं देने के कारण एक दूसरे के जल को आदान प्रदान करती थीं । गदहा क्रोध था, हाथी अभिमान था । ब्राह्मण (अनन्त भगवान् मैं ही था । गुफा कठिन संसार सागर था । ऐसा कह अनन्त भगवान् उसी स्थल पर अन्तर्हित हो गये । यह सब दृश्य देख वह कौण्डिन्य मुनि घर आये और चौदह वर्ष अनन्त व्रत करके सभी सुखों का भोग कर स्वर्ग लोक को चले गये । भगवान् श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से बोले कि हे राजर्षि । तुम एक ही अनन्त को करके अपना राज्य, धन सम्पत्ति वापस पा सकोगे । इस लीला के व्याख्यान को जो कहेंगे और सुनेंगे वह भवसागर पार हो जायेंगे । यही कथा का सार है ।

॥ संवत् २०२८ वर्षीय-दृश्यग्रहाः ॥

भारतीय स्टैन्डर्ड समयानुसारेण नित्य प्रातः ५।३० वादनकालिकाः स्पष्टग्रहास्तत्र दिनद्वयग्रहान्तरं (स्थूल) गतिः ।

(ता० २७ मार्च सन् १९७१ से १५ मार्च सन् १९७२ तक)

मार्च सन् १९७१

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट			चन्द्र स्पष्ट			भौम स्पष्ट			बुध स्पष्ट			शुक्र स्पष्ट		
		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
२७	शनि	०	५	४१	०	८	२४	९	८	४५	०	२३	१३	१०	२६	५६
२८	सूर्य	०	६	४०	०	२३	३४	९	९	२०	०	२४	३९	१०	२८	७
२९	चन्द्र	०	७	३९	१	८	३०	९	९	५६	०	२६	०	१०	२९	१८
३०	भौम	०	८	३९	१	२३	३	९	१०	३१	०	२७	१५	११	०	३०
३१	बुध	०	९	३८	२	७	८	९	११	६	०	२८	२३	११	१	४१

एप्रिल सन् १९७१

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट			चन्द्र स्पष्ट			भौम स्पष्ट			बुध स्पष्ट			शुक्र स्पष्ट		
		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	गुरु	०	१०	३७	२	२०	४४	९	११	४१	०	२९	२६	११	२	५२
२	शुक्र	०	११	३६	३	३	५२	९	१२	१६	१	०	२२	११	४	४
३	शनि	०	१२	३६	३	१६	३४	९	१२	५१	१	१	१२	११	५	१५
४	सूर्य	०	१३	३५	३	२८	५६	९	१३	२६	१	१	५४	११	६	२७
५	चन्द्र	०	१४	३४	४	११	२	९	१४	१	१	२	३०	११	७	३९
६	मंगल	०	१५	३३	४	२२	५७	९	१४	३६	१	२	५९	११	८	[illegible]
७	बुध	०	१६	३२	५	४	४७	९	१५	११	१	३	२१	११	१०	[illegible]
८	गुरु	०	१७	३१	५	१६	३४	९	१५	४५	१	३	३६	११	११	[illegible]
९	शुक्र	०	१८	३०	५	२८	२३	९	१६	२०	१	३	४४	११	१२	[illegible]
१०	शनि	०	१९	२९	६	१०	१५	९	१६	५४	१	३	४६	११	१३	[illegible]
११	सूर्य	०	२०	२८	६	२२	१३	९	१७	२९	१	३	४१	११	१४	[illegible]
१२	चन्द्र	०	२१	२६	७	४	१९	९	१८	३	१	३	२९	११	१६	[illegible]
१३	मंगल	०	२२	२५	७	१६	३२	९	१८	३७	१	३	१२	११	१७	[illegible]
१४	बुध	०	२३	२४	७	२८	५६	९	१९	११	१	२	५०	११	१८	[illegible]
१५	गुरु	०	२४	२३	८	११	३०	९	१९	४५	१	२	२२	११	१९	[illegible]
१६	शुक्र	०	२५	२२	८	२४	१६	९	२०	१९	१	१	५१	११	२०	[illegible]
१७	शनि	०	२६	२०	९	७	१६	९	२०	५२	१	१	१५	११	२२	[illegible]
१८	सूर्य	०	२७	१९	९	२०	३३	९	२१	२६	१	०	३७	११	२३	[illegible]
१९	चन्द्र	०	२८	१८	१०	४	८	९	२१	५९	०	२९	५६	११	२४	[illegible]
२०	मंगल	०	२९	१६	१०	१८	३	९	२२	३३	०	२९	१५	११	२५	[illegible]
२१	बुध	१	०	१५	११	२	१९	९	२३	६	०	२८	३२	११	२६	[illegible]
२२	गुरु	१	१	१३	११	१६	५५	९	२३	३९	०	२७	५०	११	२८	[illegible]
२३	शुक्र	१	२	१२	०	१	४७	९	२४	१२	०	२७	९	११	२९	[illegible]
२४	शनि	१	३	१०	०	१६	४७	९	२४	४५	०	२६	२९	०	०	[illegible]
२५	सूर्य	१	४	९	१	१	४८	९	२५	१७	०	२५	५२	०	१	[illegible]
२६	चन्द्र	१	५	७	१	१६	३९	९	२५	५०	०	२५	१७	०	२	[illegible]
२७	मंगल	१	६	६	२	१	१३	९	२६	२२	०	२४	४६	०	४	[illegible]
२८	बुध	१	७	४	२	१५	२१	९	२६	५४	०	२४	१९	०	५	[illegible]
२९	गुरु	१	८	२	२	२९	२	९	२७	२६	०	२३	५६	०	६	[illegible]
३०	शुक्र	१	९	१	३	१२	१४	९	२७	५८	०	२३	३७	०	७	[illegible]

बाणपञ्चकम्
रोगः
८,१७,२६
अनलोऽग्नि
सशल्यः
२,११,२०,२९
नृपः
४,१३,२२
चौरः
६,१५,२४
मृत्युः
१,१०,१९,२८

मार्च १९७२

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट			चन्द्र स्पष्ट			भौम स्पष्ट			बुध स्पष्ट			शुक्र स्पष्ट		
		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	बुध	११	१०	३१	५	२०	२०	१	१२	४९	११	२१	२९	०	२२	५९
२	गुरु	११	११	३१	६	२	३१	१	१३	२८	११	२३	२१	०	२४	८
३	शुक्र	११	१२	३१	६	१४	३५	१	१४	८	११	२५	११	०	२५	१७
४	शनि	११	१३	३१	६	२६	३१	१	१४	४७	११	२७	०	०	२६	२५
५	सूर्य	११	१४	३१	७	८	२४	१	१५	२७	११	२८	४५	०	२७	३४
६	चन्द्र	११	१५	३१	७	२०	१६	१	१६	६	०	०	३०	०	२८	४२
७	मंगल	११	१६	३१	८	२	११	१	१६	४६	०	२	११	०	२९	५०
८	बुध	११	१७	३१	८	१४	१३	१	१७	२५	०	३	४८	१	०	५८
९	गुरु	११	१८	३२	८	२६	२८	१	१८	५	०	५	२१	१	२	६
१०	शुक्र	११	१९	३१	९	९	०	१	१८	४४	०	६	५०	१	३	१४
११	शनि	११	२०	३१	९	२१	५३	१	१९	२३	०	८	१३	१	४	२१
१२	सूर्य	११	२१	३१	१०	५	१२	१	२०	३	०	९	३१	१	५	२८
१३	चन्द्र	११	२२	३१	१०	१८	५८	१	२०	४२	०	१०	४२	१	६	३५
१४	मंगल	११	२३	३१	११	३	१२	१	२१	२२	०	११	४७	१	७	४२
१५	बुध	११	२४	३१	११	१७	४९	१	२२	१	०	१२	४५	१	८	४८

मई सन् १९७१

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट			चन्द्र स्पष्ट			भौम स्पष्ट			बुध स्पष्ट			शुक्र स्पष्ट		
		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	शनि	१	९	५९	३	२५	०	९	२८	३०	०	२३	२३	०	८	५०
२	सूर्य	१	१०	५७	४	७	२५	९	२९	१	०	२३	१४	०	१०	३
३	चन्द्र	१	११	५५	४	१९	३२	९	२९	३३	०	२३	१०	०	११	१५
४	मंगल	१	१२	५४	५	१	२७	१०	०	४	०	२३	१०	०	१२	२७
५	बुध	१	१३	५२	५	१३	१७	१०	०	३५	०	२३	१५	०	१३	४०
६	गुरु	१	१४	५०	५	२५	४	१०	१	६	०	२३	२५	०	१४	५२
७	शुक्र	१	१५	४८	६	६	५५	१०	१	३६	०	२३	३९	०	१६	४
८	शनि	१	१६	४६	६	१८	५३	१०	२	७	०	२३	५८	०	१७	१७
९	सूर्य	१	१७	४४	७	०	५९	१०	२	३७	०	२४	२२	०	१८	२९
१०	चन्द्र	१	१८	४२	७	१३	१६	१०	३	७	०	२४	४९	०	१९	४१
११	मंगल	१	१९	४०	७	२५	४४	१०	३	३७	०	२५	२१	०	२०	५४
१२	बुध	१	२०	३८	८	८	२३	१०	४	७	०	२५	५७	०	२२	६
१३	गुरु	१	२१	३६	८	२१	१४	१०	४	३६	०	२६	३७	०	२३	१९
१४	शु[illegible]	१	२२	३४	९	४	१७	१०	५	५	०	२७	२०	०	२४	३१
१५	[illegible]नि	१	२३	३२	९	१७	३१	१०	५	३४	०	२८	७	०	२५	४४
१६	[illegible]	१	२४	२९	१०	०	५६	१०	६	३	०	२८	५८	०	२६	५६
[illegible]	[illegible]न्द्र	१	२५	[illegible]	[illegible]	१४	३५	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जून सन् १९७१

तारीख	वार	सूर्य स्पष्ट			चन्द्र स्पष्ट			भौम स्पष्ट			बुध स्पष्ट			शुक्र स्पष्ट		
		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	भौम	२	९	५२	५	९	३३	१०	१३	३	१	१९	६	१	१६	१८
२	बुध	२	१०	५०	५	२१	२४	१०	१३	२७	१	२०	४३	१	१७	३१
३	गुरु	२	११	४७	६	३	१४	१०	१३	५०	१	२२	२४	१	१८	४४
४	शुक्र	२	१२	४५	६	१५	८	१०	१४	१३	१	२४	६	१	१९	५६
५	शनि	२	१३	४२	६	२७	१०	१०	१४	३५	१	२५	५१	१	२१	९
६	सूर्य	२	१४	३९	७	९	२३	१०	१४	५७	१	२७	३९	१	२२	२२
७	चन्द्र	२	१५	३७	७	२१	५०	१०	१५	१८	१	२९	२९	१	२३	३५
८	भौम	२	१६	३४	८	४	३२	१०	१५	३९	२	१	२१	१	२४	४७
९	बुध	२	१७	३२	८	१७	३०	१०	१६	०	२	३	१६	१	२६	०
१०	गुरु	२	१८	२९	९	०	४१	१०	१६	२०	२	५	१२	१	२७	१३
११	शुक्र	२	१९	२६	९	१४	६	१०	१६	४०	२	७	१२	१	२८	२६
१२	शनि	२	२०	२४	९	२७	४१	१०	१६	५९	२	९	१३	१	२९	३९
१३	सूर्य	२	२१	२१	१०	११	२६	१०	१७	१८	२	११	१६	२	०	५२
१४	चन्द्र	२	२२	१८	१०	२५	१९	१०	१७	३६	२	१३	२१	२	२	५
१५	भौम	२	२३	१६	११	९	२०	१०	१७	५४	२	१५	२८	२	३	१८
१६	बुध	२	[illegible]	[illegible]	११	२३	२६	१०	१८	११	[illegible]	[illegible]	३६	२	४	३०